Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश में श्री गुरुजी

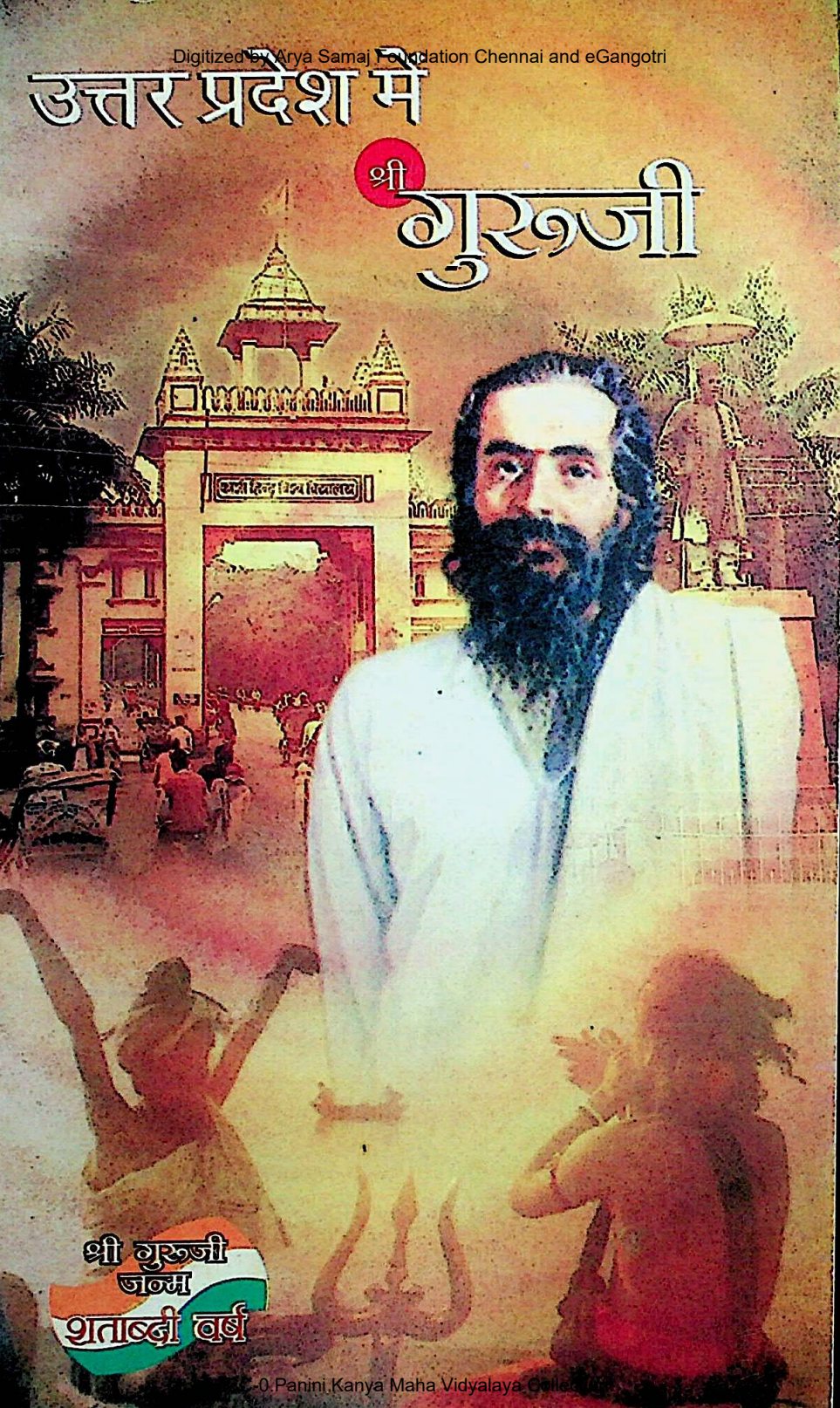

श्री गुरुजी जन्म शताब्दी वर्ष

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

9.3
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

वर्णनातीत का यशोगान स्वाभाविक रूप से अपने साथ कुछ न्यूनताएँ लेकर आता है जिसका आभास इस संकलन में स्थान-स्थान पर अवश्य मिलेगा। यह न्यूनता मनीषी की नहीं अपितु संकलनकर्त्ता की है। सुदी पाठक विषय वस्तु को यथेष्ट सन्दर्भ में स्वीकारें, ऐसी अपेक्षा है। गुरुजी की जीवनशैली पठन-पाठन मात्र का विषय न रह जाय अपितु जनसामान्य के जीवन को राष्ट्र जीवन के तदुनुकूल बनाने में सहयोगी की भूमिका निभाए, ऐसा चाहा गया है। गुरुजी यद्यपि अध्यात्मिक साधना का परित्याग कर राष्ट्रसाधक बने तथापि ऐसा कहना अधिक योग्य होगा कि उन्होंने दोनों साधनाओं को एक-दूसरे का पर्याय मान लिया। व्यष्टि से समष्टि तक बिखरे मन को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिए ही उन्होंने सर्वस्व दाँव पर लगा दिया। यही तथ्य इस संकलन में समाहित संस्करणों में भी उजागिर हुआ है।

ऋषितुल्य और अजातशत्रु गुरुजी को तो सही अर्थों में तभी जाना जा सकता है जब जिज्ञासु और ज्ञेय साकार हो जाय। इस संकलन का प्रयास भी यही है कि हम सभी मनसा-वाचा-कर्मणा गुरुजी के साथ एक रूप हो जायँ। इससे राष्ट्रोत्थान के साथ-साथ आत्मोन्नति भी सम्भव हो सकेगी।

संघ के सह सरकार्यवाहद्वय मा॰ मदनदास जी तथा मा॰ सुरेश सेनी की इस संस्मरण संग्रह के प्रयास को चरम पहुँचाने में अत्यन्त प्रेरणास्पद भूमिका रही है। मुझे पूणतः विश्वास है कि पू॰ गुरुजी सम्बन्धी ये प्रेरक प्रसंग हिन्दू धर्म, हिन्दू समाज व हिन्दू राष्ट्र के पुनरुत्थान एवं समुन्नयन के लिए जन सामान्य में जीवनोत्सर्ग की प्रबल प्रेरणा प्रदान करेगा।

—संकलनकर्त्ता
एक अकिंचन स्वयंसेवक

सहयोगी बन्धु

१. श्री सुशील कुमार, देहरादून, २. श्री प्रसिद्धनाथ, वृन्दावन, ३. डॉ॰ घनश्याम अग्निहोत्री, कानपुर, ४. श्री आशुतोष जी, लखनऊ, ५. श्री कृष्णमुरारी जी, मीरजापुर, ६. श्री राधेश्याम जी, गोरखपुर।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूज्य श्री गुरुजी : उत्तर प्रदेश में

परम पूज्य श्री गुरुजी एवं काशी नगरी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परमपूज्य माधवराव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य गुरुजी की बाल्यकाल से ही एक प्रतिभाशाली, विलक्षण बुद्धि वाले, विनम्र एवं धर्मपरायण बालक के रूप में पहचान थी। वे प्रख्यात काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बी.एससी. पढ़ने के लिए जुलाई १९२४ में काशी आये तथा १९२८ में जन्तु विज्ञान विषय में परास्नातक परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात् शोध कार्य हेतु चेन्नई चले गये। चार वर्ष की इस कालावधि में वे ब्रोचा छात्रावास में रहते थे। उनकी ज्ञान पिपासा विश्वविद्यालय ग्रन्थालय के बहुमूल्य ग्रन्थों के विपुल भण्डार से कुछ शान्त हुई।

अगस्त १९३१ में वे पुनः काशी आये तथा एक यशस्वी एवं लोकप्रिय प्राध्यापक के रूप में ३१ जनवरी, १९३३ तक विश्वविद्यालय की सेवा की। इस अवधि में वे विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के निकट ही एक लॉज में रहते थे। श्री माधवराव नागपुर के निवासी हैं तथा विश्वविद्यालय में प्राध्यापक बनकर आये हैं, यह जानकर भैयाजी दाणी—जो प.पू. डॉक्टर जी द्वारा संघ कार्य आरम्भ करने के योजनान्तर्गत ही बी.ए. पढ़ने हेतु काशी भेजे गये थे तथा नागपुर से काशी पढ़ने आये विद्यार्थियों का माधवराव के प्रति आकर्षण स्वाभाविक था। परस्पर परिचय एवं आत्मीयतापूर्ण सम्बन्धों के परिणामस्वरूप माधवराव की संघ के प्रति जिज्ञासा बढ़ी।

भैयाजी दाणी के आग्रह एवं अनुरोध पर सन् १९३१ में माधवराव विश्वविद्यालय शाखा के स्वयंसेवक बने। यह संयोग तथा संघ कार्य पद्धति की अलौकिक विशेषता है कि माधवराव संगठन के सर्वोच्च पद—सरसंघचालक तथा भैयाजी दाणी सरकार्यवाह के दायित्व का निर्वहन करते हुए दस वर्ष साथ-साथ राष्ट्र साधना में लीन रहे।

विश्वविद्यालय में पूज्य महामना मालवीय जी की उपस्थिति के कारण परिसर में शैक्षिक वातावरण के साथ-साथ आध्यात्मिकता ने माधवराव को प्रभावित किया। उन्होंने अनेक धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन किया। उनका रामकृष्ण मिशन तथा उसमें कार्यरत सेवावृती संन्यासियों से निकट का सम्पर्क आया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने रामकृष्ण तथा विवेकानन्द साहित्य भी प्रचुर मात्रा में पढ़ा। माँ सरस्वती की श्रेष्ठ साधना करते-करते उन्होंने अपने जीवन की दिशा निश्चित कर ली।

—यादव राव जोशी

केशव माधव मिलन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संघ कार्य को आरम्भ से ही अच्छी गति एवं योग्य दिशा प्राप्त हो गयी थी। स्वयंसेवकों ने विद्यार्थियों के अतिरिक्त कुछ तरुण प्राध्यापकों को भी संघ की ओर आकृष्ट करना आरम्भ कर दिया था। इनमें सर्वश्री माधवराव एवं सद्गोपाल जी प्रमुख थे। वे दोनों संघ के निकट आकर कार्य में रुचि लेने लग गये थे। पू. डाक्टरजी को यह समाचार स्वयंसेवकों के पत्रों से मिलता रहता था। इस प्रकार के तरुण एवं प्रबुद्ध कार्यकर्त्ता काशी शाखा को प्राप्त हो रहे हैं, यह जानकर उन्हें अतीव आनन्द होता था। उन्होंने नागपुर के माधवराव के सम्बन्ध में स्वयंसेवकों से विशद जानकारी प्राप्त की। सन् १९३२ के अप्रैल मास में विश्वविद्यालय में अवकाश होने पर जब माधवराव नागपुर आये हुए थे तो एक दिन सहज, मार्ग में जाते हुए पू. डाक्टर जी ने उन्हें देखा। उन्होंने माधवराव को रोकते हुए पूछा, 'आप माधवराव गोलवलकर है न'? पूज्य डाक्टर जी ने माधवराव के बारे में जो जानकारी प्राप्त की थी, उसी आधार पर अनुमान लगाते हुए उन्हें पहचान गये थे। माधवराव के 'हाँ' कहने पर पूज्य डॉक्टर जी ने कहा—'अपने सुविधानुसार एक बार मेरे घर आइयेगा'। तदनुसार माधवराव एक दिन डाक्टर जी के घर पर गये जहाँ दो महान विभूतियों को एक-दूसरे के विचार व भावनाओं को जानने-समझने का पर्याप्त समय मिला।

साभार—डॉ. हेडगेवार चरित्र-पालकर

माधवराव गोलवलकर जब गुरुजी बने

विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य के कालखण्ड में माधवराव के कई सद्गुण प्रकाश में आये। अपने विद्यार्थियों के प्रति असीम प्रेम एवं आत्मीयता के कारण वे उनकी पढ़ाई में हर प्रकार की सहायता करते थे। निर्धन एवं प्रतिभाशाली छात्रों को पुस्तकें क्रय कर देने तथा उनका शुल्क भरने में वे अपने वेतन का एक बड़ा अंश व्यय करते। अपने विषय जन्तु विज्ञान व वनस्पति विज्ञान ही नहीं अन्य विषयों की पुस्तकें भी बाजार से क्रय कर पढ़ते, उनके संक्षिप्त विवरण (Notes) तैयार करते और उन विषयों के छात्रों को पढ़ाते। ऐसे छात्रों में भैया जी दाणी का नाम उल्लेखनीय है। छात्र वर्ग उन्हें एक अत्यन्त मिलनसार तथा उनकी कठिनाईयों को समझने वाला संवेदनशील अभिभावक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझते थे। इन्हीं गुणों के कारण माधवराव को अपने छात्रों का अत्यन्त श्रद्धा एवं आदरपूर्ण सम्बोधन 'गुरुजी' प्राप्त हुआ। इस नामकरण में भैया जी दाणी की प्रमुख भूमिका थी। अपनी सार्थकता के कारण उनका यह नामाभिदान आज विश्वव्यापी बन गया है। प.पू. डाक्टर जी भी माधवराव को इसी नाम से पुकारते थे। —*यादवराव जोशी*।

पू. डॉक्टर जी ने जब माधवराव को पुष्पाहार समर्पित किया

संघ के बढ़ते हुए कार्य का परिचय नागपुर के विजयादशमी उत्सव से मिल जायेगा, यह विचार कर प.पू. डॉक्टर जी ने काशी शाखा के दो वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध स्वयंसेवक—सर्वश्री माधवराव एवं सदगोपाल जी को सन् १९३२ का उत्सव देखने के लिए बुलाया। अपेक्षा के अनुरूप काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ये दोनों युवा प्राध्यापक समय से नागपुर पहुँचे। नागपुर शाखा के १२०० गणवेशधारी स्वयंसेवकों का घोष के साथ पैर से पैर मिलाते हुए अनुशासनयुक्त पथ संचलन का दृश्य इन अतिथियों के लिए अद्‌भुत एवं अत्यन्त प्रभावकारी रहा। विजयादशमी उत्सव के अवसर पर प.पू. डॉक्टर जी ने सर्वश्री माधवराव एवं सदगोपाल जी का काशी शाखा के उत्साही कार्यकर्त्ता के नाते परिचय कराया तथा उन्हें पुष्पाहार समर्पित किया। *साभार—डॉ. हेडगेवार चरित्र–पालकर*

पू. महामना जी, गुरुजी तथा संघ

श्री गुरुजी, भैयाजी दाणी सहित अनेक प्रान्तों से काशी पढ़ने आये युवक विश्वविद्यालय शाखा पर अच्छी संख्या में नियमित जाते थे। विजयादशमी उत्सव देखकर नागपुर से लौटने पर गुरुजी शाखा की ओर अधिक ध्यान देने लगे। गुरुजी की पू. महामना मालवीय जी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे प्रायः स्वयंसेवकों को लेकर पू. महामना जी के पास जाते, देश व समाज की दुरावस्था, उसके निराकरण में संघ की भूमिका पर विचार विमर्श करते एवं उनका स्नेहिल आशीर्वाद लेकर लौटते। पू. महामना जी के हृदय में भी गुरुजी के प्रति अत्यान्तिक स्नेह था। एक दिन वे स्वयं गुरुजी के आवास पर गये तथा उन्हें लेकर विश्वविद्यालय परिसर में भ्रमण करते-करते अपने जीवन के अनेक अनुभव सुनाये। उन्होंने गुरुजी से कहा कि अपने सम्मुख सदैव महान् उद्देश्य रखकर जीवन की दिशा निर्धारित करनी चाहिए।

रविवार को प्रभात शाखा में प्रायः गुरुजी का किसी न किसी विषय पर बौद्धिक होता। अनेक बार पू. महामना जी शाखा के निकट खड़े होकर गुरुजी का बौद्धिक बड़े मनोयोग से सुनते। उस समय शाखा पर दण्ड तथा लकड़ी से बने बन्दूक, खड्‌ग, शूल आदि शस्त्रों का अभ्यास प्रति दिन होता था। पू.

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महामना देखते कि शस्त्र स्वयंसेवक नित्य ढोकर शाखा पर लाते और ले जाते। एक दिन पू. महामना जी ने गुरुजी तथा कुछ स्वयंसेवकों को बुलाकर कहा, 'तुम लोगों को इन शस्त्रों को नित्य शाखा पर लाना और ले जाना पड़ता है। तुम्हें एक शस्त्रागार चाहिये। उसे बनवाने के लिए तुम लोग धन संग्रह करो, भूमि मैं देता हूँ'।

पू. महामना द्वारा दी गयी भूमि पर दो कक्ष तथा बीच में बरामदा निर्मित हुआ, सामने विशाल संघ स्थान था। बरामदे में पू. महामना जी की पत्थर की मूर्ति लगायी गयी। लागत आई रु. १०५०.००। स्वयंसेवक सारे प्रयास के पश्चात् मात्र रु. १००० ही जमा कर सके। एक दिन बिना किसी को बताये गुरुजी ने शाखा के लिए शस्त्र क्रय कर शस्त्रागार में रखवा दिये। उक्त भवन विश्वविद्यालय अभिलेख में R.S.S. Armoury के रूप में अंकित है।

आपातकाल (१९७६) में तत्कालीन कुलपति श्री कालूलाल श्रीमाली के निर्देश पर उस भवन को ध्वस्त कर दिया गया तथा रातों रात भवन का मलबा हटाकर उस भूमि पर घास का मैदान (Lawn) बना दिया गया। पू. महामना की मूर्ति भी तोड़ डाली गयी। इस प्रकार उस महामानव के संघ प्रेम का स्मृति चिह्न एक अविवेकी धारणा का शिकार हो गया। (*सदगोपाल जी, काशी*)

श्री गुरुजी की अनुशासनप्रियता एवं निर्भीकता

अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अन्तःकरण संघ की विचारधारा से प्रभावित हो रहे थे। अतः संघ कार्य दिन-प्रतिदिन सुदृढ़ एवं व्यापक होता गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का सत्र १९३२-३३ का दीक्षान्त समारोह आयोजित हुआ। संघ स्वयंसेवकों के अनुशासनपूर्ण व्यवहार की छाप अधिकारियों पर ऐसी थी कि उन्होंने समारोह की सारी व्यवस्था श्री गुरुजी के हाथों सौप दी। सारा प्रबन्ध बड़ा सुन्दर था। समारोह कक्ष में आने-जाने के लिए अतिथियों, अध्यापकों, महिलाओं, छात्रों आदि के लिए अलग-अलग द्वार बनाये गये थे। समारोह आरम्भ होने के कुछ समय पूर्व एक वरिष्ठ प्राध्यापक महिलाओं के लिए निर्धारित प्रवेश द्वार से अन्दर जाने लगे। स्वयंसेवकों ने उन्हें रोका और प्राध्यापकों के लिये बने द्वार से अन्दर जाने के लिए अनुरोध किया। ये प्राध्यापक पूज्य मालवीय जी के अत्यन्त प्रिय थे। अतः वे अपने लिए सारे द्वार उन्मुक्त मान रहे थे। मैंने उन प्राध्यापक महोदय को महिला प्रवेश द्वार से अन्दर नहीं जाने दिया। उक्त प्राध्यापक महोदय ने इसे अपना अपमान समझा और वे घर लौट गये। समारोह भली प्रकार से पूर्ण हुआ। समारोह की समाप्ति के पश्चात् उक्त प्राध्यापक की शिकायत पर पूज्य मालवीय जी ने मुझे तथा श्री गुरुजी को बुलवाया। श्री

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुजी ने सारी घटना विस्तारपूर्वक पूज्य मालवीय जी को बतायी। वस्तुस्थिति से अवगत होने पर पूज्य मालवीय जी ने संघ कार्यकर्ताओं की प्रशंसा की एवं अपना आशीर्वाद दिया।

प.पू. डॉक्टर जी को श्री गुरुजी की अनुशासनप्रियता और निर्भीकता का उपर्युक्त समाचार जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस घटना का उल्लेख पूज्य डॉक्टर जी अपनी बैठकों में अनेक बार किया करते थे। (*सद्‌गोपाल, काशी*)

डॉक्टर जी के साथ गुरुजी का काशी प्रवास

अगस्त १९३८ में प.पू. डॉक्टर जी, मा. बाबासाहब आप्टे तथा गुरुजी को लेकर नागपुर से काशी आये। डॉक्टर जी अपने देशव्यापी प्रवासन में स्वयंसेवकों के मध्य गुरुजी के व्यक्तित्व की चर्चा यदा-कदा किया करते थे। अत: उनमें गुरुजी को देखने व उनसे मिलने की उत्सुकता रहती। परिणामस्वरूप नागपुर-काशी मार्ग में गोन्दिया, जबलपुर, दीनदयालनगर (मुगलसराय) आदि स्टेशनों पर भारी संख्या में स्वयंसेवक पू. डॉक्टर जी आदि अधिकारियों से भेंट करने आये। काशी के स्वयंसेवकों में तो इतना उत्साह था कि वे काशी से १५ कि.मी. दूर दीनदयालनगर स्टेशन पर रात्रि साढ़े नौ बजे उन लोगों का स्वागत करने आये। इनमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डॉ. फूलदेव सहाय वर्मा, श्री कुलकर्णी सहित अनेक वरिष्ठ प्राध्यापक भी सम्मिलित थे।

दिनांक १७ से २० अगस्त तक पू. डॉक्टर जी काशी में विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ. रोढ़े के आवास पर ठहरे। इस कालावधि में काशी की शाखाओं पर पू. डॉक्टर जी ने स्वयं बौद्धिक न देकर गुरुजी को बोलने के लिए कहा। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की बैठक में प्रश्नोत्तर के रूप में जिज्ञासा समाधान का कार्यक्रम हुआ। बैठक में चर्चा हिन्दी में हुई थी, अतएव तमिलनाडु निवासी कुछ विद्यार्थी मन में जिज्ञासा रहने के उपरान्त भी कार्यक्रम में सहभागी न हो सके। यह स्थिति भाँपकर पू. डॉक्टर जी ने दूसरी बैठक का आयोजन किया जिसमें गुरुजी ने अंग्रेजी में उनकी जिज्ञासा का भलीभाँति समाधान किया।

इन दिनों काशी में गोकुलाष्टमी का उत्सव मनाया जा रहा था। इस निमित्त संस्कृत महाविद्यालय के छात्रावास में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर मा. आपटे जी तथा गुरुजी के भाषणों ने श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया। प्रवास में गुरुजी के भाषण पू. डाक्टर जी बड़े ध्यानपूर्वक सुनते। उनका विद्वतापूर्ण धाराप्रवाह भाषण व आत्मविश्वास देखकर पू. डॉक्टर जी को बड़ी प्रसन्नता होती।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशी से दिल्ली होते हुए डॉक्टर जी लाहौर गये। मार्ग में प्रयाग, कानपुर आदि स्टेशनों पर भाऊराव देवरस, दीनदयाल जी, बापूराव मोघे सहित अनेक कार्यकर्त्ता गुरुजी से मिलकर बहुत प्रसन्न हुए।

साभार—डॉ. हेडगेवार चरित्र-पालकर

पू. गुरुजी का आह्वान

सरसंघचालक बनने के पश्चात् पू. गुरुजी का काशी प्रवास प्रायः प्रतिवर्ष होता और कभी-कभी तो वे दो-तीन दिन भी रुकते। सन् १९४७ के मकर संक्रान्ति उत्सव पर उनका प्रवास ऐतिहासिक था। उक्त अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले स्वयंसेवकों का आह्वान करते हुए कहा था कि जीवनरूपी पुष्प जब यौवन की गन्ध से पूर्ण विकसित हो रहा हो, उसी समय उसे राष्ट्र देवता के चरणों में समर्पित कर दो।

इसका योग्य परिणाम हुआ और उस वर्ष अपनी शिक्षा पूर्ण कर काशी से भारी संख्या में प्रचारक निकले तथा संघ कार्य हेतु देश-विदेश में गये।

—सद्‌गोपाल, काशी

❖

अनुशासन एवं व्यवस्था-प्रियता

जब गुरुजी ने स्वयं उपविश की आज्ञा दी

सन् १९४७ में देश भर में सर्वत्र, विशेषतः उत्तर भारत में मुसलमानों की देश विभाजन की हिंसक माँग से अराजकता का वातावरण था। मई मास में ऐसे तनावपूर्ण वातावरण में भरतपुर में ३० दिवसीय अपना प्रान्तीय संघ शिक्षा वर्ग (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष) प्रारम्भ हुआ। वर्ग पर भी मुसलमानों का आक्रमण हो सकता है, यह सोचकर रात्रि में वर्ग में ऊँचे स्थान बनाकर वहाँ से सर्चलाइट द्वारा कड़ी निगरानी रखी जाती थी। रात्रि में सोते समय शिक्षार्थी अपना दण्ड मैदान में बिछाई हुई अपनी दरी के नीचे एक ओर रखे, यह सूचना थी। इस कारण शिक्षार्थियों के मन में उत्तेजना, सावधानी तथा प्रतिकार के भाव प्रकट होते हुए दिखते थे।

वर्ग के सार्वजनिक प्रदर्शन एवं समारोह के दूसरे दिन प्रातःकाल यह भाव प्रकट हुआ। पूजनीय श्री गुरुजी का दीक्षान्त बौद्धिक वर्ग चल रहा था। वृक्षों से घिरे आँगननुमा मैदान में शिक्षार्थी ध्यानपूर्वक गुरुजी को सुन रहे थे। चारों ओर कुछ ही दूरी पर रक्षा व्यवस्था के स्वयंसेवक दण्ड लेकर सजग खड़े थे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अकस्मात् पीछे बैठा हुआ एक स्वयंसेवक नींद की झपकी लेता हुआ, पंक्ति में आगे बैठे हुए स्वयंसेवक की पीठ पर लुढ़का, वह भी अर्द्धनिद्रा में था। अतः खड़े होकर चिल्लाया, 'आये-आये! मारो-मारो!' पीछे बैठे हुए अन्य स्वयंसेवक भी खड़े होकर चिल्लाने लगे। मैंने मुख्य शिक्षक के नाते एकदम खड़े होकर शान्त करने के लिये—'टिट-टिट ऐसी सीटी दो-तीन बार बजायी और आज्ञा दी—'सावधान! उपविश। किन्तु स्वयंसेवकों पर कोई प्रभाव नहीं। गुरुजी ने ध्वनिवर्द्धक से तीन बार जब आज्ञा दी—'उपविश! बैठ जाओ! शान्त रहो।' तब कहीं जाकर स्वयंसेवक बैठे और फिर शान्तिपूर्वक दीक्षान्त कार्यक्रम चलता रहा। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात् गुरुजी ने वर्ग की जागरुक, चुस्त प्रबन्ध व्यवस्था के लिए मेरी तथा प्रबन्धकों की प्रशंसा की।

—अनन्त रामचन्द्र गोखले, लखनऊ

व्यवस्था भंग करने का अधिकार

पूजनीय गुरुजी का जब भी कानपुर आना होता, वे मेरे आवास पर ही ठहरते। उन्हें स्टेशन लेने अथवा छोड़ने हेतु मैं, मेरे ज्येष्ठ भ्राता अथवा स्वयं पिताजी कार चालक होते। भूल से भी हम लोगों ने कभी यह धृष्टता नहीं किया कि इस कार्य के लिए कार्यरत कोई चालक लगाया जाय। एक बार मेरे ज्येष्ठ भ्राता गुरुजी को रेलवे स्टेशन छोड़ने जा रहे थे। मरी एण्ड कम्पनी रेल समपार के आगे कैण्ट का गोल चौराहा पार करते समय भाई साहब समय बचाने के उद्देश्य से यातायात नियमों का उल्लंघन करते हुए चौराहे के दाहिने ओर से कार निकाल रहे थे कि गुरुजी ने उन्हें अविलम्ब हुए गोल चक्कर के बायीं ओर से कार ले जाने को कहा तथा नियम भंग करने का कारण पूछा। भाई साहब ने यह तर्क दिया कि भीड़-भाड़ नहीं है, इसलिए ऐसा किया। पूज्य गुरुजी ने गम्भीर होकर कहा, 'प्रत्येक व्यक्ति को चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, व्यवस्था एवं नियमों का सदैव पालन करना चाहिये। व्यवस्था भंग करने का अधिकार उसी को है जो व्यवस्था में परिवर्तन करने की क्षमता रखता हो'।

—वीरेन्द्र पराक्रमादित्य, कानपुर

महान पुरुषों का उपहास उचित नहीं

देवरिया में प्राथमिक शिक्षा वर्ग चल रहा था। दिनांक ३ जनवरी, १९६० को परम पूजनीय श्री गुरुजी प्रवास पर आये हुए थे। कुछ स्वयंसेवक खाली समय में गपशप कर रहे थे। एक स्वयंसेवक ने कहा कि देखो दण्ड के तीन रोध होते हैं। तुम मेरे ऊपर दण्ड का प्रहार करो, मैं बताता हूँ। दूसरे स्वयंसेवक ने लाठी से प्रहार के लिए ताना तो पहले स्वयंसेवक ने दण्ड कन्धे से सटाकर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खड़ा किया और हाथ जोड़कर बोला, 'अहिंसा परमोधर्मः यह है 'गाँधी रोध'। अब फिर प्रहार करो। दूसरे स्वयंसेवक ने फिर दण्ड को प्रहार के लिए ताना तभी पहले स्वयंसेवक ने अपने दण्ड से इतना कड़ा प्रहार किया कि दूसरे स्वयंसेवक का दण्ड दूर जाकर गिरा। पहला स्वयंसेवक बोला, 'देखो! यह है पटेल रोध'।

उसी समय श्री गुरुजी घूमते-घूमते वहाँ पहुँच गये और उस स्वयंसेवक से बोले, 'जरा हमें भी दिखाओं अपने रोध'। गुरुजी के समक्ष उसने पुनः रोध के प्रदर्शन किये। तत्काल श्री गुरुजी ने उक्त स्वयंसेवक को डाँटा और बोले, 'महापुरुषों का मजाक और खिल्ली उचित नहीं'। और अधिकारियों से बोले, 'इसे तुरन्त प्राथमिक शिक्षा वर्ग से बाहर निकालो'।

—*कौशल किशोर,* रायबरेली

जब बैठक की अवधि में चिड़िया शान्त डेढ़ घण्टे बैठी रही

केशवदुर्ग, मथुरा के निकट स्थित धर्मशाला की छत पर शामियाना लगा है। प्रचारकों की बैठक चल रही है। आसन पर विराजमान हैं परम पूज्य श्री गुरुजी। मुक्त हँसी, दैदीप्यमान मुखमण्डल, दिव्यता सर्वत्र व्याप्त है। उनकी अमृतवाणी सुनने के लिए लालायित कार्यकर्ता दत्तचित्त होकर बैठे हैं।

अकस्मात् पण्डाल के बाँसों पर बैठी एक चिड़िया चहचहा उठी। कार्यकर्ताओं का ध्यान टूट गया। चहचहाहट उन्हें अखरने लगी। ऐसा क्यों न होता? अमृतवाणी सुनना कठिन जो हो रहा था। क्षण पर क्षण बीतते गये। चहचहाहट जारी रही। आखिर कार्यकर्ताओं का धैर्य टूट गया। उनमें से एक ने उठकर चिड़िया को उड़ा दिया। परन्तु यह क्या? वह एक बाँस से उड़कर दूसरे पर चली गयी। वहाँ से उड़ाया गया तो उसने पुनः बाँस बदल दिया। कार्यकर्ता बेचैन थे। विघ्न पड़ते देखकर श्रीगुरुजी बौल उठे, 'रहने दो। रहने दो'।

इस वाक्य को कहते-कहते उनका गला भर आया। आँखों में पितृ-स्नेह छलक उठा। एकटक दृष्टि से चिड़िया की ओर देखते हुए वे बोल उठे, 'ऐसा लगता है कोई दिवंगत प्रचारक चिड़िया के रूप में हमारे मध्य में उपस्थित है। उसे बैठा रहने दो। तंग न करो.....।

बैठक का वातावरण विलक्षण दिव्यता से भर गया। एक-एक कार्यकर्त्ता की असीम आत्मीयता प्रचारकों के मध्य साकार हो उठी। हम सभी हैरान रह गये। बैठक चलती रही। चिड़िया डेढ़ घंटे तक शान्त बैठी रही। गुरुजी की वाणी सत्य सिद्ध हो गयी। इनके एक वाक्य ने संगठन-मंत्र की दीक्षा दे दी।

—*राणा प्रताप,* लखनऊ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गुरुजी ने छाता हटाया

दिनांक ११ जनवरी, १९५५ को गोरखपुर विभाग के सार्वजनिक कार्यक्रम में पूज्य गुरुजी का डी.ए.वी. कॉलेज के प्रांगण में बौद्धिक चल रहा था। एकाएक बादल घिर आये, वर्षा आरम्भ हुई। गुरुजी मंच पर भीग रहे थे, तभी एक प्रमुख कार्यकर्ता छाता लेकर आये और गुरुजी के ऊपर तान दिया। तुरन्त गुरुजी ने एक हाथ से छाते को झटक दिया। उन्होंने कहा, 'स्वयंसेवक भीग रहे हैं और मेरे लिए तुम छाता लाये हो'। वर्षा तेज हो गयी, स्वयंसेवकों के कमर के नीचे तक पानी बहने लगा, गुरुजी भी तर-बतर हो गये। जब तक बौद्धिक चलता रहा तब तक वर्षा होती रही।

सामान्य नागरिक विद्यालय के बरामदे में चले गये और खड़े-खड़े यह दृश्य देख रहे थे। उन्होंने इस अनोखे अनुशासन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

—कौशल किशोर, रायबरेली

दण्ड अपना शस्त्र है!

मैं वर्ष १९५४ में संघ शिक्षण वर्ग बरेली में द्वितीय वर्ष का शिक्षार्थी था। एक दिन प्रातः शाखा का शारीरिक समाप्त होने के बाद मैं अपने कक्ष की ओर जा रहा था। मेरा दण्ड मेरे दायें हाथ में था। ऊपर का हिस्सा पकड़े हुए था और नीचे का हिस्सा जमीन पर टेकते हुए धीरे-धीरे मैं चल रहा था कि अचानक परमपूज्य गुरुजी ने मेरे हाथ से दण्ड पकड़ लिया और कहा—'इस प्रकार दण्ड लेकर स्वयंसेवक को नहीं चलना चाहिए। शस्त्र का अपमान होता है'। मैं तुरन्त दण्ड को सही ढंग से भुजदण्ड में लेकर सिर झुकाए खड़ा रहा। उन्होंने पूछा, 'किस वर्ष की शिक्षा ले रहे हो'। मैंने कहा—द्वितीय वर्ष की। पूज्य गुरुजी ने कहा कि तब तो यह सोचना पड़ेगा कि प्रथम वर्ष का तुम्हारा प्रशिक्षण माना जाय अथवा नहीं। मैं ऐसी गलती भविष्य में नहीं करूँगा, ऐसा सोचते हुए मैं अपने कक्ष में चला गया। (*रमाकान्त मणि, कानपुर*)

अनुशासन व व्यवस्था का पाठ बिना बौद्धिक के

सन् १९४३ के मेरठ संघ शिक्षा वर्ग में मैं प्रथम वर्ष के शिक्षार्थी के रूप में सम्मिलित हुआ। कुछ मास पूर्व हमारे नगर में शाखा आरम्भ हुई थी। अतः अनुशासन व व्यवस्था की अधिक जानकारी हम लोगों को नहीं हो पायी। वर्ग में पूज्य गुरुजी के आगमन पर सायंकाल सरसंघचालक प्रणाम के लिए सभी शिक्षार्थी पूर्ण गणवेश में वाहिनीशः खड़े थे। सरसंघचालक प्रणाम के पश्चात् गुरुजी प्रत्येक वाहिनी के सामने होकर स्वयंसेवकों की ओर देखते हुए निकल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहे थे। उनकी दृष्टि इतनी पैनी थी कि सभी शिक्षार्थियों को लग रहा था मानो उनकी दृष्टि मेरी ओर ही है। गणवेश की छोटी सी भी कमी यथा पेटी उल्टी बँधी होना, टोपी की सिलन आगे होना, कमीज की बाँह ठीक से न मुड़ी होना आदि की ओर शिक्षार्थी का ध्यान आकृष्ट करते हुए वे आगे बढ़ते जाते। पंक्तियों में खड़े हम शिक्षार्थी आश्चर्यचकित थे कि चलते-चलते गुरुजी इन न्यूनताओं को कैसे भाँप लेते थे। इस प्रकार अनुशासन एवं व्यवस्था का पाठ बिना किसी बौद्धिक अथवा निर्देश के सभी को मिल रहा था।

—डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल, कानपुर

छोटी-छोटी बातों पर भी गुरुजी का ध्यान

जून १९६४ के कानपुर संघ शिक्षा वर्ग में मुझे अतिथि विभाग में लगाया गया था। दिनांक १२ से १५ जून तक वर्ग में पूजनीय श्री गुरुजी का प्रवास था। अतएव मुझे उनकी सेवा-सुश्रुषा में लगा दिया गया। गुरुजी, डॉ. आवा जी तथा अन्य अधिकारियों के आवास हेतु तीन कक्ष निर्धारित किये गये थे। मैंने तीनों कक्षों की विधिवत् सफाई की, बिस्तर आदि व्यवस्थित किया। मुझे यह विश्वास व पूर्ण संतुष्टि हुई कि अपने अधिकारी मेरी त्रुटिहीन व्यवस्था से अति प्रसन्न होंगे। गुरुजी के आते ही उन्हें मैं उनके लिए निर्धारित कक्ष में ले गया। उन्होंने एक दृष्टि उक्त कक्ष की ओर डाली एवं मुझे बुलाकर कहा कि देखो उस कोने में छत के निकट जाल लगा है, उसे साफ कर दो। मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया किन्तु मन ही मन सोचता रहा कि मैं दिन भर सफाई व व्यवस्था में लगा रहा तथापि गुरुजी की दृष्टि ऐसी पैनी व विलक्षण कि छोटी-छोटी त्रुटियाँ पर उनका बरबस ध्यान चला जाता है, तभी तो दोष रहित हिन्दू संगठन निर्माण में वे सफल हैं। (*मदन मोहन धवन, कानपुर*)

दीनदयाल जी के बिस्तर पर नमकीन के कुछ टुकड़े गिर गये हैं

कानपुर गंगा तट पर अग्रसेन व्यायामशाला में विभाग के कार्यकर्ताओं का तीन दिवसीय शिविर दिसम्बर १९६६ में आयोजित था। पूजनीय श्री गुरुजी, डॉ. आबाजी थत्ते, मा. दीनदयाल जी, मा. दत्तोपंत ठेंगड़ी एक बहुखण्डी पटकुटी (E.P. Tent) में अलग-अलग कक्षों में ठहरे थे। एक दिन प्रातःकालीन जलपान दीनदयाल जी के कक्ष में हुआ। मैंने भूमि पर लगे बिस्तर पर एक बड़ा प्लास्टिक बिछाकर उस पर जलपान सामग्री लगाया तथा प्याला तश्तरी में सबको गरम-गरम चाय दी। जलपान के पश्चात् गुरुजी ने मुझे अपने कक्ष में बुलाकर कहा कि दीनदयाल जी के बिस्तर पर नमकीन के कुछ टुकड़े गिर गये हैं। तत्काल जाकर साफ कर दो। मैं आश्चर्यचकित था कि मेरी इतनी सावधानी के बावजूद

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चूक कैसे हो गयी, किन्तु दीनदयाल जी के कक्ष में गया तो देखा कि सचमुच नमकीन के कुछ टुकड़े उनके बिस्तर पर पड़े थे और उससे बेखबर वे बैठे कुछ लिख रहे थे। मैं बिस्तर से नमकीन के छोटे-छोटे टुकड़े हटाते हुए यह सोचता रहा कि गुरुजी की दृष्टि कितनी सूक्ष्म हैं और सम्भवतः इसी प्रतिभा के कारण वे विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन का कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। (*मदन मोहन ध्वन, कानपुर*)

अनुशासन का वास्तविक हेतु क्या?

सन् १९५१ में संघ शिक्षा वर्ग प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष केवल नागपुर में ही वर्ष भर चलते थे। मैं उस समय आगरा का जिला प्रचारक था एवं मई व जून मास के वर्ग में २ मास गणशिक्षक के नाते नागपुर रहा। वर्ग में समय-समय पर पू. गुरुजी का मार्गदर्शन प्राप्त होता था। एक दिन वर्ग में यह सूचना दी गयी कि भोजन के समय सभी को प्रवेशिका साथ लानी है। भोजन मण्डप के द्वार पर प्रवेशिका की पूछताछ हो रही थी। जिनके पास प्रवेशिका नहीं थी उन्हें लौटा दिया जाता। सहारनपुर के एक शिक्षार्थी, जो पेशे से वकील थे, को प्रवेशिका साथ न लाने के कारण वापस भेज दिया गया। इससे वे नाराज हो गये।

संयोगवश उसी समय गुरुजी भोजन मण्डप की ओर आ रहे थे। उन्हें मार्ग में इस घटना की जानकारी हो गयी। जब वे मण्डप में पधारे तो मन्त्र आरम्भ होने के पूर्व उन्होंने मुझे आदेश दिया कि मैं उक्त वकील साहब को बुलाकर लाऊँ। मैंने गुरुजी की आज्ञा का पालन किया। भोजनोपरान्त गुरुजी ने मुझे समझाया कि अनुशासन पालन करवाने में इतनी कठोरता नहीं बरतनी चाहिये कि स्वयंसेवक के मन पर विपरीत प्रभाव पड़े।

इस घटना की जानकारी होने पर वकील साहब के मन—मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा और वे वर्ग से वापस जाने के पश्चात् संघ कार्य में बहुत सक्रिय हो गये। (*डॉ. नित्यानन्द*, देहरादून)

❖

लक्ष्य से तादात्म्य

अपनी संस्कृति-मातृ संस्कृति

३० नवम्बर, १९५१ को गोरखपुर विभाग में परम पूजनीय श्री गुरुजी का प्रवास था। गुरुजी गोरखपुर के संघचालक माननीय बालाप्रसाद तुलस्यान के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पर ठहरे थे। सार्वजनिक कार्यक्रम के पश्चात् मेरे जिला कार्यवाह जी मुझे लेकर बाला बाबू के आवास पर गये। थोड़ी देर में चाय आई और गुरुजी चाय पीने लगे। १५-१६ लोग थे। उस दिन अपने सार्वजनिक बौद्धिक में भारत वर्ष की चर्चा करते हुए गुरुजी ने कहा—'अपने देश की संस्कृति मातृ-संस्कृति है। शकुन्तला के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से जुड़ा हुआ है, अपने देश का नाम बंगाल की सभी स्त्रियों के लिए माँ का सम्बोधन जुड़ा है। जैसे दऊ-माँ, पिसी-माँ, ठाकुर-माँ इत्यादि। भारत माँ का भरत ज्येष्ठ, वरिष्ठ पुत्र है। अपने देश में पुत्रवती माँ को उसके ज्येष्ठ पुत्र की माँ के रूप में ही, अमुक की माँ कहकर बुलाने की प्रथा है'। यह मुझे इतना अच्छा लगा कि मैंने कहाकि गुरु जी यदि यह भाषण छपता तो लोगों पर प्रभाव पड़ता, वे अपने देश की संस्कृति का मर्म समझ पाते।

गुरुजी ठठाकर हँसे, और कहा 'छपने पर कौन पढ़ता है? पढ़ावने के लिए भी आदमी चाहिये और उससे भी क्या हुआ? जीवन में विचार उतर सके इसका भी प्रयत्न करने वाला चाहिये'। सारे पुराण लिखने के बाद वेदों का सम्पादन करने के बाद व्यास देव का अनुभव विवशता का है।

पर कितनों ने इसे सुना? गीता प्रेस ने दो आने मूल्य की गीता छापकर लाखों की संख्या में वितरित किया किन्तु कितने लोग निष्काम कर्म करते हैं।

फिर उन्होंने किसी मित्र का उल्लेख किया जिन्होंने संगठन शास्त्र पर एक शास्त्रीय पुस्तक लिखी थी। जब उन्होंने गुरुजी को पुस्तक भेंट की तो गुरुजी ने उन्हें विनोद में कहा कि क्या अर्थी उठाने के लिए भी चार लोगों को तैयार किया है।

मेरे मन का भ्रम दूर हुआ। पहले मैं भी हिन्दू संस्कृति एवं परम्परा का उजागर करने वाले लेख अपने विद्यार्थी जीवन में लिखता रहा, वे भारत के साप्ताहिक रविवारीय अंक में छपते भी थे और मुझे उसका गर्व था। गुरुजी के संग हुई उपर्युक्त वार्ता के पश्चात् मैंने लिखने से ध्यान हटाकर संघ कार्य को जीवन में प्राथमिकता देने का निर्णय किया।

—*राजेन्द्र किशोर शाही,* देवरिया

हड़ताल अन्तिम अस्त्र होना चाहिए

संघ के पूर्वी जिलों का दिनांक २० फरवरी, १९६३ को एक सार्वजनिक कार्यक्रम वाराणसी में था। दूसरे दिन प्रातःकाल सिद्धगिरी बाग सरस्वती विद्या मन्दिर में कुछ कार्यकर्ताओं को गुरुजी के साथ चाय पर बुलाया गया था। मैं भी उनमें था। भारतीय मजदूर संघ के उस समय के प्रदेश संगठन मंत्री श्री रामनरेश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सिंह (बड़े भाई) से अनौपचारिक ढंग से श्री गुरुजी ने पूछा, 'बड़े भाई तुम्हारा मजूदर संघ कैसा चल रहा है'? बड़े भाई ने बताया कि इस समय संगठन काफ़ी बढ़ा है। अभी हमने एक बड़ी हड़ताल किसी बड़े संस्थान में करायी जो बहुत सफल रही। इससे हमारा प्रभाव पूरे क्षेत्र में काफी बढ़ा है। गुरुजी ने पूछा, 'क्या हड़ताल अपरिहार्य थी? हड़ताल तो अन्तिम अस्त्र होता है न'।

बड़े भाई ने उत्तर दिया, 'हड़ताल के बिना संगठन में तेजस्विता नहीं आती। यह 'सामूहिक सौदेबाजी' (Collective Bargaining) का एक तरीका है। कम्यूनिस्ट यूनियनों का यह आम हथियार है और उनके मुकाबले संगठन खड़ा करने के लिए हमें भी हड़ताल का सहारा लेना ही पड़ता है'।

इतनी बातें सहज ढंग से चल रही थी कि गुरुजी गंभीर हो गये। उन्होंने कहा, 'बड़े भाई! तब तो सोचना पड़ेगा कि भारतीय मजदूर संघ चलाया जाये कि बन्द कर दिया जाय। हम संगठन के लिए संगठन नहीं चलाते हैं, अपितु हमारे प्रत्येक संगठन का हेतु राष्ट्रहित है। एक दिन की हड़ताल से देश की कितनी हानि होती है, यह हमारे ध्यान में रहना चाहिये। हड़ताल अन्तिम अस्त्र हो और वह सदैव समझौते की ओर उन्मुख। जापान में हड़ताल के बाद दोहरी ड्यूटी करके मजदूर क्षतिपूर्ति करते हैं और उन्हें हड़ताल काल का भी वेतन मिलता है। हमें भी यह आदर्श सामने रखकर कार्य करना चाहिये'।

—डॉ. कन्हैया सिंह, आर्यमगढ़

माता के प्रति विशेष दायित्व

वैसे तो पूजनीय गुरुजी का हर बौद्धिक प्रेरणा का स्रोत रहता था, किन्तु एक बौद्धिक जो उन्होंने काशी में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यकर्ता शीत शिविर के समापंन के अवसर पर दिया था, उसकी अमिट छाप आज भी हृदय पटल पर अंकित है और प्रेरणा देती रहती है। उस बौद्धिक में उन्होंने माता और पुत्र का सम्बन्ध वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया था।

अपने बौद्धिक में उन्होंने कहा था, 'जैसे-जैसे जीव का विकास होता जाता है, उसका माँ के प्रति लगाव बढ़ता जाता है। मछली, मेंढक, सर्प आदि तो अपनी माँ को जानते ही नहीं। पक्षी वर्ग अपनी माँ को तभी तक पहचानते हैं, जब तक माँ उसे चारा चुगाती है। गाय, भैंस जैसे जानवरों के बच्चे जब तक दूध पीते हैं, तब तक ही माँ को पहचानते हैं।

मनुष्य तो विवेकशील प्राणी है। वह जन्म देने वाली माँ को जीवनभर तो भूलता नहीं, अन्य जो उस पर उपकार करते हैं उसे धरती माता, गऊ माता, गंगा माता आदि को भी माँ का ही सम्मान देता है। वह धरती जिसकी वायु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में हम साँस लेते हैं, जिसका जल पीते हैं, जिसका अन्न खाकर हम बड़े हुए हैं, उस माँ का हमारे ऊपर बहुत उपकार है। इसलिए मातृभूमि के प्रति हमारा दायित्व बढ़ जाता है। इसी प्रकार जब जन्म देने वाली माँ का दूध बच्चे छोड़ते हैं तो माँ के दूध के समान ही गुणकारी गाय का दूध पीते हैं। अतः गाय को माता मानते हैं। मृत्यु के पश्चात् गंगा माता भी गोद में समा जाते हैं, अतः वह भी माँ के समान है। हम विवेकशील प्राणी हैं अतः हमारा इनके प्रति विशेष दायित्व होता है। (*श्री कृष्ण मुरारी लाल,* मीरजापुर)

क्या डी.ए.वी. विद्यालयों से आज आर्य समाज का काम चल रहा है?

मैं दिसम्बर १९५६ में सरस्वती शिशु मन्दिर, मदनपुर (ललितपुर) के प्रधानाचार्य के रूप में विद्यालय के बच्चों को लेकर सागर (मध्य प्रदेश) गया था। उस समय पूजनीय श्री गुरुजी का प्रवास सागर में था। मैं उनके दर्शनार्थ मा. संघचालक जी के आवास पर गया। परिचय के पश्चात् उन्होंने मुझसे पूछा, 'बताओ! शिशु मन्दिर क्यों आरम्भ किये गये'? यह सोचकर कि गुरुजी सर्वज्ञ हैं, मैंने कोई उत्तर नहीं दिया। सन् १९५८ में तृतीय वर्ष करने में नागपुर गया। प्रान्त की बैठक में मैंने ज्यों अपना नाम व स्थान बताया तो गुरुजी ने तुरन्त कहा, 'तुम शिशु मन्दिर के प्रधानाचार्य हो ना। दो वर्ष पूर्व सागर में मिले थे। अच्छा जो प्रश्न मैंने उस समय पूछा था, उसका उत्तर बताओ? अब तो तुम इस रचना में रच-बस गये होंगे'। मैंने बहुत साहस बटोर कर कहा, 'शिशु मन्दिर योजना के तीन उद्देश्य हैं।

१. बच्चों को शिक्षा के साथ हिन्दुत्व के संस्कार देना।
२. अभिभावक सम्पर्क के द्वारा संघ व हिन्दुत्व के विचार उन तक पहुँचाना।
३. प्रधानाचार्य व आचार्य संघ को अधिक समय देकर संघ कार्य का विस्तार करें।

मेरा अन्तिम वाक्य सुनकर गुरुजी ठठाकर हँसे और कहा, 'बसा! बसा! बड़े भोले हो। जानते हो, आर्य समाज ने कितने, तुम्हारे शिशु मन्दिरों के कई गुना, डी.ए.वी. शिशु विद्यालय से लेकर महाविद्यालय खोले किन्तु उनसे आर्य समाज का कितना काम हो रहा है? अब तो सम्भवतः साप्ताहिक यज्ञ व हवन भी विद्यालयों में भी बन्द हो गया है, केवल स्वामी दयानन्द के चित्र विद्यालयों में यत्र-तत्र ही मिलेंगे।

उस समय तो गुरुजी का उक्त कथन मुझे कुछ अटपटा सा लगा किन्तु आज शिशु मंदिरों एवं विद्या मंदिरों की स्थिति देख कर सोचता हूँ कि सचमुच गुरुजी एक अद्भुत भविष्य दृष्टा थे। (*रामप्रताप सिंह,* सुल्तानपुर)

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतों के संत

दिनांक १२ एवं १३ अक्टूबर सन् १९५२ को भारत साधु समाज के तत्त्वावधान में साधु-संन्यासियों का एक सम्मेलन कानपुर में स्वामी नारदानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने किया। महामहिम राष्ट्रपति के आगमन पर कोई साधु खड़ा नहीं हुआ। राष्ट्रपति जी ने साधु-संन्यासियों के प्रति आदर व सम्मान प्रकट करते हुये उनसे यह अपेक्षा की कि हिन्दू समाज में व्याप्त बुराईयों एवं कुरीतियों को दूर करने में वे अहम भूमिका निभायें।

समापन कार्यक्रम में पूज्य गुरुजी पधारे। उनके पण्डाल में प्रवेश करते ही स्वामी नारदानन्द सहित सभी साधु-संन्यासी अपने स्थान पर खड़े हो गये। स्वामी जी ने आगे बढ़कर गुरुजी का स्वागत किया किन्तु गुरुजी ने निकट पहुँचते ही स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम किया। गुरुजी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित संत-महात्माओं को प्रणाम करते हुए कहा, 'साधु-संत परम्परा अपने देश व समाज का वैशिष्ट्य है। इसने हिन्दू धर्म, संस्कृति तथा समाज की सदैव रक्षा की है, धर्म पर आक्रमण व अत्याचार के समय समाज का योग्य मार्गदर्शन एवं नेतृत्व किया है, समाज में व्याप्त जाति-पाँति, ऊँच-नीच जैसी बुराइयों को समाप्त किया है। आज आवश्यकता है कि देश के ८० लाख साधु-संन्यासी एक अभेद्य शक्ति के रूप में खड़े होकर हिन्दू समाज पर हो रहे आक्रमण का प्रतिकार करें'। सम्मेलन उत्साहजनक वातावरण में गुरुजी की जय-जयकार, के पश्चात् समाप्त हुआ। (*संकठा प्रसाद सिंह*, लखनऊ)

चलते-चलते समाधिस्थ

बात सन् १९५१ की है, परम पूज्य श्री गुरुजी का आगमन प्रयाग में हुआ और मेरे घर पर ही ठहरे थे। उनके कार्यक्रम एंग्लो बंगाली कॉलेज में हुआ। हमारे प्रान्त संघचालक माननीय बैरिस्टर साहब भी कार्यक्रम हेतु आये थे। मैं उस समय काशी में संघ के प्रचारक के नाते कार्य कर रहा था। गुरुजी को एंग्लो बंगाली कॉलेज तक ले जाने और वापस लाने का कार्य मुझे दिया गया था। जब लौटकर आये तो बैरिस्टर साहब ने कहा कि अशोक जी आप आज कार बहुत धीरे-धीरे ले गये। गुरुजी ने कहा पहुँचाया तो बिल्कुल ठीक समय पर और बोले किं मैं चला कर ले गया होता तो निश्चय ही दुर्घटना हो जाती। फिर उन्होंने अपने जीवन की एक घटना बतायी। जब वे काशी में पढ़ते थे तब उनका काशी विश्वनाथ मन्दिर के दर्शनार्थ बहुधा जाना होता

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। वे कहने लगे कि साइकिल पर चलते-चलते उनको दिखना बन्द हो जाता था। एक बार ऐसा हुआ कि एक ताँगे के घोड़े के नीचे उनकी साइकिल आ गयी और चारों ओर भीड़ जमा हो गयी। लोग बोले, 'इसको दिखायी नहीं देता क्या'? कुछ अपशब्द भी बोलने लगे। सत्य बात यह थी कि मुझे अचानक दिखायी देना ही बन्द हो गया और यह घटना हुई। मुझे लोगों ने निकाला। फिर बोले, 'कम से कम अशोक से कोई दुर्घटना तो नहीं हुई'। बैरिस्टर साहब बोले, 'मैं भी जब कार से लम्बे रास्ते पर जाता हूँ तो दीखना बन्द होने लगता है'। श्री गुरुजी ने कहा, 'यह 'तन्द्रा' है, मैं जो कह रहा हूँ वह 'तन्द्रा' नहीं है'।

मैं सोचने लगा आँखें खुली हो और दीखना बन्द हो जाये, यह तो समाधि की अवस्था है। प्रज्ञा स्थिर होने पर ही दीखना बन्द हो सकता है। मेरे लिए यह एक नयी बात थी। श्री गुरुजी एक आध्यात्मिक पुरुष हैं, यह तो प्रत्येक स्वयंसेवक जानता था किन्तु उनकी आध्यात्मिक उपलब्धि छात्रावस्था से ही स्पष्ट दिखलायी देती थी। निश्चित ही पूर्व संस्कारों के साथ वे उसे लेकर आये थे। उसके लिए उन्हें कोई विशेष साधना शायद करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ी। यह अपने जीवन का एक दृष्टान्त उन्होंने मुझे अपने 'जीवन लक्ष्य के दिशा निर्देश' हेतु दिया था और यह पत्थर की लकीर की तरह मेरे भीतर तक अंकित हो गया। (*अशोक सिंहल*, दिल्ली)

गुरुजी कर्म-योग एवं भाई जी भक्ति-योग के पथगामी

परम पूजनीय श्री गुरुजी का शुभागमन वर्ष या दो वर्ष की अवधि में एक बार गोरखपुर अवश्य ही होता था। जब-जब गुरुजी का गोरखपुर शुभागमन हुआ है, तब-तब उनकी भेंट पूज्य भाई जी ('कल्याण मासिक पत्रिका के सम्पादक पूज्य श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार) से होती ही थी। कभी भाई जी, गुरुजी के दर्शन हेतु बाला बाबू के घर जाते और कभी गुरुजी, भाई जी से मिलने गीतावाटिका पधारते थे। गीतावाटिका में भाई जी से गुरुजी की बात प्रायः एकान्त में ही होती थी। कमरे के अन्दर ये महज्जन रहते थे और मैं कमरे के बाहर खड़ा रहता था। खड़े रहने का उद्देश्य यह था कि उस पारस्परिक वार्तालाप में किसी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित न हो। बात-चीत का यह क्रम कभी-कभी तो बहुत देर तक चला करता था।

गुरुजी से बात-चीत हो चुकने के बाद जब हम लोग भाई जी के पास बैठते थे तो वे गुरुजी की सराहना करते हुए थकते नहीं थे। उनकी आन्तरिक मान्यता थी कि गुरुजी एक महान आध्यात्मिक विभूति हैं एवं उनके संतत्व से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू समाज गौरवान्वित हुआ है। भाई जी के कथनानुसार गुरुजी मुख्यतः अध्यात्म-चर्चा ही किया करते थे।

गुरुजी के लेख प्रायः 'कल्याण' पत्रिका में प्रकाशित होते रहते। जब-जब किसी विशिष्ट विषय पर 'कल्याण' का विशेषांक जनवरी में प्रकाशित होता था, भाई जी, गुरुजी से लेख भेजने के लिए अनुरोध किया करते थे और गुरुजी ने उस अनुरोध को अपनी अस्वस्थता एवं व्यस्तता के बावजूद सदैव पूर्ण आदर प्रदान किया। इन दोनों विभूतियों का आत्मीय भाव इतना घनिष्ठ था कि भाई जी द्वारा निवेदन किये जाने मात्र से ही गुरुजी गोरक्षा प्रकल्पित महाभियान की सर्वोच्च नियन्त्रणकारिणी समिति की सदस्यता स्वीकार कर ली और उन्होंने इस गोरक्षा आन्दोलन में सोत्साह सक्रिय भाग लिया। गोरक्षा आन्दोलन का रूप जैसा विशाल और व्यापक था, उसका अधिकांश श्रेय गुरुजी और स्वयंसेवकों को है। गुरुजी के सुझाव पर भाई जी ने गीता प्रेस से कई ऐसी छोटी-छोटी पुस्तिकायें भी प्रकाशित की थीं, जो हिन्दू धर्म एवं समाज के लिए बड़ी उपयोगी हैं।

भाई जी के महाप्रस्थान के उपरान्त जब गुरुजी ४ जनवरी सन् १९७२ को गोरखपुर आये तो उन्होंने कहा, 'कल्याण' एवं 'गीताप्रेस' श्री पोद्दार जी के कीर्तिस्तम्भ हैं। इस कार्य में किसी प्रकार की शिथिलता नहीं आनी चाहिये। 'कल्याण' एवं 'गीताप्रेस' की उन्नति में समाज का हित सन्निहित है एवं श्री पोद्दार जी के यश का उत्कर्ष है। यह प्रतिष्ठान निर्बल न होने पाये, ऐसी सावधानी रखनी चाहिये'।

गुरुजी कर्म-योग के पथ का अनुसरण कर रहे थे तो भाई जी भक्ति-योग के पथ का। पथ की विविधता होते हुए भी दोनों के उद्देश्य में एकता थी। दोनों ही अपनी-अपनी रीति से हिन्दू धर्म एवं मानव समाज के हित के लिए कार्य कर रहे थे। उद्देश्य की एकता के कारण ही इन दोनों विभूतियों के पारस्परिक सम्बन्ध अति प्रगाढ़ थे। (*राधेश्याम बंका*, गोरखपुर)

जब गुरुजी महारुद्राभिषेक के लिए काशी आये

यह सबको विदित ही है कि १ जुलाई सन् १९७० को मुम्बई में पूज्य गुरुजी के वक्षस्थल पर कर्क रोग (Cancer) के गाँठ की शल्य क्रिया हुई जो सफल रही। चिकित्सकों के परामर्श पर लगभग एक मास विश्राम कर वे प्रवास पर निकल पड़े। बंगाल का प्रवास समाप्त होते ही पू. प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के आग्रह पर एक विशेष कार्यक्रम हेतु वे काशी आने के लिए सहमत हुए। रोग निवारणार्थ औषधि प्रयोग के साथ-साथ दैवी अनुष्ठान भी किया जाये, इस निमित्त काशी हनुमान घाट स्थित मेरे आवास पर ग्यारह दिवसीय महारुद्राभिषेक का अनुष्ठान

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आरम्भ हुआ। ग्यारह दिन पू. गुरुजी का उपस्थित रहना, उनके अखण्ड प्रवास व स्वास्थ्य की दृष्टि से असम्भव था। अतः हम देशमुख दम्पत्ति इस अनुष्ठान के मुख्य यजमान बने। पू. राज राजेश्वर शास्त्री द्रविड़, विद्वान् ज्योतिषाचार्य कर्मकाण्डी पू. जागेश्वर पाठक, पू. प्रभुदत्त ब्रह्मचारी पूरे समय अनुष्ठान में उपस्थित रहे। देश-विदेश के संघ कार्यकर्ता तथा समाज बन्धु-भगिनी भी भारी संख्या में अनुष्ठान में आते रहते। पूर्णाहुति के दिन फाल्गुन कृष्ण एकादशी तदनुसार २८ फरवरी सन् १९७३ (गुरुजी का जन्म दिन) को तो मेरा घर तीर्थराज प्रयाग बन गया। गुरुजी ठीक समय पर डॉ. थत्ते, रज्जू भैया, डॉ. प्र.कु. बनर्जी आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं सहित आये। उन्होंने पू. प्रभुदत्त ब्रह्मचारी तथा प. राजेश्वर पाठक के चरणों पर मस्तक रखकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। लगभग दो घण्टे तक गुरुजी द्वारा पूर्णाहुति विधि सम्पन्न करवाई गयी। यह कर्मकाण्ड खड़े-खड़े करना था किन्तु कुछ समय पश्चात् गुरुजी को खड़ा रहना अत्यन्त पीड़ादायक अनुभव हुआ। पुरोहित जी ने गुरुजी को बैठकर आहुति देने का आग्रह किया। यह दृश्य देखकर वातावरण में मरमान्तक उदासी छा गयी तथा हम लोगों की भावुकता चरम सीमा पर पहुँच गयी।

किन्तु यह क्या? पूर्णाहुति के पश्चात् गुरुजी ने आबा जी से आगे के प्रवास पर जाने की योजना की चर्चा आरम्भ कर दी। मैंने उन्हें कुछ दिन काशी अपने आवास पर विश्राम करने का अनुरोध किया ताकि मैं उनकी सेवा सुश्रुषा कर सकूँ, किन्तु उन्हें भला कौन रोक सकता था? अगले दिन वे राँची (झारखण्ड) के प्रवास पर चले गये। (*श्रीमती सरोजनी देशमुख*, काशी)

आप आ गये। अब सब ठीक हो जायेगा

कांग्रेस के एक वरिष्ठ एवं प्रमुख हिन्दुत्ववादी नेता राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, जिन्हें लोग आदर से 'बाबूजी' कहते थे, प्रयाग स्थित अपने आवास में रोग शय्या पर पड़े थे। पू. गुरुजी उत्तर प्रदेश के अपने प्रवास में, संघ शिक्षा वर्ग से थोड़ा समय निकाल कर दिनांक ६ जून, १९५६ को माननीय रज्जू भैया के साथ बाबू जी से भेंट करने उनके आवास पर पहुँचे। कारचालक के नाते मैं भी साथ था। बाबू जी की शय्या के निकट हम सब लोग कुर्सियों पर बैठ गये। उस दिन बाबू जी की दशा कुछ अधिक गम्भीर थी और आँखें मूँदें वे निश्चल लेटे थे। उनके पुत्र ने बाबू जी को गुरुजी के आने की सूचना धीरे से उनके कान में दी किन्तु उनकी स्थिति यथावत् बनी रही। गुरुजी सबको संकेत से शान्त बैठने को कहकर ध्यानावस्थित हो गये। पाँच मिनट पश्चात् जब घड़ी की टिक्-टिक् के अतिरिक्त और कोई ध्वनि नहीं सुनाई दे रही थी, बाबू जी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं। किसी के मुख से निकला कि गुरुजी आये हैं। चमत्कार हो गया। सब लोग यह देखकर आश्चर्य में पड़ गये कि बाबू जी थोड़ा उठे और दोनों बाँहें गुरुजी की ओर फैलाकर उन्हें आलिंगनबद्ध करते हुए कहा, 'आप आ गये, अब सब ठीक हो जायेगा। बस, अब कोई चिन्ता नहीं'। ऐसा लगा मानो देश की विषम परिस्थितियों का, अपनी उस अवस्था में भी उनका मन कोई हल ढूँढ़ रहा था। परम पूजनीय गुरुजी को पाकर सभी समस्याओं का समाधान उन्हें मिल गया।

मुझे ऐसा लगा कि एक महान् आत्मा ने दूसरी महान् आत्मा को पाकर अपने अन्तिम दिनों में, जिस देश, धर्म और संस्कृति के लिए उनका जीवन समर्पित था, वह अक्षुण्ण रहेगी, यह समाधान पाकर संतोष की साँस ली।

—वीरेन्द्र कुमार सिंह चौधरी, प्रयाग

जब गुरुजी का कुछ घण्टों का आवास मन्दिर बन गया

पू. गुरुजी के प्रति मेरे परिवार की अत्यन्त श्रद्धा वं भक्ति है। उनके स्वर्गवास का समाचार सुनते ही मेरी पत्नी ने मेरे आवास के जिस कमरे में गुरुजी ठहरते थे, उसे पूजागृह में परिवर्तित कर दिया। वही कमरा मेरे घर की सम्पन्नता या सौभाग्य का आधार है, ऐसी परिवार की मान्यता है। एक बार आचार्य धर्मेन्द्र जी (विश्व हिन्दू परिषद) मेरे आवास पर रुके। प्रातः पूजा करने के निमित्त उक्त कमरे में गये और आकर कहा कि वह कमरा विचित्र है, वहाँ मेरा ध्यान तुरन्त एकाग्र हो गया। क्या कोई विशिष्ट महात्मा उसमें कभी ठहरे है? मैंने उत्तर दिया कि गुरुजी कई बार उक्त कमरे में रुके हैं। उन्होंने कहा कि उसी का परिणाम है कि वहाँ एकाग्रता तुरन्त मिलती है। उनकी आँखें भर आयीं। अपने अ.भा.सह प्रचारक प्रमुख मा. सुरेश राव केतकर भी उस कमरे में गये और श्रद्धा-पूरित अश्रुओं से हम सबको आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा, 'लगता है आज भी पूज्य गुरुजी का स्मरण उस कमरे में किया जाये तो उनका साक्षात हँसता हुआ दिव्य मुख–मण्डल सामने आ जाता है और समाधान व शान्ति मिल जाती है'। (*लालबहादुर सिंह*, आर्यमगढ़)

जब गुरुजी ने अपना श्राद्ध स्वयं किया

पू. गुरुजी सितम्बर १९६८ में **बद्रीनाथ** प्रवास पर गये। सत्ता में होने के कारण मैं बद्रीनाथ ट्रस्ट का सदस्य था, इस कारण अधिकारियों ने ऐसी इच्छा प्रकट की कि मैं गुरुजी के प्रवास की योग्य चिन्ता व व्यवस्था करूँ। इस बहाने मुझे गुरुजी के तीन दिन के सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुजी के साथ मा. रज्जू भैया, डॉ. थत्ते, लाला हंसराज जी आदि अनेक गणमान्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधिकारी भी थे। उनका पहला कार्यक्रम संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के संकीर्तन भवन के उद्घाटन का था। उद्घाटन के पश्चात् पू. प्रभुदत्त जी ने भागवत कथा आरम्भ किया। हम लोगों के साथ सैकड़ों लोग दत्त-चित्त होकर कथा सुन रहे थे। हम लोग यह देख आश्चर्यचकित थे कि कथा श्रवण के समय पूरे समय गुरुजी की आँखों से अश्रुधारा अनवरत बहती रही। तत्पश्चात् हम लोग ब्रह्म कपाल नामक स्थान को गये जहाँ गुरुजी ने अपने माता-पिता का श्राद्ध किया और अन्त में स्वयं अपना श्राद्ध किया। गुरुजी का आध्यात्मिक जीवन एवं कर्मकाण्ड के प्रति दृढ़ आस्था को निकट से देखने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। उनका भोजन-जलपान तथा परिश्रम युक्त दिनचर्या अत्यन्त विस्मयकारी थी। इसकी चर्चा जब मैंने अपने एक मित्र प्रसिद्ध चिकित्सक से किया तो उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, 'जितना भोजन-जलपान पू. गुरुजी लेते हैं, उसे लेकर कोई व्यक्ति इतना परिश्रम करना तो दूर, जीवित भी नहीं रह सकता। निःसन्देह पू. गुरुजी अति मानव (Super human) है। (*ताम्बेश्वर प्रसाद*, सीतापुर)

देवात्मा हिमालय

सन् १९६४ में पू. श्री गुरुजी का प्रवास **देवप्रयाग** में हुआ। उनके प्रवास एवं कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु मेरी योजना १५ दिन के लिए देवप्रयाग नगर में की गयी थी। वहाँ आसपास के नगरों से उपस्थित स्वयंसेवकों तथा जनता को पर्यटक विश्रामगृह के विशाल कक्ष में सम्बोधित करते हुए गुरुजी ने कहा, 'हिमालय की प्रत्येक चोटी पर देवता का वास है। इसीलिए इसे देवात्मा हिमालय कहा जाता है। इसी की गोद में जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित बद्रीनाथ मन्दिर के दर्शन कर लोग मोक्ष प्राप्ति की अनुभूति करते हैं। अनादिकाल से यह ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रही है। इसी भूमि पर सभी अवैज्ञानिक सिद्धान्तों को पराभूत या परिवर्तित होना पड़ा'।

'आज यह पवित्र भूमि राष्ट्र-विरोधी शक्तियों का केन्द्र बना हुआ है तथा इसकी सीमाओं पर साम्यवादी व ईसाई गतिविधियाँ राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता को चुनौती दे रही हैं। हमें उक्त चुनौतियों का सामना करने के लिए सदैव सजग रहना चाहिए। शताब्दियों से हिमालय एक प्रचण्ड प्रहरी के रूप में देश की एकता व अखण्डता की रक्षा करता रहा है। इस प्रकार यह भूमि जिसकी वन्दन करने की वर्षों से प्रबल इच्छा थी, वह आज साकार हुई है।'

—*प्रसिद्धनाथ तिवारी*, वृन्दावन

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलक्षण स्मरण–शक्ति

क्या बलिया के शिव कुमार आये हैं?

सन् १९५४ की बात है। उस समय श्री रमेन्द्र जी कुमार बन्दोपाध्याय बलिया के ज़िला प्रचारक थे। अभी मैं संघ का स्वयंसेवक नहीं बना था। परम पूजनीय श्री गुरुजी का सार्वजनिक कार्यक्रम गाजीपुर में था। उक्त जिला प्रचारक और तत्कालीन कुछ संघ कार्यकर्त्ताओं के आग्रह पर मैं गाजीपुर गया परन्तु जिस जीप से मैं गया उसमें खराबी आ जाने के कारण समय से नहीं पहुँच पाया और जब गाजीपुर पहुँचा तो कार्यक्रम में प्रवेश नहीं मिला, बाहर रोक दिया गया। थोड़ी ही देर बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ और गुरुजी बाहर निकले तो उक्त जिला प्रचारक जी ने वही पर उनसे मेरा परिचय कराया। गुरुजी ने दो-चार बातें हमसे पूछीं और हँसते हुए चले गये। अगले वर्ष मैं संघ का स्वयंसेवक बन गया और उस समय बलिया नगर का नगर संघचालक था। गुरुजी का काशी में कार्यक्रम था। मैं गया तो रज्जू भैया के साथ उस कमरे में व्यवस्था देखने के लिए गया जहाँ गुरुजी को ठहरना था। थोड़ी देर बाद जब मैं कमरे के अन्दर था और रज्जू भैया बरामदे में खड़े थे तो हमें यह आभास हुआ कि गुरुजी आ रहे हैं। मैंने कमरे के अन्दर से ही माननीय रज्जू भैया से पूछा, "क्या गुरुजी आ गये?" इतने में ही परम पूजनीय गुरुजी बोले कि "क्या बलिया के शिवकुमार राय आये हैं? उन्हीं की आवाज मालूम होती है।"

मैं गुरुजी के उक्त विलक्षण स्मरणशक्ति पर आश्चर्यचकित रह गया।

—*शिवकुमार राय*, बलिया

श्रीनाथ बलिया हो न?

मई १९५५ संघ शिक्षा वर्ग, सनातन धर्म कालेज, कानपुर में आयोजित था। तत्कालीन काशी विभाग (काशी, गाजीपुर, बलिया, जौनपुर तथा मिर्जापुर) के शिक्षार्थियों की बैठक परम पूजनीय श्री गुरुजी ले रहे थे। परिचय के क्रम में जैसे ही बलिया के शिक्षार्थियों का क्रम आया– बैरिया (बलिया) के श्रीनाथ प्रसाद खड़े हुये। वे थोड़ा सा हकलाये थे। परिणामस्वरूप नामोच्चारण में जैसे ही विलम्ब प्रतीत हुआ– गुरुजी ने कहा कि, हाँ। श्रीनाथ बलिया हो ना। मानो कोई अद्भुत चमत्कार हो गया और अपने चिर–परिचित अट्टाहास के साथ गुरुजी का ऐसा कहना था कि आगे का सम्पूर्ण परिचय श्रीनाथ प्रसाद ने स्वयं दे दिया।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी किसी पूर्व कार्यक्रम में श्रीनाथ प्रसाद का गुरुजी से परिचय हुआ हो अथवा दिव्य आध्यात्मिक शक्ति से हुआ हो, यही वह विलक्षण स्मरण शक्ति की प्रतिभा थी पूजनीय गुरुजी की एवं उनका असीम स्नेह ही आज तक लक्षावधि स्वयंसेवकों को संगठन सूत्र में बाँधे हुए है। श्रीनाथ जी आज भी कोलकाता में सक्रिय संघ कार्यकर्ता हैं और कानपुर वाले उस सुयोग को अपनी स्मृतियों में सँजोये हैं। (*डॉ. विजयबहादुर, बलिया*)

वही है जो गोरखपुर की बैठक में उचक कर...

श्री गुरुजी से मेरी पहली भेंट **गोरखपुर** नगर में फरवरी सन् १९५६ में मा. बाला बाबू तत्कालीन नगर संघचालक के निवास पर डिग्री कालेज के स्वयंसेवकों की बैठक में हुई जो उनके गोरखपुर आगमन के अवसर पर आयोजित की गयी थी। नगर में उस समय दो डिग्री कालेज– सेन्ट एण्ड्रूज तथा महाराणा प्रताप थे, जिनसे हम सब कुल बारह–चौंदह स्वयंसेवक उपस्थित हुए थे। उनमें अन्य अधिकारियों के साथ मा. रज्जू भैया का मुझे स्मरण है। रज्जू भैया सबसे अन्त में आकर दरवाजे पर ही बैठ रहे थे कि गुरुजी ने उन्हें टोक कर दरवाजे पर बैठने से मना किया अपने समीप दाहिने ओर बैठाया और कहा कि इससे तौल बराबर रहेगी। बालसुलभ स्वभाव के कारण मैंने देखने की कोशिश किया सचमुच तौल बराबर है? निश्चित रूप से मध्य में गुरुजी और दायें–बायें एक–एक अधिकारी बैठे थे। सहसा मुझे यह बात कौंधी कि गुरुजी संतुलित स्वभाव के व्यक्ति हैं। बाद में उनके सम्पर्क में आने पर उनके इस सहज स्वभाव की पुष्टि ही होती रही।

इस बैठक में गुरुजी ने हम सबसे परिचय प्राप्त किया. किस कक्षा में, क्या विषय पढ़ते हैं, कौन सी पुस्तकें पढ़ते हैं, कितना समय पढ़ने में लगाते हैं, आदि के बारे में पूछा। सबसे अन्त में शाखा–जैसे नित्य नियमित जाने, प्रार्थना स्मरण होने के विषय में जानकारी की। इन प्रश्नों के बीच ठहाके लगाते घण्टे सवा घण्टे की बैठक पूरी हो गयी। तत्काल समझ में नहीं आया परन्तु कुछ दिनों बाद सहसा समझ में आया कि गुरुजी ने संगठन के पारिवारिक स्वरूप के अनुरूप व्यवहार किया था। मानो अपने परिवार में कोई बड़ा बुजुर्ग परिवार के बालकों से वार्ता तथा कुशल क्षेम की जानकारी कर रहा हो।

श्री गुरुजी से मेरी दूसरी भेंट कानपुर के सनातन धर्म कालेज में आयोजित सन् १९५७ के संघ शिक्षा वर्ग में हुई। शरीर से दुबला होने के कारण सरसंघचालक प्रणाम के बाद में मुर्छित होकर गिर गया जिससे मैं गोरखपुर विभाग की गुरुजी के साथ होने वाली बैठक में उपस्थित नहीं हो सका। बाद में अपने नगर के स्वयंसेवकों ने बताया कि मेरे विषय में उन्होंने पर्याप्त पूछताछ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की तथा उन्होंने स्मरण किया कि ये वही है जो उचक कर गोरखपुर की बैठक में बराबर तौल देख रहा था। वर्ग की आखिरी बैठक में मा. विश्वनाथ लिमये के निर्देश से मैं जब सम्मिलित हुआ तो बैठक के अन्त में मेरी ओर देखकर उन्होंने कहा तुम इस बैठक में कैसे आ गये? मेरे द्वारा विवरण सुनने के बाद उन्होंने कहा कि मैं सूर्य नमस्कार का अभ्यास करूँ। दुबला-पतला शरीर चलेगा परन्तु दुर्बल नहीं। उन्होंने एक संस्कृत सुभाषित भी सुनाया। इस घटना ने जहाँ मुझे प्रसन्न कर दिया, वहीं मैं स्तम्भित भी हो गया कि सरसंघचालक जी सबसे छोटे स्वयंसेवकों का स्मरण रखते है और चिन्ता करते है। इस घटना ने मुझको आशंकित किया कि यदि श्री गुरुजी के अनुसार मुझे संघ का काम करना है तो क्या यह वृत्ति स्वभाव में अपना सकूँगा। (*देवेन्द्र श्रीवास्तव*, उन्नाव)

क्यों भाऊराव! यह कानपुर का स्वयंसेवक है न!

मैं सन् १९४४ से **कानपुर** में सरकारी कर्मचारी था, साथ ही संघ का स्वयंसेवक भी, वहीं कार्यकर्ताओं की बैठक में पूज्य गुरुजी के प्रथमतः दर्शन हुए।

सन् १९४८ के संघ पर प्रतिबन्ध के समय मेरी नौकरी चली गयी। संघ के अधिकारियों के अथक प्रयास से फतेहपुर में एक चावल मिल में प्रबन्धक के पद पर नौकरी मिल गयी। मैं वहाँ भी संघ का कार्य अनवरत करता रहा। एक दिन जिला प्रचारक गोपी श्याम जी निगम ने बताया कि गुरुजी उत्तर प्रदेश में प्रवास कर रहे हैं। कानपुर से होकर इलाहाबाद जायेंगे। ट्रेन फतेहपुर स्टेशन पर रुकेगी। मुख्य शिक्षक स्तर के कार्यकर्त्ता स्टेशन पर जाकर भेंट वार्ता कर सकते है। मैं भी ट्रेन आने के पहले ही स्टेशन पर पहुँच गया। ट्रेन के आने पर डिब्बे में बैठे गुरुजी को प्रणाम किया। उनके पास भाऊराव देवरस बैठे थे। भाऊराव ने पूछा, "मणि जी! यहाँ प्रसन्न हो।" मैंने हाँ में उत्तर दिया। तुरन्त ही गुरुजी ने कहा, "क्यों भाऊराव! यह कानपुर का स्वयंसेवक है ना।" भाऊराव ने कहा, "जी हाँ। किन्तु आजकल फतेहपुर में नौकरी कर रहा है तथा एक प्रभात शाखा का मुख्य शिक्षक है"। फिर गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ी मैं तब तक खड़ा देखता रहा जब तक गाड़ी आँखों से ओझल नहीं हो गयी और सोचता रहा कि कितनी विलक्षण स्मरणशक्ति है, पूज्य गुरुजी की।

—*रमाकान्त मणि*, कानपुर

तुमने तो काशी से प्रथम वर्ष किया है

सन् १९६७ में पूज्य श्री गुरुजी प्रवास के समय वोरी बन्दर (मुम्बई) सायं शाखा पर प्रार्थना के लिए आये हुए थे। वहीं शाखा पर मेरा परिचय हुआ कि मेरा संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष **काशी** में हुआ है, तब उन्होंने मुझसे कहा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस वर्ष तुम्हें द्वितीय वर्ष करना है। मुझे सोचने का भी समय नहीं दिया गया। अन्त में मुझसे हाँ करा लिया गया। उस वर्ष पुणे में संघ शिक्षा वर्ग लगा था। वहाँ पर हिन्दीभाषी शिक्षार्थियों का एक पृथक् गण बनाया गया था। गुरुजी बैठक लेने आये और उन्होंने मराठी भाषा में पूछा कि ऐसे कौन-कौन स्वयंसेवक हैं जिन्होंने दूसरे प्रान्त से प्रथम वर्ष किया है। अन्य स्वयंसेवकों ने हाथ ऊपर उठाये लेकिन मैं मराठी भाषा का ज्ञान कम होने के कारण समझ नहीं पाया कि क्या पूछा गया। गुरुजी ने हमारी तरफ इशारा करते हुए कहा कि तुमने हाथ क्यों नहीं उठाया, तुमने तो काशी से प्रथम वर्ष किया है। उन्होंने पूछा कि कितने दिनों से महाराष्ट्र में रहते हो? समय बताने पर मुझसे उन्होंने कहा कि संघ शिक्षा वर्ग दीक्षित स्वयंसेवक को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा का ज्ञान भी होना चाहिए। इस घटना से हमको प्रेरणा मिली कि गुरुजी से नित्य सैकड़ों लोग मिलते हैं, ४-५ माह पूर्व संघ स्थान पर परिचय हुआ और गुरुजी को याद रहा कि मैंने काशी से संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष किया है।

—*नरसिंह*, बलरामपुर

जब गुरुजी ने मुझे १०० मीटर दूर से पहचान लिया

मैंने सन् १९४३ में संघ शिक्षा वर्ग (प्रथम वर्ष) किया। वर्ग में पू. गुरुजी की बैठक में उनसे परिचय एवं वार्ता हुई। अगले वर्ष लखनऊ विभाग के स्वयंसेवकों का पूर्ण गणवेश में लखनऊ महानगर में कार्यक्रम था। पू. गुरुजी के बौद्धिक कार्यक्रम में जनता भी भारी संख्या में उपस्थित थी। पैर में चोट लगने के कारण मैं शारीरिक प्रदर्शन में भाग न ले सका तथा १२ फीट ऊँचे मंच से लगभग १०० मीटर दूर स्वयंसेवकों की पंक्ति में बैठा था। कार्यक्रम के तुरन्त पश्चात् मुख्य शिक्षकों की बैठक चौक स्थित गोलदरवाजा की एक धर्मशाला में थी। पैर में चोट एवं पीड़ा के कारण मैं बैठक में समय से न पहुंच सका। बैठक आरम्भ होते ही गुरुजी ने विभाग प्रचारक गोखले जी से पूछा, 'सीतापुर का भोला नाथ बैठक में क्यों नहीं आया? बौद्धिक कार्यक्रम में तो वह उपस्थित था'। गोखले जी मेरे पैर की चोट एवं कष्ट के बारे में गुरुजी को बता ही रहे थे कि मैं लंगड़ाते हुए बैठक कक्ष में प्रविष्ट हुआ। गुरुजी ने अट्टहास करते हुए कहा, 'देखो! आखिर मेरा बम भोला आ ही गया'। फिर मेरी चोट व उसके उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी करते हुए मेरे जिला प्रचारक श्री मधुसूदन वापट को डाँटते हुए पूछा कि अपने रोगी मुख्य शिक्षक को कार्यक्रम के पश्चात् किसी साधन से बैठक में क्यों नहीं लाये? ऐसी विलक्षण स्मरण शक्तियुक्त तथा कार्यकर्त्ता के हित चिन्तक थे गुरुजी।

—*भोलानाथ गुप्त*, सीतापुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी विन्ध्याचल से आये हो

एक बार पुजनीय गुरुजी सन् १९५८ में रेलगाड़ी से मुगलसराय से प्रयाग जा रहे थे। विन्ध्याचल स्टेशन से रेलगाड़ी गुजरते समय सैकड़ों कार्यकर्ता उनके स्वागत के लिए माला-फूल लेकर प्लेटफार्म पर एकत्र हुए थे। ट्रेन रुकने पर गुरुजी नीचे उतरे और कार्यकर्त्ताओं से बातचीत करने लगे। एक वृद्ध स्वयंसेवक माला लिये थे। वे गुरुजी को पहनाने हेतु आगे बढ़े। जब वे माला पहनाने लगे तब श्री गुरुजी ने कहा, 'अभी नहीं! मेरे शव पर चढ़ाना'। उन्होंने किसी से माला नहीं पहनी।

जब ट्रेन जाने लगी और गुरुजी ट्रेन में बैठ गये तब लोगों ने बड़े उच्च स्वर से 'गुरुजी की जय' के नारे कई बार लगाये।

जब मैं सन् १९६१ में तृतीय वर्ष करने नागपुर गया और अपना परिचय बताते हुए कहा कि मैं विन्ध्याचल से आया हूँ तो उन्होंने तुरन्त कहा, 'विन्ध्याचल में नारा लगा था न, तुम भी नारा लगाओ'। मैं इस पर मौन रहा। संघ के द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षण में कानपुर के वर्ग में परिचय के दौरान श्री गुरुजी द्वारा उपर्युक्त बात कही गयी।

मैं आश्चर्यचकित था कि गुरुजी किस प्रकार के विलक्षण स्मरणशक्ति वाले एवं प्रसिद्धि पराङ्मुख महापुरुष थे। मातृभूमि की सेवा में हमारी प्रसिद्धि न होकर संगठन की प्रसिद्धि हो, ऐसा हमारा चिन्तन होना चाहिए।

—*पन्नालाल शर्मा,* विन्ध्याचल

वही रामकथा पर तुम्हारा शोध प्रबन्ध

सन् १९६६ के संघ वर्ग कानपुर में मुझे पूजनीय श्री गुरुजी के दर्शन प्रथम बार हुये। मैं अतिथि व्यवस्था में था, अतएव दिनभर में २-३ बार गुरुजी से आमना-सामना होता था। एक दिन मेरा परिचय पूछा तो मैंने उन्हें बताया कि मैं रामकथा पर शोध कर रहा हूँ और सन्दर्भ ग्रन्थों के रूप में बाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस के अतिरिक्त बंगला, तमिल आदि अनेक प्रान्तीय भाषाओं में लिखित रामकथा का अध्ययन कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि शोधकार्य पूर्ण प्रामाणिकता एवं लगन के साथ करना तथा कार्य पूर्ण हो जाने पर शोध प्रबन्ध मुझे दिखाना।

शोध प्रबन्ध पूर्ण हो जाने पर जुलाई १९७० में मैं मुम्बई टाटा आयुर्विज्ञान संस्थान में गुरुजी से मिलने गया। इसके पीछे दो उद्देश्य थे। एक गुरुजी के स्वास्थ्य की जानकारी लेना तथा दूसरा अपने शोध प्रबन्ध पूर्ण हो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाने की सूचना प्रत्यक्ष मिलकर देना। मुझे देखते ही वे पहचान गये तथा आने का कारण पूछा। मैंने बताया कि मेरा शोध प्रबन्ध पूर्ण हो गया, यह बताने तथा आपका शुभाशीर्वाद लेने के उद्देश्य से आया हूँ। गुरुजी ने कहा, 'वही रामकथा पर शोध प्रबन्ध है न। बहुत सुन्दर। तुम्हारा शोध प्रबन्ध जब विश्वविद्यालय में जमा हो जाय तो उसकी एक प्रति मुझे अवश्य देना, मैं शीघ्र ही उत्तर प्रदेश के प्रवास पर आ रहा हूँ। मैं गुरुजी के दर्शन तथा विलक्षण स्मरण शक्ति से गद्‌गद् हो गया। (*हरिवंश प्रसाद शुक्ल,* कानपुर)

कहो डाक्टर! हरिद्वार से कब इधर आ गये?

१३ अप्रैल सन् १९५३ वैशाखी के दिन पू. श्री गुरुजी भाई परमानन्द जी के सुपुत्र भाई महावीर के विवाह के अवसर पर वर-वधू को अपना आशीर्वचन देने **हरिद्वार** पधारे। संयोगवश उसी दिन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह भी होने वाला था, जिसका दीक्षान्त भाषण देने के लिए सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश हरिद्वार आ चुके थे। गुरुकुल के अधिष्ठाता को जब यह ज्ञात हुआ कि उक्त तिथि को गुरुजी भी हरिद्वार में रहने वाले हैं तो उन्होंने नागपुर निमन्त्रण भेजकर व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया कि गुरुजी भी दीक्षान्त समारोह में आकर स्नातकों को अपना आशीर्वाद दें। गुरुजी इस निमन्त्रण को स्वीकार करते हुए दीक्षान्त समारोह में आये। अतिथियों के साथ जब गरुजी मंच पर चढ़ रहे थे, मैंने कैमरा से उनका चित्र लेना चाहा। गुरुजी ने मुझे ऐसा करने से मना कर दिया। स्वयंसेवक होने के नाते चित्र लेने का दुस्साहस मैं न कर सका। १९५५ में शिक्षा पूर्ण कर मैं बिलासपुर चला गया।

सन् १९५७ के बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में मैं चिकित्साधिकारी के रूप में पूरे समय रहा। पू. गुरुजी वर्ग में अपने प्रवासावधि में एक दिन वर्ग के चिकित्सालय में रुग्ण शिक्षार्थियों का कुशलक्षेम पूछने आये। उन्हें जैसे ही मैंने प्रणाम किया, तो उन्होंने हँसते हुए कहा, 'कहो डॉक्टर! हरिद्वार से कब इधर आ गये'?

गुरुजी की विलक्षण स्मरण शक्ति तथा प्रसिद्धि पराङ्मुख जीवन मेरे संघ जीवन को सदैव प्रेरणा देता रहता है। (*डॉ. राजेन्द्र अग्रवाल,* हरिद्वार)

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्त के कुछ उल्लेखनीय कार्यक्रम

जब हरगाँव तहसील का नाम सार्थक हुआ

उत्तर प्रदेश में सीतापुर जनपद तथा सीतापुर जनपद के हरगाँव तहसील में संघ कार्य सन् १९५० के दशक में व्यापक तथा प्रभावी था। सन् १९५२ के जिला बैठक में यह विषय आया कि हरगाँव तहसील में १०० शाखायें हो जाय तो पू. श्री गुरुजी का प्रवास हरगाँव में हो सकता है। तहसील के मैकूलाल जी, लक्ष्मीनारायण जी, सतीशचन्द्र जी, रामलाल जी आदि प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक तहसील प्रचारक श्री बृजमोहन जी ने ली तथा विस्तार की योजना बनी। परिणामस्वरूप तहसील के लगभग सभी ग्रामों में १०० से अधिक शाखाएँ आरम्भ हो गयी जिनमें प्रत्येक शाखा की संख्या ७०-८० या अधिक रहती थी। प्रान्त की योजनानुसार गुरुजी का प्रवास हरगाँव में ३१ जनवरी, १९५३ को हुआ। गणवेशधारी स्वयंसेवकों तथा जनता के मध्य गुरुजी का बौद्धिक हुआ जिसमें १५०० से अधिक पूर्ण व अर्द्धगणवेशधारी स्वयंसेवक तथा लगभग १ लाख हिन्दू नर-नारी उपस्थित थे। कार्यक्रम की तैयारी में स्वयंसेवकों की सक्रियता एवं उत्साह का परिणाम देखने को मिला। स्वयंसेवक सैकड़ों बाँस काटकर लाये तथा उसकी फट्टियाँ बनाकर ५ एकड़ क्षेत्रफल वाले मैदान के चारों ओर गाड़कर उसे नये कपड़ों से घेरा, सड़क निर्माण के लिए फैले पत्थरों से पहाड़ के आकार का मंच बनाया। बौद्धिक कार्यक्रम के पश्चात् मुख्य शिक्षकों की बैठक में पू. गुरुजी ने यह कहकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया कि आप सबने अपने परिश्रम द्वारा तहसील के हर गाँव में शाखा खड़ी कर इस तहसील का नाम सार्थक कर दिया। एक अति उत्साही तरुण मुख्य शिक्षक ने अपनी शाखा का वृत्त देते समय 'मैं' तथा 'मेरा' शब्द का प्रयोग कई बार किया। इस पर गुरुजी ने कहा, 'निःसन्देह तुम्हारी शाखा अच्छी है, तुम शाखा के लिए परिश्रम करते हो, समय देते हो किन्तु शब्द प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिये। 'मैं' तथा 'मेरा' शब्द से व्यक्ति का स्वार्थ एवं अहंकार प्रकट होता है किन्तु संघ में हम सामूहिक जीवन का अभ्यास करते हैं। अतः हम स्वयंसेवकों को 'हम' तथा 'अपना' शब्द का प्रयोग करना चाहिये। कार्य की सफलता का श्रेय स्वयं न लेकर अपने अधीनस्थ कार्यकर्ताओं को देना चाहिये।

—*डॉ. वंशीधर, हरगाँव (सीतापुर)*

लखनऊ का अविस्मरणीय त्रिदिवसीय शिविर

सन् १९६९ में ५,६ एवं ७ दिसम्बर को सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश का १५००० संख्या वाला त्रिदिवसीय कार्यकर्त्ता शिविर लखनऊ-कानपुर मार्ग पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजित था। लखनऊ से १८ मील दूर प्रस्तावित एवं निर्माणाधीन 'इन्द्रलोक' कालोनी में अस्थायी नगर बसाया गया जिसमें २००० पटकुटियों का निर्माण किया गया। राष्ट्रीय महापुरुषों के नाम से ११ नगर बनाये गये। केशव नगर में संघ के वरिष्ठ अधिकारियों का आवास था जिनमें पू. श्री गुरुजी, मा. बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह (प्रान्त संघचालक), मा. बालासाहब देवरस सरकार्यवाह, आदि अधिकारी ठहरे थे।

अन्तिम दिन ७ दिसम्बर, को प्रकट समारोह में सायं साढ़े तीन बजे बैरिस्टर साहब के साथ गुरुजी मंच पर आये। ध्वजारोहण, प्रार्थना के उपरान्त गणवेशधारी स्वयंसेवक ने अद्‌भुत शारीरिक प्रदर्शन किया। तदुपरान्त मा. बैरिस्टर साहब के प्रस्ताविकी भाषण के पूर्व एकलगीत 'संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा' कहा गया। गुरुजी ने समस्त उपस्थित कार्यकर्त्ताओं तथा भारी संख्या में आये बन्धुओं व भगनियों का मार्गदर्शन करते हुए कहा—

इस शिविर में अपना काम धन्धा छोड़कर आये सभी बन्धुओं का यह एक प्रकार का समाजानुकूल जीवन जीने का अभ्यास है। आज की दुःस्थिति से उबरने के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण में मातृभूमि के प्रति शुद्ध भक्ति भावना जगाना, राष्ट्रीय परम्पराओं के प्रति प्रबल निष्ठा जागृत करना, अपने राष्ट्र के वास्तविक स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास और श्रद्धा सबके अन्तःकरण में जागृत कर आसेतु हिमाञ्चल समस्त हिन्दू समाज में एकात्मबोध प्रस्थापित करना और एकात्मबोध से जागृत प्रत्येक व्यक्ति को अनुशासन के स्नेह सूत्र में गूँथकर राष्ट्र समर्पित जीवन के लिए कटिबद्ध करना ही हमारा कार्य है।

अनुशासनबद्ध प्रबलशक्ति ही सब प्रकार की विपरीत परिस्थितियों से टक्कर ले सकेगी। इसीलिए प्रबल शक्ति व सामर्थ्य से युक्त हिन्दू समाज खड़ा करने का परमोच्च ध्येय हमने अपने सामने रखा है।

ऐसी सुस्थिति का निर्माण करें जिससे हिन्दू समाज सर्वसंकटमुक्त, वर्तमान काल की तुच्छ, अपमानपूर्ण समृद्धिहीन और दुर्बल स्थिति से दूर होकर विजयशाली जीवन प्राप्त कर सकें। (*रमेश कुमार मिश्र*, बेहटा, रायबरेली)

जब गुरुजी ने परम संत की प्रतिज्ञा करायी

जनवरी १९६८ में **साकेत विभाग** के त्रिदिवसीय कार्यकर्ता शिविर में पू. गुरुजी का प्रवास था। अयोध्या के प्रतिष्ठित संस्कृत महाविद्यालय उत्तर तोताद्रि मठ के पूज्य संत जगद्‌गुरु रामानुजाचार्य जी के आग्रह पर उनके आश्रम में गुरुजी के निवास की व्यवस्था की गयी। उदासीन आश्रम रानोपाली के विशाल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रांगण में लगे पटकुटियों में ७५० शिविरार्थियों के आवास की व्यवस्था थी। शिविर के अन्तिम दिन सायंकाल शिविरार्थियों, विभाग से आये गणवेशधारी स्वयंसेवकों तथा जनता के मध्य गुरुजी का सार्वजनिक उद्‌बोधन हुआ।

उक्त कार्यक्रम में अयोध्या के आठ मठों के महन्त पूर्ण गणवेश में उपस्थित थे। जगद्‌गुरु रामानुचार्य जी को गुरुजी स्वयं गणवेश पहनाकर कार्यक्रम में साथ लाये। भारी संख्या में उपस्थित हिन्दू समाज इस दृश्य को देखकर आश्चर्यचकित था। कार्यक्रम के पश्चात गुरुजी ने संत रामानुजाचार्य जी की प्रतिज्ञा करायी एवं उन्हें नगर संघचालक घोषित किया। समाज में बहुत दिनों तक इसका चर्चा थी कि गुरुजी के विलक्षण व प्रभावी व्यक्तित्व के कारण ही अयोध्या में इतने सारे पूज्य संत महात्मा कार्यक्रम में पूर्ण गणवेश में पूरे समय उपस्थित रहे।

—सत्यप्रकाश राजपाल, साकेत

गुरुजी के आगमन पर उतरौला में दीपावली जैसा वातावरण

२२ जनवरी, १९५३ को गुरुजी का प्रवास गोण्डा जनपद के उतरौला तहसील में हुआ। उस समय तहसील में १०० शाखाएँ हो चुकी थी। मैं तहसील प्रचारक था।

जिस मार्ग से गुरुजी आने वाले थे उसे लगभग डेढ़ किलोमीटर गाय के गोबर से लिपवाया गया था। बलरामपुर के राजा ने गुरुजी के कार्यक्रम में व्यवस्था हेतु अपनी पाँच कारें भेजी थी। दो पुलिस इन्स्पेक्टरों ने स्वयं घोड़ों पर बैठ गुरुजी की अगवानी किया। गुरुजी के कार्यक्रम में रहने की अनुमति लेकर उतरौला के जमींदार श्री सत्तार खाँ ३००० मुस्लिम बन्धुओं के साथ उपस्थित थे। उन्होंने स्वयं की इच्छा से १०,००० रु. व्यवस्था में सहयोग के लिये दिया।

मातृशक्ति ने गुरुजी का पूजन व तिलक कर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम में ३५० पूर्णगणवेशधारी स्वयंसेवक एवं ३५ हजार स्त्री-पुरुष उपस्थित हुए।

पूज्य श्री गुरुजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा—'हिन्दू समाज का संगठन ही देश की सभी समस्याओं का एक मात्र निदान है'। उतरौला के हिन्दुओं ने उस दिन रात्रि में घरों को सजाकर और दीपक जलाकर दीपावली मनायी।

—मिथिलेश नारायण, लखनऊ

सशरीर साक्षात् माधव

सन् १९६६ में कुम्भ के अवसर पर प्रयाग में दिनांक २२,२३ एवं २४ जनवरी को विश्व हिन्दू परिषद् का प्रथम अधिवेशन सम्पन्न हुआ। पू. गुरुजी ने स्वयं विशेष ध्यान देकर इस कार्य को आरम्भ करने की पहल की। इस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्मेलन में विश्व भर से आये महामण्डलेश्वर, धर्माचार्यों, शंकराचार्यों, साधु-संतों में अभूतपूर्व उत्साह एवं हिन्दू एकात्मता की अनुभूति हुई। अधिवेशन संत तुकड़ों जी महाराज की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने हिन्दू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता का भाव समाप्त करने तथा मतान्तरित बन्धुओं व भगिनियों के परावर्तन सम्बन्धी प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव का विरोध पूरी के शंकराचार्य स्वामी निरंजन देव तीर्थ ने किया। संयोगवश कहीं अन्यत्र व्यस्तता के कारण गुरुजी कार्यक्रम में उपस्थित नहीं थे। दूसरे दिन वही प्रस्ताव शब्दशः गुरुजी ने भूमिका सहित प्रस्तुत किया। पुनः स्वामी निरंजन देव खड़े हुए तथा ध्वनिवर्द्धक के सम्मुख आये किन्तु सबकी अपेक्षा के विपरीत कहा, 'तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ के अवसर पर माधव (भगवान श्रीकृष्ण) अदृश्य रूप में सर्वत्र व्याप्त रहते हैं और आज तो सशरीर माधव उपस्थित हैं। मैं उक्त प्रस्ताव का केवल समर्थन ही नहीं करता, अपितु प्रस्ताव के शब्द-शब्द एवं अक्षर-अक्षर से सहमत हूँ'। इस प्रकार अत्यन्त दुष्कर कार्य गुरुजी के तेजस्वी व्यक्ति एवं सूझबूझ से सरलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

—*संकटा प्रसाद सिंह*, लखनऊ

❖

स्थितप्रज्ञता

दीनदयाल जी के निधन पर

सन् १९६८ के फरवरी मास में उत्तर प्रदेश के कई स्थानों पर कार्यकर्ता शिविर लगे हुए थे। प्रयाग के शीत शिविर के समारोप पर पू. श्री गुरुजी प्रयाग आये हुए थे। अचानक संवाद मिला कि मुगलसराय में पं. दीनदयाल जी उपाध्याय की हत्या कर दी गयी है। यह शोक समाचार ही ऐसा भीषण और हृदय विदारक था जो वज्राघात को भी तुच्छ बना दे। समारोप कार्यक्रम जल्दी करके शीत शिविर को विसर्जित कर दिया। गुरुजी तुरन्त वाराणसी के लिये चल पड़े। श्री दीनदयाल जी के शव को देखकर श्री गुरुजी के दिल पर क्या बीती होगी, उसकी कल्पना हम साधारण जन के लिए सम्भव ही नहीं।

दूसरे दिन शव को दिल्ली वायुयान से रवाना करना था। शव को विदाई देने के लिए गुरुजी हवाई अड्डे गये। साथ में भाऊराव देवरस भी थे। भाऊराव देवरस कब तक स्वयं को रोक पाते? जब भाऊराव उत्तर प्रदेश के प्रान्त प्रचारक थे तो दीनदयाल जी सह प्रान्त प्रचारक थे। एक-एक अश्रुकण आँखों में विकल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हो रहे थे पर अभी तक सबको जबरदस्ती दबा रखा था। उस अन्तिम विदाई के समय सारा संयम छिन्न-भिन्न हो गया, आँखों से आँसू बह चले और कण्ठ से रुदन फूट पड़ा। तुरन्त श्री गुरुजी ने कहा, 'भाऊ! तू काय करतोस? (भाऊ! तुम क्या कर रहे हो?)

श्री गुरुजी के ऐसा कहते ही वे आँसू आँखों के भीतर ही ठिठक गये और वह सिसक होठों के पीछे रुद्ध हो गयी, भीतर ही भीतर घुटने के लिए, भीतर ही भीतर गलने और गलाने के लिये। (*मदन जालान,* गोरखपुर)

हम तो हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति के प्रहरी

दिनांक २१,२२ जनवरी सन् १९५० को पूजनीय श्री गुरुजी अपने काशी प्रवास में जिला संघचालक माननीय दत्तराज कालिया के रथयात्रा स्थित आवास पर ठहरे। महानगर के कार्यकर्ताओं के साथ अनौपचारिक वार्ता चल रही थी। अकस्मात् गुरुजी ने महानगर प्रचारक रमेन्द्र बन्दोपाध्याय को बुलाकर कहा, 'पता लगाओ पूज्य करपात्री जी अपने आश्रम पर हैं क्या? उनके दर्शन करना है'। हम कार्यकर्ता नहीं चाहते थे कि गुरुजी करपात्री जी से मिलने जायें क्योंकि वे संघ व गुरुजी के विषय में यदाकदा बहुत खराब बोलते थे। अपने एक शिष्य द्वारा लिखित पुस्तक, जिसमें संघ, श्री गुरुजी तथा विचार नवनीत की कटु आलोचना की गयी थी, का प्राक्कथन करपात्री जी ने लिखा था। उक्त विषय कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा गुरुजी के सामने रखे जाने पर उन्होंने खिन्नता प्रकट करते हुए कहा, 'तुम लोग नहीं जानते कि पूज्य करपात्री जी कौन हैं? क्या हैं? और क्या अपने आलोचक संत-महात्मा से मिलकर संघकार्य के लिए उनका आशीर्वाद नहीं लेना चाहिये'? उन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस के जीवन का एक प्रेरक-प्रसंग भी सुनाया कि स्वामी भी अपने एक कट्टर विरोधी एवं कटु आलोचक संत के मरने पर किस प्रकार फूट-फूटकर रोते हुए पाये गये।

इसी बींच श्री रमेन्द्र जी आ गये और श्री गुरुजी कुछ अधिकारियों के साथ कार से करपात्री जी के आश्रम की ओर प्रस्थान कर गये। हम कुछ कार्यकर्त्ता भी पीछे-पीछे साइकिल से आश्रम पर पहुँचे। आश्रम के बाहर चप्पल उतार कर श्री गुरुजी ने अन्दर प्रवेश किया तथा करपात्री जी को साष्टांग प्रणाम किया। कुशलक्षेम के आदान-प्रदान के पश्चात् करपात्री जी के सामने गुरुजी के आसन पर बैठते ही उन्होंने कहा, 'कहो गुरु गोलवलकर! आजकल फूल-मालाओं से स्थान-स्थान पर तुम्हारा खूब स्वागत-सत्कार हो रहा है। तुम्हारी जय-जयकार हो रही है। हिन्दू हृदय सम्राट के रूप में तुम्हें सुनने लाखों लोग आते हैं किन्तु यह बताओ कि किस धर्म-शास्त्र में नेकर, कमीज, पेटी, टोपी का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वेश के रूप में वर्णन है। संघ के कार्यक्रमों में सामूहिक भोजन-जलपान की विधा पर तो बहुत भद्दी टिप्पणी भी उन्होंने की किन्तु गुरुजी ने स्थितिप्रज्ञ मुस्कराते हुए उत्तर दिया, 'पूज्य महात्मन्! स्वागत-सत्कार जय-जयकार मेरा नहीं, हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज का हो रहा है। हिन्दू धर्म क्या है? धर्म शास्त्रों में क्या लिखा है? यह आप जैसे तपस्वी संत-महात्मा जानते हैं। हम तो हिन्दू धर्म एवं हिन्दू संस्कृति नामक रत्नमंजूषा के प्रहरी हैं, लाठी लेकर उसकी रक्षा के कार्य पर नियुक्त चाकर मात्र हैं तथा इस बात के लिए सचेष्ट हैं कि यह सम्पत्ति चोरों के हाथ न लगने पाये। उस मंजूषा में रखे हुए रत्न, मोती अथवा स्वर्णालंकार—'वे सब तो आप जैसे विद्वत्जनों की सम्पत्ति है। आप ही जाने इस मंजूषा में क्या भरा रखा है? मैं अनभिज्ञ उसे क्या जानूँ'? गुरुजी का उत्तर सुनकर करपात्री जी ने पुनः व्यंग्य बाण चलाया, 'बड़े वाचाल हो, बड़े वाक्पटु हो, गुरु गोलवलकर'! पुनः गुरुजी ने मुस्कराते हुए करपात्री जी से जाने की आज्ञा लेकर उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और आश्रम के बाहर आकर कालिया बाग के लिए प्रस्थान कर गये। (*कौशलानन्द*, गोरखपुर)

भ्रमित एवं अज्ञानी बन्धुओं को अपनायें

महात्मा गाँधी की हत्या के मिथ्या आरोप को आधार बनाकर संघ पर ४ फरवरी, १९४८ को भारत सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबन्ध १२ जुलाई १९४९ को समाप्त हुआ। पूज्य श्री गुरुजी सहित संघ के हजारों कार्यकर्त्ता कारागारों से मुक्त हुए तथा आरम्भ हुई संघ शाखाएँ व परम पूज्य श्री गुरुजी का राष्ट्रव्यापी प्रवास।

लखनऊ कार्यक्रम के पश्चात् श्री गुरुजी के साथ हम लोग काशी में आयोजित कार्यक्रम के लिए दिनांक २ सितम्बर, १९४९ को दून एक्सप्रेस से जा रहे थे। साथ में भाऊराव देवरस, भैयाजी सहस्रबुद्धे तथा अटलजी थे। जहाँ गाड़ी ठहरती, वहाँ असंख्य जनसमुदाय—संघ अमर रहे! पूज्य गुरुजी अमर रहे! के नारे लगाता पुष्प मालाओं से स्वागत करता। **गुसाईगंज (अम्बेडकर नगर)** स्टेशन पर गुरुजी जनसमुदाय को सम्बोधित कर रहे थे। अकस्मात् स्टेशन के बाहर खड़े १०-१५ लोगों की ओर से पत्थर बाजी आरम्भ हुई। एक पत्थर गुरुजी की आँख के ऊपर माथे पर लगा और रक्त प्रवाह आरम्भ हुआ। उस समय भी उन्होंने अपना मानसिक संतुलन बनाये रखा। असत्य प्रचार के कारण भ्रमित हुए अपने अज्ञानी हिन्दू बन्धुओं को स्नेह से अपनाने की ही बात उन्होंने कही।

गाड़ी चलने के पश्चात् गुरुजी ने घाव को पानी से धोया तथा रक्त प्रवाह बन्द करने हेतु भीगा तौलिया घाव पर रखे रहे। अगले स्टेशन पर आई भीड़

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को इसकी तनिक अनुभूति गुरुजी ने नहीं होने दी कि गुसाईगंज स्टेशन पर वे आहत हुए थे।

काशी में कार्यक्रम समाप्ति पर रात्रि में कुछ पत्रकारों ने इस सम्बन्ध में पूछा था किन्तु गुरुजी ने हँसकर टालते हुए विषय को बदल दिया।

—अनन्त रामचन्द्र गोखले, लखनऊ

कष्ट में भी प्रसन्नता

पश्चिम उत्तर प्रदेश का वर्ष १९७१ का संघ शिक्षा वर्ग सहारनपुर में आयोजित था। वर्ग में प.पू. श्री गुरुजी ३ दिन तक हम सबके साथ रहे। उनकी संघसाधना का परम सात्विक जीवन अत्यन्त निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जो वास्तव में हृदयानुभूति का विषय है। अपने ज्येष्ठ बन्धुओं से सुन रखा था कि गुरु जी के सम्पर्क में एक बार जो भी कोई आ गया वह सदा के लिए संघ समर्पित हो गया। ऐसे अपने संघ परिवार के मुखिया के सम्मुख आज हम सब स्वयंसेवक शान्तचित्त बैठे थे।

गुरुजी को हमारे गट की बैठक में रहना था। बैठक से पूर्व ही बता दिया गया था कि गुरुजी की कुछ मास पूर्व कैन्सर रोग के कारण छाती में शल्यक्रिया हो चुकी है। अत: हम सभी उनसे अधिक बात न करें तथा वे कम समय तक ही बैठक में रहेंगे किन्तु कष्ट में रहते हुए भी उन्होंने सहज और स्वाभाविक प्रसन्नमुद्रा में सबसे व्यक्तिवश: परिचय किया और जो उनका उद्‌बोधन था उसके शब्द आज स्मरण तो नहीं है किन्तु इतना अवश्य है कि संघकार्य करने की ऊर्जा एवं प्रेरणा मन-मस्तिष्क में ऐसी गहरे में समा गयी है जो आज भी अक्षुण्ण बनी हुई है। *—प्यारेलाल आर्य (श्रीमाली),* रायबरेली

❖

हास्य-विनोद में सबका मागदर्शन

आप मेरे पास आओगे तो लक्ष्मी साथ छोड़ देगी

१९६७ में लखनऊ संघ शिक्षा वर्ग के निमित्त पू. श्री गुरुजी वहाँ आये हुए थे। तीन दिन के लखनऊ निवास के समय सैकड़ों व्यक्तियों ने भेंट की—किसी ने भोजन पर तो किसी ने चाय पर।

आनन्द—उल्लासमय वातावरण में वे सबका स्वागत करते एवं यथायोग्य अभिवादन स्वीकार करके सभी को चमत्कृत कर देते। उसी समय लखनऊ में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहने वाले दो प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय साहित्यकार सर्वश्री अमृतलाल नागर एवं भगवतीचरण वर्मा भी गुरुजी से मुलाकात करने आये। चाय का समय था—यही कोई पाँच बजे सायंकाल। गुरुजी के कक्ष में घुसते ही नागर जी ने भूमि तक झुककर सादर अभिवादन किया तो उनके कुर्ते की ऊपरी जेब में रखे हुए पैसे गुरुजी के चरणों के पास गिर पड़े। वे सहसा पीछे हटे और अट्टाहास करते हुए बोले—'देखा, नागर जी! यदि आप मेरे पास आओगे तो लक्ष्मी साथ छोड़ देगी—वह निकल कर भाग जायेगी'।

नागर जी की प्रत्युत्पन्नमति ने भी कमाल दिखाया—बोले, 'गुरुजी! लक्ष्मी के नहीं हम सरस्वती के उपासक हैं—इन दोनों का बैर पुराना है। आप ठहरे संन्यस्त साधक। लक्ष्मी और सरस्वती के बीच जो कुछ सुलह होती प्रतीत हो रही थी, आपके सामने आते ही भ्रम का वह पर्दा हट गया। साधना और सम्पदा साथ-साथ नहीं चल सकते, यह सिद्ध हो गया। आपके पास आकर एक ऐसा दृश्य दिखा जो अब तक कल्पना में था—अब वह साकार हो उठा। शायद अब मैं माँ सरस्वती की आराधना और अधिक शक्ति एवं श्रद्धा के साथ कर सकूँगा। मुझे आज माया भागती सी दिखाई दे रही है'।

वार्ता का यह क्रम केवल दो-तीन मिनट ही चला, फिर वही चाय का दौर, अट्टाहास और उल्लास का वातावरण। (*भानुप्रताप शुक्ल*, दिल्ली)

मैं फकीरी क्यों छोड़ूँ?

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भारत की अखण्डता के लिए जून १९५३ में कश्मीर में बलिदान हो चुका था। अब जनसंघ का क्या होगा? यह प्रश्न लोगों के मन में चक्कर काट रहा था। एक-दो वर्ष पश्चात् पू. गुरुजी आये। उनको कार में बैठाकर पूजनीय प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के झूसी स्थित आश्रम में ले जाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। आश्रम में पहुँचने पर दण्डवत् प्रणाम के पश्चात् हास-परिहास में वार्ता आरम्भ हुई।

थोड़ी देर बाद प्रभुदत्त जी, जिनका मौन व्रत चल रहा था, ने गम्भीर होकर स्लेट पर लिखा, 'डॉ. मुखर्जी चले गये। अब देश का क्या होगा? वही एक व्यक्तित्व था जो नेहरू जी को झुका सकता था, आवश्यकता पड़ने पर उनका स्थान ले सकता था। इसके लिए तो अखिल भारतीय स्तर का नेहरू जी के समकक्ष का नेता चाहिये जो उन पर अंकुश लगा सके। मेरे विचार से ऐसा व्यक्तित्व तो इस समय देश में केवल आपका है। आप जनसंघ के सभापति क्यों नहीं बनते'? गुरुजी ने गम्भीर होकर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए कहा,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यदि किसी सुन्दर नवयुवती को कोई योग्य वर नहीं मिलता तो मैं अपनी फकीरी क्यो छोड़ूँ'? इस पर सभी ठहाका मारकर हँस पड़े।

इसके पश्चात् मैं अनेकों बार गुरुजी को लेकर झूसी आश्रम पर गया किन्तु फिर भी कभी ब्रह्मचारी जी को ऐसी बात कहने का साहस नहीं हुआ।

—वीरेन्द्र कुमार सिंह चौधरी, प्रयाग

चौदह वर्ष बाद तीन ही लौट कर आये

१९५४ के तृतीय वर्ष के संघ शिक्षा वर्ग नागपुर में एक दिन हम कुछ प्रचारक पूजनीय श्री गुरुजी के कक्ष में गये और उनमें से एक ने प्रश्न भरी मुद्रा में कहा, 'यदि कोई प्रचारक विवाहित है तो अपनी पत्नी के साथ कार्यक्षेत्र में कार्य करने में क्या आपत्ति है? प्रचारक संघ का तथा पत्नी सेविका समिति का कार्य करेगी। भगवान श्रीराम, माँ सीता को साथ लेकर १४ वर्ष तक अनेक यातनायें सहते हुए वानर—भालू जैसे वनवासी बन्धुओं का संगठन कर रावण सहित अनेक राक्षसों का वध कर देश में सुखशान्ति स्थापित किया। इस पर कृपया मेरा मार्गदर्शन कीजिये'। गुरुजी कुछ मुस्कराये और कहा, 'मुझे कोई आपत्ति नहीं। यदि कोई प्रचारक सपत्नीक कार्य करता है तो कोई हर्ज नहीं। किन्तु भाई! भगवान राम, लक्ष्मण और माँ सीता अयोध्या से वनवास हेतु तीन ही लोग गये थे। और चौदह वर्ष पश्चात् तीन ही लौटकर आये। क्या ऐसा कर सकता है कोई'? इस पर सब लोग खूब ठठाकर हँसे।

—नरेनारायण पाण्डेय, बलरामपुर

नरही शाखा 'न' रही

१७ जनवरी, १९५५ को **लखनऊ** महानगर के मुख्य शिक्षकों की बैठक पूज्य गुरुजी ले रहे थे। एक मुख्य शिक्षक के नाते में भी बैठक में उपस्थित था। वृत्त निवेदन के दौरान नरही शाखा का जब हालचाल गुरुजी ने पूछा तो कार्यकर्ता ने बताया कि इस समय शाखा बन्द है। गुरुजी को इस समाचार पर दुःख एवं आश्चर्य हुआ क्योंकि गत वर्ष उनके प्रवास के समय 'नरही शाखा' लखनऊ महानगर की एक अच्छी व व्यवस्थित शाखा थी। तथापि गुरुजी ने हँसते हुए कहा कि शाखा ने अपना नाम चरितार्थ कर दिया। यथा नाम तथा गुणः। नरही शाखा न-रही तो 'ना' 'रही'। इस टिप्पणी पर सभी कार्यकर्ता अट्टहास कर उठे और मुख्य शिक्षक लज्जा व ग्लानि में सिर झुकाये खड़ा रहा। गुरुजी के विनोद का परिणाम हुआ और कार्यकर्ताओं ने पुनः नरही शाखा आरम्भ कर कुछ ही दिनों में उसे व्यवस्थित एवं प्रभावी रूप प्रदान कर दिया।

—डॉ. ईश्वरचन्द्र, कानपुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे माता-पिता तो बहुत विद्वान् हैं

पूजनीय गुरुजी उत्तर प्रदेश के प्रवास के दौरान सन् १९४६ में **जौनपुर** आये। सायं सार्वजनिक कार्यक्रम में जौनपुर विभाग (जौनपुर, सुलतानपुर तथा आर्यमगढ़) के स्वयंसेवक तथा जौनपुर नगर के हिन्दू नर-नारी भारी संख्या में उपस्थित थे। गुरुजी के उद्‌बोधन के पश्चात् विभाग के कार्यकताओं की बैठक राजा यादवेन्द्र दत्त दुबे के महल में हुई। परिचय के क्रम में माता बदल नाम के एक कार्यकर्त्ता के परिचय के पश्चात् गुरुजी ने दुबारा जब उसका नाम पूछा तो इस नाम पर सब लोग हँस पड़े किन्तु गुरुजी ने गम्भीर होकर कहा, 'तुम्हारा नाम तो एक श्रेष्ठ महापुरुष के नाम पर हैं, तुम्हारे माता-पिता तो बहुत विद्वान् हैं, बहुत चिन्तन मनन के पश्चात् यह नाम रखा है। जानते हो किसकी माता बदल गयी थी'? माता बदल द्वारा कोई उत्तर प्राप्त न होने पर गुरुजी ने कहा, 'सब लोग जान लो। भगवान कृष्ण की माता बदल गयी थी। वे पैदा तो हुए थे माँ देवकी के गर्भ से मथुरा में और उनका पालन पोषण हुआ माँ यशोदा के घर वृन्दावन में। भगवान कृष्ण के इसलिए दो नाम हैं—'देवकीनन्दन एवं यशोदानन्दन'। इस पर माता बदल तो बहुत प्रसन्न हुआ किन्तु बाकी कार्यकर्त्ता लज्जित हो गये। (*केशव प्रसाद अष्ठाना,* आर्यमगढ़)

शाखाओं के कम होने में किसका हाथ?

सन् १९७२ में **लखनऊ** में तहसील स्तर एवं ऊपर के कार्यकर्त्ताओं का वर्ग था। वहाँ प.पू. श्री गुरुजी बैठक में कार्यकर्ताओं से कार्य का वृत्त ले रहे थे। प्रसंग था यमुनापार के तहसील के वृत्त लेने का। गुरुजी प्रत्येक से यही प्रश्न पूछ रहे थे कि संघ शिक्षा वर्ग के पूर्व क्षेत्र में शाखायें कितनी थी और उसके बाद कितनी रह गयी। यही प्रश्न उक्त कार्यकर्त्ता से भी था। कार्यकर्त्ता ने उत्तर दिया कि संघ शिक्षा वर्ग के प्रारम्भ में तहसील में ४५ शाखायें थीं एवं वर्ग के बाद लगभग २५ शाखायें रह गयीं। गुरुजी ने पूछा कि इन शाखाओं के कम होने में किनका योगदान रहा है। गुरुजी ने पुनः प्रश्न किया, 'ऐसे कार्यकर्त्ताओं का योगदान अभी भी जारी है, कि नहीं'? इस पर पण्डाल में जोर का ठहाका लगा। प्रसंग समाप्त हुआ पर उसी के साथ हँसी में ही उस कार्यकर्त्ता को संदेश भी मिल गया। ऐसी विलक्षण व अपूर्व शैली थी कार्यकर्त्ता निर्माण में श्री गुरुजी की। (*दुर्गाप्रसाद त्रिपाठी,* साकेत)

गुरुजी की पैनी दृष्टि

एक बार सन् १९७२ में पू. गुरुजी **सहारनपुर** प्रवास के समय नगर के वरिष्ठ संघ कार्यकर्ता श्री प्रमोद मित्तल के आवास पर ठहरे थे। मुझे तथा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दो अन्य स्वयंसेवकों की अतिथि व्यवस्था में लगाया गया था। गुरुजी के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मित्तल जी का मकान अत्यन्त सुन्दर था। इसकी चर्चा के दौरान उन्होंने गुरुजी को मकान का मानचित्र दिखाया। मानचित्र देखकर गुरुजी ने बड़ी प्रशंसा की किन्तु चुटकी लेते हुए कहा, 'शौचालय में ही स्नान करने की व्यवस्था है किन्तु हवा के अन्दर आने व बाहर जाने के लिए रोशनदान की व्यवस्था नहीं है'।

उनकी दृष्टि में इतना पैनापन था कि एक बार ध्वज उतारते समय उसकी नौंक जमीन से छू गयी। गुरुजी ने दूर से देख लिया और सहजता से ध्वज की माप ठीक न होने की बात कही। पैमाइश करने पर उनकी बात सच निकली। इस प्रकार बात-बात में वे स्वयंसेवकों को दिशा बोध कराते रहते थे। ऐसी थी अपने गुरुजी की पैनी दृष्टि? (*विनोद माहेश्वरी,* सहारनपुर)

गुरुजी का मनोविनोद

पू. गुरुजी पंजाब प्रान्त से आ रहे थे। रेलवे स्टेशन पर उन्हें चाय देने का निर्देश हुआ था। गाड़ी आयी और आगरा रेलवे स्टेशन पर खड़ी हुई। दामोदर जी ने चाय बनायी। उससे पूर्व इनके साथी ने बनती हुई चाय में चीनी डाल दी। दामोदर जी ने चाय दूध और चीनी उसमें डाली दी।

जब गाड़ी रेलवे स्टेशन पर रुकी तो गरम चाय जिसे दूध की बनायी थी, गुरुजी को पीने को दी। गुरुजी ने कहा—अरे! इतनी मीठी चाय। फिर स्वयंसेवकों ने कहा कि चाय दामोदर जी ने बनायी है।

अब दामोदर जी के हाथ पैर फूल गये। पानी गरम था, दूध भी गरम था। तुरन्त चाय बनाकर गुरुजी को दी गयी। गुरुजी ने कहा कि अब चाय बहुत अच्छी है और गाड़ी चल दी।

यह श्रेष्ठ सेवा का उदाहरण है। यही मनोविनोद का भी उदाहरण है।

—*दामोदर सिंह,* आगरा

रज्जू भैय्या! आपको वकील होना चाहिये

सन् १९६८ में कानपुर में संघ शिक्षा वर्ग लगा हुआ था। मैं उसी वर्ष तृतीय वर्ष कर सीधा कानपुर वर्ग में पहुँचा। वहाँ देखा कि कुरावली (मैनपुरी) के जनार्दन प्रसाद जी जो प्रथम वर्ष हेतु वर्ग में आये थे, बड़े उदास बैठे थे। मैंने पूछा क्यों उदास बैठे हो, तो उन्होंने कहा कि वर्ग में पू. गुरुजी ने पूछा अभी तक क्या सीखा। मैंने उत्तर दिया कि कुछ नहीं सीख पाया है। इस बात

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर गुरुजी ने कहा कि बिस्तर बाँधकर घर जाओ। मेरा आशय यह था कि सब सीखा, कुछ नहीं सीखा।

यह सुनकर मैं उन्हें रज्जू भैया जी के पास ले गया। रज्जू भैया विषय की गम्भीरता समझकर उन्हें गुरुजी के पास ले गये तथा वस्तुस्थिति से अवगत कराया। तब गुरुजी ने कुछ प्रश्न किये, जिसके उत्तर जनार्दन जी ने सही-सही दिये। इस पर गुरुजी ने कहा कि जाओ और बिस्तर जाकर खोल दो। उसी दौरान रज्जू भैया से कहा कि आप को प्रोफेसर नहीं वकील होना चाहिये।

—चन्द्रपाल तिवारी, मैनपुरी

जब गुरुजी ने पूछा : 'गोस्वामी का अर्थ जानते हो'?

पूज्य गुरुजी उत्तर प्रदेश के प्रवास पर पहली बार सन् १९४२ के आरम्भ में आये। यह प्रवास झाँसी से ही आरम्भ हुआ। उस समय झाँसी में दो शाखायें थीं। इन शाखाओं के तरुण स्वयंसेवकों की बैठक इस अवसर पर रखी गयी जिसमें गुरुजी से उनका परिचय हुआ।

मैं भी बैठक में उपस्थित था। मैं कुछ महीने पहले ही स्वयंसेवक बना था। बैठक में प्रत्येक स्वयंसेवक अपने स्थान पर खड़े होकर अपना परिचय देता था। मेरी बारी आयी। मैं खड़ा हुआ तो गुरुजी ने पूछा, 'क्या नाम है'? मैंने कहा, 'परशुराम गोस्वामी'।

गुरुजी बोले—गोस्वामी? फिर वे हँसे। मैं उनकी हँसी का कारण न जान सका। गुरुजी पुनः बोले—'गोस्वामी' का अर्थ ज़ानते हो'? मैं चुप रहा।

वे बोले—'गो' का अर्थ है गाय। 'स्वामी' का अर्थ है मालिक। 'गोस्वामी' का अर्थ हुआ—'गाय का स्वामी यानी बैल'। यह कहकर वे जोर से हँसे। बैठक में सभी लोग हँसने लगे।

फिर गुरुजी ने कहा—होशंगाबाद में अपना एक स्वयंसेवक है—गौरकृष्ण गोस्वामी। क्या उससे तुम्हारा कोई नाता है? मेरे मना करने पर गुरुजी ने कहा—'गौर का अर्थ गोरा, कृष्ण का अर्थ है काला। इस प्रकार 'गौरकृष्ण' का अर्थ गोरा भी और काला भी और गोस्वामी तो वह है ही। मैं तो उसको चितकबरा बैल कहता हूँ'। यह सुनकर हम सभी लोग हँस पड़े। इसके कुछ महीने बाद लखनऊ में संघ वर्ग का आयोजन हुआ। मैं उसमें प्रथम वर्ष के शिक्षण के लिए गया था। वर्ग में गुरुजी का आगमन हुआ। बारी-बारी से प्रत्येक ज़िले के स्वयंसेवकों का उन्होंने परिचय प्राप्त किया।

झाँसी की बारी आयी। मैंने सोचा, अब गुरुजी से परिचय होगा। 'गोस्वामी' शब्द पर फिर हँसी होगी। इस झंझट से बचने का उपाय यही है, अपना नाम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
केवल 'परशुराम' बताया जाये, 'गोस्वामी' को बताया ही न जाये। कई महीने बीत चुके हैं, गुरुजी झाँसी वाला प्रसंग भूल चुके होंगे। तब से वे अनेक नगरों का दौरा कर चुके हैं, हजारों स्वयंसेवकों का परिचय पा चुके हैं। उन्हें मेरा कुलनाम 'गोस्वामी' याद नहीं होगा।

बारी आने पर मैं खड़ा हुआ। गुरुजी ने पूछा—'क्या नाम है'? मैंने कहा—परशुराम। यह सुनकर गुरुजी हँसे और बोले—बड़े सयाने बनते हो। पूरा नाम बताओ। विवश होकर मुझे पूरा नाम परशुराम गोस्वामी बताना पड़ा। 'गोस्वामी सुनकर गुरुजी खूब हँसे।

इस प्रकार पहली भेंट में ही मुझे गुरुजी के स्नेह, उनकी विलक्षण स्मरण शक्ति और विनोदप्रियता, तीनों का परिचय मिल गया।

—*परशुराम गोस्वामी*, झाँसी

वही मेरा Bank Balance है

एक बार पूज्य गुरुजी अपने प्रवास के अन्तर्गत झाँसी पधारे। कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रभात शाखा के एक कार्यकर्ता से उन्होंने पूछा, 'शाखा में क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं'?

उसने कहा, 'कुछ खेल होते हैं। व्यायाम, योग और सूर्यनमस्कार करते हैं.....'।

गुरुजी ने पूछा, 'कितने सूर्य नमस्कार लगाते हो'? उसने कहा, 'तीन सूर्यनमस्कार रोज लगाते हैं'।

इस पर गुरुजी जोर से हँसे और बोले, 'वाह रे पहलवान। तीन सूर्यनमस्कार लगाते हो! सुनो, मैं नियमित रूप से सवा सौ सूर्य नमस्कार रोज लगाता था। उसी के कारण अभी तक स्वस्थ हूँ। वही मेरा Bank Balance है। उसी के बल पर चल रहा हूँ। जिस दिन यह बैलेंस समाप्त हो जायेगा, उस दिन यहाँ से (संसार से) चल दूँगा'। (*परशुराम गोस्वामी*, झाँसी)

समाज हमारी चिन्ता करेगा

मैं सन् १९५४ में तृतीय वर्ष का संघ शिक्षा वर्ग करने नागपुर गया था। वर्ग में पू. गुरुजी के प्रवास अवधि में यदा कदा शिक्षार्थी टोली बनाकर उनसे उनके कक्ष में मिलने जाते। कभी-कभी तो संघ स्थान पर ही शाखा विकिर के पश्चात् शिक्षार्थी उन्हें घेर कर खड़े हो जाते और गपशप होती। ऐसी ही अनौपचारिक वार्ता के दौरान एक दिन उत्तर प्रदेश के कुछ प्रचारक शिक्षार्थियों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ने गुरुजी से कहा, 'ईसाई मिशनरी भी संघ प्रचारकों के समान घर-परिवार छोड़कर समाज सेवा के कार्य में लगे हैं किन्तु उनके यहाँ इस बात की गारण्टी है कि वृद्धावस्था, रुग्णावस्था एवं विकलांगता की अवस्था में मिशन उन कार्यकर्ताओं की सेवा-सुश्रुषा, भरण-पोषण एवं जीवन निर्वाह की चिन्ता व व्यवस्था करेगा। क्या संघ में भी कुछ ऐसी व्यवस्था है अथवा करने की योजना है'? गुरुजी सिर नीचा किये उनकी वार्ता ध्यानपूर्वक सुनते रहे फिर सिर उठाकर अपने बालों को पीछे करते हुए उत्तर दिया, 'अपने यहाँ ऐसा कुछ नहीं है और न तो आगे करने का विचार है, क्योंकि हम सन्यस्त भावना से समाज की सेवा करते हैं। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि जिस समाज की हमने निःस्वार्थ भाव से जीवन भर सेवा की है, वह हमारे जीवन के अन्तिम दिनों अथवा संकट की अवस्था में हमारी चिन्ता और देखभाल अवश्य करेगा। यदि समाज ऐसा नहीं करता तो हम मान लेते हैं कि हमने समाज सेवा नहीं की, समाज सेवा का ढोंग किया है'। (*नरनारायण पाण्डेय,* बलरामपुर)

❖

पारिवारिक आत्मीयता

काय झाले आबा

पूजनीय गुरुजी प्रान्तीय बैठक के निमित्त दिनांक २९ से ३१ दिसम्बर, सन् १९७० को **लखनऊ** के प्रवास पर रहे। मैं उनसे मिलने के लिए निरालानगर स्थित बैठक स्थल पर गया। वे उस समय कुछ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं—रज्जू भैया, भाऊराव, भिड़े जी आदि के साथ मण्डल में बैठकर अनौपचारिक चर्चा कर रहे थे। मैंने गुरुजी से मिलने हेतु रक्षा व्यवस्था में लगे स्वयंसेवक से आग्रह किया किन्तु रक्षक ने उत्तर दिया कि इस समय गुरुजी के साथ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की बैठक चल रही है, उनसे भेंट नहीं हो सकती। संयोगवश उसी समय डॉ. थत्ते द्वार की ओर टहलते हुए आ गये। चूँकि गुरुजी का मेरे आवास पर कई बार ठहरना हुआ था, अतः डॉ. थत्ते जी मुझे भली-भाँति पहचानते थे और मुझे देखते ही आशय समझकर मुझे अन्दर बुला लिया। मैं उनके साथ बैठक स्थल की ओर चल पड़ा। मण्डल के निकट पहुँचकर आबा जी ने मेरी पर्ची—जिसमें मैंने उनके दर्शन की इच्छा व्यक्त की थी गुरु जी को दिया—गुरुजी ने पर्ची देखते ही पूछा, 'काय झाले आबा' (क्या बात है आबा) और मुझे बुलाकर अपने बगल में बिठाकर पीठ पर हाथ फेरते हुए मेरा तथा मेरे परिवार का कुशलक्षेम पूछा। उनके स्नेहिल आत्मीय स्पर्श से मेरा रोम-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रोम आह्लादित हो उठा और वह क्षण मेरे जीवन का चिरस्मरणीय क्षण बन गया। (*सुन्दरलाल सोनी*, लखनऊ)

चलो! वृन्दा से मिलते हुए चलते हैं

काशी प्रवास हेतु दिनांक २७ अगस्त, १९५९ को पूजनीय गुरुजी दिल्ली एक्सप्रेस से दीनदयाल नगर स्टेशन पर अपराह्न डेढ़ बजे उतरे। दीनदयाल नगर से कार द्वारा उनकी काशी जाने की योजना थी। स्टेशन पर दीनदयाल नगर तथा काशी के कुछ स्वयंसेवक उपस्थित थे। मैं बहुधा संघ के अधिकारियों की भोजन-जलपान व्यवस्था में रहा करता था। गाड़ी से उतरते ही गुरुजी ने उपस्थित स्वयंसेवकों से पूछा, 'वृन्दा कहाँ है? उसका क्या समाचार है'? कोई उत्तर न मिलने पर उन्होंने स्वयंसेवकों से कहा, 'चलो वृन्दा से मिलते हुए चलते हैं'। लगभग दो बजे गुरुजी जी.टी. रोड स्थित मेरी मिठाई की दुकान पर पहुँचे मुझे वहाँ भी न पाकर, वे सीधे दुकान के प्रथम तल स्थित मेरे आवास पर निःसंकोच आ गये। हम सब उन्हें देखकर आश्चर्यचकित आनन्दविभोर हो गये। गुरुजी ने मेरी पीठ पर हाथ रखते हुए पुछा, 'कहो वृन्दा। सब कुशल है न'? तत्पश्चात् पिताजी को 'जय राधे गोविन्द' कह प्रणाम किया और सीढ़ी से नीचे उतरकर कार में बैठ काशीको प्रस्थान कर गये। मैं सपरिवार गुरुजी के इस स्नेहिल-आत्मीय व्यवहार के कारण कृत-कृत हो गया। गुरुजी के मेरे आवास पर अप्रत्याशित आगमन के कारण संघ का बन्धुत्व भाव नगर में वर्षों चर्चा का विषय रहा। (*वृन्दावन चन्द्र दत्ता*, दीनदयाल नगर)

पारिवारिक आत्मीयता

मेरा परिवार **वाराणसी** के कमच्छा मुहल्ले में रामकृष्ण मिशन मार्ग पर कई वर्षों से रह रहा है। मेरे पिताजी डॉ. प्रबोध कुमार बनर्जी प्रसिद्ध दन्त चिकित्सक थे। अपने बाल्यकाल में ही वे संघ के सम्पर्क में आये। चिकित्सक होने के कारण काशी में उनका व्यापक सम्पर्क था। पूजनीय श्री गुरुजी का सन् १९५५ के पश्चात् जब भी काशी प्रवास होता था, वरिष्ठ कार्यकत्ताओं की योजना से उपरोक्त आवास पर ही उनके निवास की व्यवस्था रहती थी। उनके प्रवास के समय सम्पूर्ण परिवार अत्यन्त आत्मीयता तथा आनन्द का अनुभव करता था एवं घर में उत्सव जैसा हर्षोल्लास का वातावरण रहता। गुरुजी के सरल एवं सहज व्यवहार से ऐसा लगता था कि मानो हमारे परिवार के मुखिया हैं। यदाकदा वे हम सबसे बंगला भाषा में वार्तालाप किया करते थे। गुरुजी से मिलने देश के अन्य प्रान्तों से प्रबुद्ध नागरिक, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायाधीश, सामाजिक कार्यकर्त्ता, जनप्रतिनिधि एवं सन्त-महात्मा भी हमारे आवास पर आया करते थे। एक बार डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भी आगमन हुआ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हम लोगों का कार्य मुख्यतः अतिथियों को अल्पाहार आदि कराना रहता था। मुझे स्मरण है कि गुरुजी प्रातः ४ के पूर्व उठकर स्नानादि के पश्चात् एकान्त में ध्यान किया करते थे।

मैं विवाह के पश्चात् अपने ससुराल बरेली में रहने लगी। अक्टूबर सन् १९६५ में जब गुरुजी बरेली प्रवास पर आये तो उन्होंने मुझे मिलने के लिए बुलाया और मैं भाऊराव देवरस के साथ अपनी ससुराल के परिजनों सहित उनका आशीर्वाद प्राप्त करने उनके पास गयी। ईश्वर की कृपा ही थी कि गुरुजी का पितृतुल्य सान्निध्य एवं स्नेह मुझे पुनः कुछ समय के लिए प्राप्त हुआ।

—श्रीमती रमा मुखर्जी, वाराणसी

तुमने मेरा एक हाथ ले ही लिया

मैं नागपुर में २ वर्ष प्रसूतिकागृह तथा ४ वर्ष मेयो अस्पताल का सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पूर्ण कर वहीं परिचारिका के रूप में स्वावलम्बी जीवन व्यतीत कर रही थी। मेरा पूजनीय श्री गुरुजी के घर भाऊजी तथा ताई जी से मिलना-जुलना यदा-कदा होता रहता। सन् १९५६ में माननीय माधव जी देशमुख के साथ दाम्पत्य सूत्र बन्धन में बँध गयी। एक विद्वान एवं तेजस्वी संघ प्रचारक की धर्मपत्नी होने पर मुझे सौभाग्य एवं गौरव की अनुभूति हुई। विवाह के उपलक्ष्य में सहभोज का आयोजन गुरुजी के नागपुर स्थित घर पर हुआ। वहाँ हम लोगों को आशीर्वाद देने के लिए पूज्य ताई जी, भाऊ जी (गुरुजी के माता-पिता) तथा नागपुर के माननीय संघ परिवार के बहुत सारे बन्धु-भगिनी उपस्थित थे। दूसरे दिन गुरुजी प्रवास पर निकले। हम लोग गुरुजी का आशीर्वाद लेने स्टेशन पहुँचे। मैंने झुककर गुरुजी को प्रणाम किया। उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ रखकर कहा, 'आखिर तुमने मेरा एक हाथ ले ही लिया'। मेरे मुख से अकस्मात् निकला, 'आपके पास तो दो हाथ और आ गये'। मैंने गुरुजी को विवाह पूर्व माधव जी देशमुख को दिये वचन जब बताया कि हमारा दाम्पत्य जीवन इनके (माधव जी देशमुख) संघ कार्य में कभी बाधक न होगा, मैं स्वतन्त्र नहीं, स्वावलम्बी जीवन बिताऊँगी। संसार रूपी प्रपंच के कारण आर्थिक दृष्टि से उनके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं आयेगी। मेरा समय इनके विश्राम का (संघ कार्य के पश्चात्) होगा। यह सुनकर गुरुजी ने मृदु मुस्कान बिखेरते हुए अपना ममता भरा हाथ मेरे सिर पर रखा और मेरे सुदीर्घ, सुखी एवं समृद्ध दाम्पत्य जीवन हेतु हृदय से शुभाशीर्वाद दिया। गुरुजी का प्रश्न एवं उनको दिया गया मेरा उत्तर हम लोगों के लिए सदैव सम्बल बना रहा कि मैं अपने पतिदेव को दिये गये वचन का जीवन भर पालन करूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह उल्लेखनीय है कि माधव जी देशमुख अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक प्रचारक के रूप में संघ कार्य में लगे रहे।

—*श्रीमती सरोजनी देशमुख,* वाराणसी

यह गाड़ी तुम्हारे लिए ही पीछे चलकर आयी

एक बार पूजनीय श्री गुरुजी अपने प्रवास के क्रम में **काशी** आये थे। प्रवास समाप्त होने पर अनेक स्वयंसेवक उनको छोड़ने स्टेशन गये थे। बड़ी भीड़ थी; छोड़ने वालों की। मैं भीड़ से दूर ही रहता हूँ, ऐसा श्री गुरुजी जानते थे। गुरुजी गाड़ी पर चढ़ गये, मैं पीछे दूर ही अलग खड़ा था। अब गाड़ी पीछे चलने लगी और उनका डिब्बा मेरे सामने आ गया। वह अपनी सीट से उठकर फाटक पर आ गये और बोले, 'यह गाड़ी तुम्हारे लिए ही पीछे चलकर यहाँ आयी है'।

आश्चर्यचकित हो मैंने गुरुजी को प्रणाम किया और उनको निहारता रहा। गाड़ी फिर खुलकर आगे चली गयी। आज भी मुझे वह घटना चमत्कारिक लगती है। (*ठाकुर गुरुजन सिंह,* प्रयाग)

गुरुजी के आगमन से जब परिवार में समरसता आयी

मैं संघ का स्वयंसेवक तो सन् १९५० के दशक में बन गया था किन्तु मेरे परिवार और विशेषकर महिलाओं में छूआ-छूत का भाव व्याप्त था। अक्टूबर १९६५ में पूजनीय श्री गुरुजी के **उरई** में सार्वजनिक उद्‌बोधन के पश्चात् मेरे आवास पर रात्रि भोजन निश्चित हुआ। इस भोज में संघ कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त भारी संख्या में नगर के गणमान्य लोग भी आमन्त्रित थे। भोजन निर्माण में पड़ोसी ग्राम की वनवासी महिलाओं का सहयोग लिया गया। रात्रि भोज में गुरुजी, डॉ. थत्ते, रज्जू भैया तथा आमन्त्रित बन्धु बैठे। भोजन वितरण में सभी वर्ग तथा जाति के बन्धु लगे थे। परिवार की महिलायें आश्चर्य व जिज्ञासा भरी दृष्टि से इसका अवलोकन कर रही थी कि गुरुजी व अधिकारियों की पंक्ति में कौन लोग वितरण कर रहे हैं। गुरुजी का भव्य-दिव्य ऋषि रूप तथा रुचिपूर्वक भोजन करते देखकर उनका हृदय परिवर्तन आरम्भ हो गया।

भोजनोपरान्त गुरुजी ने परिवार के स्त्री-पुरुषों से भेंट कर उनका परिचय प्राप्त किया। महिलायें श्रद्धावश गुरुजी का चरण स्पर्श करके ज्यों आगे बढ़ीं कि वे दो कदम पीछे हट गये तथा पुनः फुर्ती से आगे बढ़कर बड़ी-बूढ़ी महिलाओं का चरणस्पर्श करते हुए कहा कि हिन्दू धर्म में प्रत्येक नारी मातृशक्ति के रूप में वन्दनीय है, अतः आप सब को मेरा सादर प्रणाम।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर क्या था। परिवार के सभी स्त्री-पुरुषों का मन-मस्तिष्क पूर्णतया सामाजिक समता व समरसता की भावना से ओत-प्रोत हो गया। बड़ी-बूढ़ी महिलाओं ने कहा कि ऋषि-मुनियों के भोजन करने से आज हमारा घर पवित्र हो गया। चलो भगवान व ऋषि प्रसाद समझकर हम सब लोग भोजन करें। इस प्रकार गुरुजी के मेरे घर भोजन करने से मेरे परिवार से छुआ-छूत, बड़े-छोटे का भाव सदा-सदा के लिए दूर हो गया। (*बाबूराम,* उरई)

पारिवारिक आत्मीयता

सन् १९७२ के **सहारनपुर** संघ शिक्षा वर्ग में पू. गुरुजी का तीन दिन का प्रवास था। वर्ग बाजौरिया इण्टर कॉलेज में लगा था। विद्यालय के सामने श्री प्रमोद मित्तल के निवास पर उनका ठहरना हुआ। समय-समय पर शिक्षार्थी उनसे मिलने आते। गुरुजी उनसे अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक मिलते, स्वयंसेवकों की बात बड़े ध्यान से सुनते तथा उनके परिवार की व्यक्तिगत जानकारी लेते थे। गुरुजी इस बात पर बल देते थे कि संघ कार्य करते-करते परिवार का वातावरण भी संघानुकूल बनना चाहिये। परिवार की माताओं-बहिनों को यह स्पष्ट कल्पना होनी चाहिये कि संघ क्या है और क्या करता है! गुरुजी जिस परिवार में जाते, उस परिवार को अपना बना लेते थे। छोटा-सा बच्चा भी उन्हें उतना ही प्रिय था जितना एक स्वयंसेवक। परिवार के किसी सदस्य को जरा भी इस बात की अनुभूति नहीं होने देते थे कि वे परिवार के सदस्य नहीं है।

—*फतेहचन्द्र मेहता,* सहारनपुर

जब चाय देने का उनमें साहस नहीं रहा

घटना १९७० की **गोलागोकर्णनाथ** संघ शिक्षा वर्ग की है। मैं पू. गुरुजी के निमित्त सेवा के लिए रखा गया था। बैठक समाप्त होने के बाद चाय देना था। मैंने चाय कार्यकर्त्ताओं को देना शुरु किया। उसी समय सर्वाधिकारी ने मुझसे कहा कि सबसे पहले गुरुजी को चाय देनी चाहिये, उनको जाकर दो। मैंने कहा कि आप दो, मुझमें साहस नहीं है।

यह बात गुरुजी ने सुन ली और हँसते हुए कहा, 'हाँ! वह ठीक तो कह रहा है, उसमें साहस नहीं है'।

चाय सर्वाधिकारी जी ने गुरुजी को दी परन्तु मैंने कहा कि उनको चाय में कितना दूध दूँ और चीनी कितने चम्मच दूँ। कही अधिक या कम न हो जाये, मुझे भय लग रहा था। उस दिन गुरुजी ने मुझे बुलाकर बैठाया और बातें की।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे थे पू. श्री गुरुजी जिनमें सदा अपनापन ही रहा।

—*राजेश्वर प्रसाद शर्मा,* आगरा

कहो विश्वनाथ! चोट तो नहीं लगी?

सन् १९६५ में उत्तरांचल के प्रवास में पू. गुरुजी **लोहाघाट** से मायावती आश्रम होते हुए कार द्वारा टनकपुर आ रहे थे। उनकी कार के पीछे चल रही एक दूसरी कार में मैं, विश्वनाथ जी लिमये, भाऊराव, ज्योतिस्वरूप जी आदि कार्यकर्त्ता बैठे थे। थोड़ी दूर ही चले थे कि गुरुजी की कार को सेना की एक गाड़ी से टक्कर लग गयी। परिणामस्वरूप कार लगभग एक मीटर दाहिनी ओर फिसल गयी। चालक ने कार पर नियन्त्रण कर रोक दिया। ईश्वर की कृपा से कार सैकड़ों मीटर गहरी खाई में गिरने से बच गयी। पीछे आ रही कार्यकर्त्ताओं की कार गुरुजी की कार से हल्की सी टकरा गयी। गुरुजी अविलम्ब कार से नीचे उतरे तथा पीछे की कार में बैठे श्री विश्वनाथ लिमये से पूछा, 'कहो विश्वनाथ! कैसे हो तुम लोग? चोट तो नहीं लगी किसी को'? हम सब यह सुनकर दंग रह गये कि गुरुजी में कितनी फुर्ती थी और अपने कार्यकर्त्ताओं की कितनी चिन्ता करते थे। (*घनश्याम अग्रवाल,* बरेली)

जब गुरुजी ने बीमार स्वयंसेवक का कुशलक्षेम पूछा

यह घटना सन् १९४५-४६ की है! पूज्य गुरुजी उत्तर प्रदेश का दौरा पूरा करके रात में १० बजे **झाँसी** पधारे। यहाँ उनका कोई कार्यक्रम नहीं था। उन्हें यहाँ से नागपुर के लिए ग्रांड ट्रंक एक्सप्रेस पकड़नी थी। केवल दो घंटे का समय था। यह समय गुरुजी ने संघ कार्यालय में बिताया।

गुरुजी के आते ही हमारे प्रचारक श्री शुकदेव जी ने सदाशिव नाम के एक स्वयंसेवक को उनके लिए चाय बनाने को कहा। सदाशिव ने चाय बना कर गुरुजी को दी। गुरुजी ने चाय पीना शुरू किया और इधर सदाशिव को एक उल्टी हुई। थोड़ी देर में एक और उल्टी हुई। उसके बाद कुछ उल्टियाँ और हुई। दवा मँगायी गयी। दवा लेने के बाद भी उल्टियाँ होती रहीं।

थोड़ी देर में गुरुजी नागपुर के लिए रवाना हो गये। जाने के पहले वे सदाशिव की उल्टियों का हाल-चाल पूछते गये।

कुछ दिनों बाद गुरुजी का एक पत्र नागपुर से आया। उसमें उन्होंने पूछा था कि सदाशिव की तबियत अब कैसी है? लिखें। एक-एक स्वयंसेवक के प्रति उनकी ऐसी आत्मीयता देखकर हम लोग अभिभूत हो गये।

—*परशुराम गोस्वामी,* झाँसी

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसिद्धि पराङ्मुख जीवन

जब अपनी प्रशस्ति उन्हें खल गयी

पत्रिका का सम्पादन करते हुए मैंने 'हेडगेवार भवन' में रहने वाले संघ के एक पुराने प्रचारक रामभाऊ जी जामगढ़े का नाम देकर यह लिखा था कि श्री गुरुजी के सम्बन्ध में, एक दिन डॉक्टर हेडगेवार जी ने उत्साह से, 'Available best' (उपलब्ध सर्वोत्तम) शब्द का प्रयोग किया'। यह बात 'राष्ट्रधर्म' पत्रिका में छप भी गयी और जब गुरुजी ने पढ़ा तो बड़े नाराज, बहुत ज्यादा नाराज। वह नाराजगी उन्होंने इतने जोर से व्यक्त की कि उससे कई लोग परेशान हो उठे।

उन परेशान लोगों ने मुझसे कहा—आपने तो राष्ट्रधर्म पत्रिका में छाप दिया और मुसीबत हमारी हो गयी। हमने गुरुजी से कहा भी कि वह तो बचनेश जी ने छापा है, किन्तु वे तो यही कहते रहे कि रामभाऊ से मिलने पर पूछूँगा कि क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उसने ही खोला था?

गुरुजी का यह क्रोध देखकर मैंने सीधे उन्हें ही पत्र लिखा, 'उस लेख में यदि कोई गलत सूचना है तो वह त्रुटि मेरी है, किसी अन्य की नहीं। रामभाऊ जी की नहीं किन्तु सही सूचना की भी आपसे जानकारी जरूर चाहूँगा, जिससे कि अगले अंक में भूलकर सुधार की गुँजाइश हो सके'।

इस पर 'हेडगेवार भवन' से गुरुजी के बजाय एक अन्य कार्यकर्ता ने उत्तर भेजा—गुरुजी को आपका पत्र एकाध अन्य पत्र मिले हैं, किन्तु आप कोई चिन्ता न करें।

फिर भी जब गुरुजी सन् १९७० में **कानपुर** आये तो मैं इसी उद्देश्य से एक दिन दोपहर में बैरिस्टर मा. नरेन्द्रजीत सिंह के यहाँ गया, वहाँ बाहर लखनऊ के संघचालक श्री झामनदास जी भी बैठे हुए थे, उन्हें भी मिलना था। उस दिन गुरुजी के पास लगभग डेढ़ घण्टा रहा, कई प्रसंग आये किन्तु उन्होंने रामभाऊ जी वाली बात का नाम तक नहीं लिया। मैं समझ गया कि अपनी प्रशस्ति के लिए लिखा शब्द ही उन्हें खल गया होगा। मेरे हाथ में 'राष्ट्रधर्म' का एक अंक था, सन् १९७० की फरवरी का अंक। बात करते-करते उसी अंक को लेकर लगभग बीस मिनट तक गुरुजी पढ़ते रहे। श्री झामनदास जी भी तब तक बैठे रहे। फिर वह प्रति हाथ में ही लिये-लिये कार में बैठकर जहाँ जाना था, चले गये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं सोचता हूँ कि कितने सहज थे, कितने सुलभ थे गुरुजी। उनके निकट जाने में कभी कोई झिझक नहीं हुई। (*पद्मश्री वचनेश त्रिपाठी,* लखनऊ)

मेरी वहाँ जरूरत नहीं

पूज्य गुरुजी के प्रसिद्ध पराङ्मुख जीवन की एक आँखों देखी घटना याद आती है। १९५२ में प्रयाग में महाकुम्भ के अवसर पर एक विशाल गो-रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया था। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन उसके अध्यक्ष थे। उसके आयोजक थे संत प्रवर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी। उक्त सम्मेलन में दस लाख से भी अधिक गो-भक्त नर-नारी एकत्रित थे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, जनसागर हिलोरे लेता दिखाई देता था। सभा मंच पर राजर्षि टण्डन एवं ब्रह्मचारी जी पहुँच चुके थे। गुरुजी के आने की प्रतीक्षा थी। वे जब अपने निश्चित समय पर सम्मेलन में पधारे तो चारों ओर से 'पूज्य गुरुजी की जय' की कोलाहलपूर्ण आवाज गूँजने लगी। जय निनाद सुनते ही गुरुजी को जैसे विद्युत का करेण्ट सा लगा। वे रुके और क्षण भर में घूमकर अपनी मोटर की ओर तेज गति से बढ़ने लगे। मोटर में बैठ कर बोले, 'चलो वापस। जिस सम्मेलन में 'भारतमाता' और 'गो माता' की जय के स्थान पर किसी व्यक्ति की जय बोलने वाले लोग एकत्रित हैं, वहाँ मेरे लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। वहाँ मेरी कोई जरूरत नहीं'।

यह स्थिति समझने में संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी को देर नहीं लगी। उन्होंने उपस्थित उस समुदाय को शान्त कराया 'गो माता की जय' के नारे लगवाये और स्वयं दौड़कर गुरुजी को पकड़ा, यह आश्वासन देकर कि अब भारतमाता और गो माता की जय के ही नारे लगेंगे—किसी व्यक्ति के नहीं, उन्हें मंच की ओर ले गये।

ऐसे ध्येय समर्पित निस्पृह जीवन के सम्बन्ध में कुछ लिखने में भी भय लगता है कि कहीं स्वर्ग में भी उनकी आत्मा को अपनी प्रशंसा सुनकर व्यथा न पहुँचे। यही कारण है कि आज उनके कोटि-कोटि अनुयायी चुप हैं, आँसू तक नहीं बहा पा रहे—क्योंकि वे यह अक्सर कहा करते थे कि सेवा जैसे महान् कार्य में लगे कार्यकर्त्ता के पास रोने के लिए समय है ही कहाँ? यदि मौत के समय कार्य से फुरसत मिली तो अपनी गलतियों पर जी भर कर रो लेंगे और अगले जन्म में उनकी पुनरावृत्ति न करने का संकल्प करते हुए अपनी काया शान्त हो जाने देंगे। (*भानुप्रताप शुक्ल,* दिल्ली)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गुरुजी के साथ मैंने चुपके से चित्र खिचवाया

३१ दिसम्बर १९७० को लखनऊ प्रवास के समय महानगर के लगभग ३०० प्रतिष्ठित नागरिकों की सभा में अपने उद्‌बोधन के पश्चात् पूज्य गुरुजी आगामी प्रवास पर जाने के लिए सभास्थल के बाहर निकले। उनके साथ में मा. भिड़ेजी, मा. जय गोपालजी तथा मा. रूपानी जी थे। हम सब की इच्छा थी कि गुरुजी का हम लोगों के साथ एक छायाचित्र अपने घर परिवार में स्मृति चिह्न के रूप में रहे और हम लोग यह भी जानते थे कि गुरुजी अपने प्रसिद्धि पराङ्मुख प्रकृति के नाते कोई ऐसा चित्र उतारने की अनुमति नहीं देंगे। अत: हम लोगों की योजनानुसार श्री के.के. बख्शी नामक छायाकार ने झाड़ियों के पीछे से हम लोगों का चित्र उतार लिया। उक्त चित्र जब-जब मैं देखता हूँ तो सौम्य देवतुल्य उनका मुख मण्डल मेरे समक्ष साकार रूप में प्रकट होकर संघ कार्य में आजीवन लगे रहने की प्रेरणा देता है।

—*सुन्दर लाल सोनी,* लखनऊ

जब स्वयंसेवक का कैमरा हाथ से छूट गया

यह घटना गाँधी हत्या-काण्ड के बाद की जब संघ पर से प्रतिबन्ध हट गया और गुरुजी का देश व्यापी प्रवास होने लगा। उसी निमित्त **गोरखपुर** में सार्वजनिक कार्यक्रम टाउनहाल, गाँधी मैदान में था। स्वयंसेवकों के लिए गणवेश अनिवार्य था। मुझे पू. सरसंघचालक की गाड़ी आने पर सीटी बजाकर उनके आने की सूचना देने का दायित्व दिया गया था। हमारे बगल में एक स्वयंसेक्क कैमरा लेकर खड़ा था कि गुरुजी के आते ही हम चित्र ले लेंगे परन्तु सीटी बजते ही दक्ष की सूचना हुई। उक्त स्वयंसेवक कैमरा लेकर अपने कार्य में लगा था, उसे देखते ही श्री गुरुजी ने कहा—देखो! दक्ष हो गया है। इस वाक्य को वे उच्च स्वर में बोले। बोलते ही कैमरा स्वयंसेवक के हाथ से गिर गया। आज्ञापालन कैसे करना चाहिये, वे इन छोटी-छोटी बातों का कितना ध्यान रखते थे? (*जगदीश प्रसाद गुप्त,* गोरखपुर)

कार्यकर्ता को कार्य तो करना चाहिए परन्तु.....

सन् १९६१ की बात है। उन दिनों तिब्बत स्थित चीन के विमान हमारी सीमा में कुछ दूर तक घुस आते थे और फिर लौट जाते थे।

इस पर लोकसभा में कई सदस्यों ने चिन्ता प्रकट की थीं। उत्तर में रक्षामंत्री श्री कृष्णामेनन ने कहा था, 'सरकार को जानकारी है कि चीनी विमान हमारी सीमा में आ जाते हैं परन्तु वे इतनी अधिक ऊँचाई पर उड़ते हैं कि वहाँ तक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे विमान नहीं पहुँच सकते। इसलिए हम कुछ करने में असमर्थ हैं। वे विमान ७५ हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ते हैं'।

यह सरासर गलत बात थी।

रक्षामंत्री के गलत वक्तव्य कोपढ़कर मुझे लगा कि इससे देशवासियों में अपनी वायुसेना की क्षमता के विषय में गलत सन्देश जायेगा। अतः मैंने वास्तविक स्थिति का वर्णन करने वाला एक लेख अंग्रेजी साप्ताहिक 'Organiser' में छपने को भेजा, जिसका शीर्षक था— We can and must shoot down every intruding plane (अर्थात् हम घुस पैठ करने वाले हर विमान को गिरा सकते हैं और हमें गिराना चाहिए)। लेख के अन्त में मेरा नाम तो छपा ही, घर का पता भी छप गया।

इन्हीं दिनों पूज्य गुरुजी का रेलगाड़ी द्वारा **झाँसी** से गुजरना हुआ। वे नागपुर से दिल्ली जा रहे थे। स्टेशन पर हम लोग दर्शनार्थ गये थे। उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, 'तुम्हारा लेख पढ़ा। ठीक है। लेख के साथ तुम्हारा नाम छपना ठीक है। लेकिन तुमने अपने घर का पता भी छपवा दिया। यह ठीक नहीं है'।

मैंने निवेदन किया कि मैंने अपना पता सम्पादक को भेजा था, लेख के साथ छापने के लिए नहीं। सम्पादक मण्डल के किसी सदस्य की असावधानी से वह छप गया।

इस पर गुरुजी ने कहा, 'कार्यकर्त्ता को कार्य तो करना चाहिए परन्तु जब तक आवश्यक न हो तब तक अपना विस्तृत परिचय और पता आदि नहीं छपाना चाहिए'।

गुरुजी का ध्यान कितनी छोटी-छोटी बातों की ओर जाता है, यह देखकर मैं चकित था। (*परशुराम गोस्वामी,* झाँसी)

❖

अटूट आत्मविश्वास

हिन्दू राष्ट्र एक स्थापित सत्य

मैं **इलाहाबाद** विश्वविद्यालय में एल.एल.बी. अन्तिम वर्ष का छात्र था। मेरे निवास पर आजमगढ़ के एस.के.पी. के प्रधानाचार्य श्री सकलदीप सिंह आये

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थे और मुझे साथ लेकर प्रो. प्रकाशचन्द्र गुप्त, अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय से मिलने गये। गुप्त जी प्रगतिशील आलोचक और साम्यवादी चिन्तक थे। मेरा परिचय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ता के रूप में उनसे कराया गया। उन्होंने कहा, 'मैं तो संघ की विचारधारा को नहीं मानता पर उसकी एक बात का कायल हूँ, वह है सिद्धान्त की दृढ़ता'। आगे कहा, 'सन् १९४९ में प्रतिबन्ध उठने पर गोलवलकर जी कम्पनी बाग में आये थे। मैं उन्हें सुनने गया था। अभूतपूर्व जन समूह एकत्रित था। उन्होंने अपने हिन्दू राष्ट्र के सिद्धान्त की घोषणा बड़ी दृढ़ता से वहाँ की। अभी गत वर्ष सन् १९५१ में उनका व्याख्यान एंग्लो बंगाली स्कूल के मैदान में हुआ। दो वर्ष बाद वही सिद्धान्त, वही दृढ़ता और अपने सिद्धान्त की सफलता का वही आत्मविश्वास उनकी वाणी में था। उनके सिद्धान्त से सहमत न होते हुए भी मैं उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता, सिद्धान्त निष्ठा और अखण्ड आत्मविश्वास से बहुत प्रभावित हूँ।

—डॉ. कन्हैया सिंह, आर्यमगढ़

आत्मविश्वास

सन् १९७२ में पू. गुरुजी को आभास हो गया था कि अब शरीर अधिक दिन नहीं टिकेगी। उन्होंने मुम्बई के पास थाणे में स्वामी आठवले जी के आश्रम में देशभर के विभाग स्तरीय कार्यकर्त्ताओं का एक चिन्तन-शिविर आयोजित कराया था। वे चार दिन मेरे जीवन के श्रेष्ठतम दिन थे। उस कार्यक्रम में केवल प्रश्नोत्तर होते थे। विषय थे—परिवर्तन, कार्य पद्धति परिवर्तन/संशोधन आदि की आवश्यकता।

एक दिन केरल के एक कार्यकर्ता ने प्रश्न किया—'गुरुजी! संग कार्य कब तक पूरा होगा'? इसके उत्तर में गुरुजी ने कहा, 'इंग्लैण्ड में डॉ. जानसन एक प्रसिद्ध लेखक हुए हैं। उनकी एक मण्डली थी जिसे 'जानसेनियन सर्किल' बोलते थे। उनमें ओलिवर गोल्डस्मिथ भी एक था। एक दिन उस मण्डली का वन-बिहार का कार्यक्रम था। चाँदनी रात में भोज था। मछली बनी थी। भोजन के पूर्व गोल्डस्मिथ ने कहा कि खाने के पहले आप लोग मेरे एक प्रश्न का उत्तर दें। प्रश्न था कि कितनी मछलियाँ एक-दूसरे से जोड़ी जायँ कि चाँद तक पहुँच जाये। जब किसी ने उत्तर नहीं दिया तो डॉ. जानसन ने कहा कि सब लोग हार मानते हैं अब तुम्हीं उत्तर दे दो। गोल्डस्मिथ ने कहा, Even one is sufficient if it is Sufficciently long 'गुरुजी ने इस किस्से को सुनाते हुए कहा कि इस प्रकार एक दिन में भी संघ पूर्ण हो सकता है, यदि आज देश के सभी स्वयंसेवक मनसा-वाचा-कर्मणा यह निश्चय कर लें कि हमें संघ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य को पूर्ण करके ही दम लेना है'। इस प्रकार प्रश्नों का समाधान अत्यन्त रोचक, मनोवैज्ञानिक और आत्मविश्वास जगाने वाले ढंग से वे करते थे।

—डॉ. कन्हैया सिंह, आर्यमगढ़

❖

अद्‌भुत भविष्यदृष्टा

भारत माँ चैतन्यमयी माँ

भारत माँ पूजनीय गुरुजी के लिए चैतन्यमयी माँ के रूप में नित्य हृदय में स्थित थी। उस पर हो रही और होने वाली आपदा उनसे छिपी नहीं रह सकती थी। उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति उन्हें होती थी। जिस समय देश में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' के नारे लग रहे थे, उन्होंने चकित करने वाले रहस्य का उद्‌घाटन किया कि चीन ने अक्साईचिन और नेफा (वर्तमान अरुणाचल) की हजारों वर्ग मील भूमि पर कब्जा और नियंत्रण कर लिया है।

पहली बार भारत को यह समाचार गुरुजी से ही मिला। बड़े आत्मविश्वास के साथ स्थान-स्थान पर अपने सार्वजनिक उद्‌बोधन में कहा, 'हम जिसे अपना भाई कहकर भारतवासियों को गुमराह कर रहे हैं, वह भारत का शत्रु है, आक्रमणकारी है'। उसके पश्चात् ही सरकार की आँखें खुली और संसद में नेहरू जी जवाब नही दे सके, यह स्थिति हुई। (*अशोक सिंहल,* दिल्ली)

श्यामा बाबू! आप कश्मीर न जायें

सन् १९५३ में हम नारा लगाते थे 'जहाँ हुए बलिदान मुखर्जी, वह कश्मीर हमारा है'। किन्तु जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर के लिए अलग प्रधान, अलग विधान, अलग निशान का नारा देकर भारत से अलग करने का अभियान छेड़ दिया। उसके विरुद्ध भारतीय जनसंघ ने भारत की प्रभुसत्ता और अखण्डता की रक्षा के लिए आन्दोलन छेड़ दिया और जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी को कश्मीर में सत्याग्रह हेतु भेजा।

उनके जाने से पूर्व ही पू. श्री गुरुजी ने एक पत्र श्यामा बाबू को लिखा कि आप कश्मीर न जायें, यदि आप गये तो आप लौट नहीं सकेंगे। दुर्भाग्यवश वह पत्र भी वसन्त राव ओक (दिल्ली प्रान्त प्रचारक) के पास ही रह गया और उन्होंने यह सोचकर नहीं दिया कि इससे आन्दोलन फीका हो जायेगा किन्तु

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
श्री गुरुजी ने जो भविष्यवाणी की थी वह सत्य निकली और श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी का बलिदान रोका नहीं जा सका। (*अशोक सिंहल,* दिल्ली)

शास्त्री जी को रूस नहीं जाना चाहिये

सन् १९६५ में पाकिस्तान के साथ युद्ध में पाकिस्तान को मुँहकी खानी पड़ी। रूस ने दोनों देशों के प्रमुखों को बुलाकर सन्धि कराने का कार्य हाथ में लिया। भारत के प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री, सन्धि हेतु जाने को तैयार हुए। उसी समय पूज्य श्री गुरुजी का एक सार्वजनिक कार्यक्रम **कानपुर** में था। उन्होंने अपने भाषण में स्पष्ट कहा कि लालबहादुर शास्त्री को रूस नहीं जाना चाहिये।

इसी आशय का पत्र भी गुरुजी ने शास्त्री जी को भेजवाया था। उस पत्र में इस बात का स्पष्ट उल्लेख था कि यदि वे जाते हैं तो वापस नहीं लौट सकेंगे। उनकी भविष्यवाणी सत्य हुई। शास्त्री जी का मृत शरीर ही भारत लौटा और शास्त्री जी के स्थान पर इन्दिरा गाँधी को प्रधानमन्त्री के पद पर बिठाने की रूस सरकार की योजना सफल हो गयी। (*अशोक सिंहल,* दिल्ली)

❖

मातृशक्ति का सम्मान

माता की आज्ञा नहीं टाल सकता

सन् १९७३ में दीनदयाल विद्यालय **कानपुर** में हनुमान जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर पू. गुरुजी कानपुर आये तथा मेरे आवास पर ठहरे। कार्यक्रम हेतु प्रस्थान करने के पूर्व पिता (मा. बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह, प्रान्त संघचालक, उ.प्र.) माता जी तथा संघ के कुछ अधिकारियों के साथ परिवार के सदस्य हम सब जलपान पर बैठे अनौपचारिक वार्ता कर रहे थे। सब का विचार आया कि उक्त कार्यक्रम हेतु गुरुजी ही यजमान के रूप में पूजन आदि करें। इस पर उन्होंने कहा कि पूजन तथा कर्मकाण्ड किसी गृहस्थ को करना चाहिये। अतः मेरे माता-पिता ही मुख्य यजमान के रूप में कर्मकाण्ड व पूजन करें। मेरी माता जी ने वार्ता में हस्तक्षेप करते हुए कहा, 'लाखों स्वयंसेवकों का परिवार क्या आपका परिवार नहीं है? इस विशाल संघ परिवार के मुखिया के नाते आपको पूजन पर बैठना ही चाहिये'। गुरुजी ने कहा कि सबकी बात तो मैं टाल सकता हूँ किन्तु माता की अवज्ञा नहीं कर सकता और प्राण-प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में वे पूरे समय बैठे।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह उल्लेखनीय है कि दीनदयाल विद्यालय कानपुर के निर्माण एवं व्यवस्था में माताजी की पूरी भूमिका थी। वह दीनदयाल जी को अपना भाई मानती थी तथा उनकी हत्या से बहुत दुःखी थी। उक्त विद्यालय के निर्माण में लगा पूरा धन उन्होंने ही दिया। यहाँ तक कि इस निमित्त आभूषण भी बेच डाले। ऐसी देवी तुल्य माताजी का सभी सम्मान करते थे।

—*वीरेन्द्र पराक्रमादित्य,* कानपुर

मातृत्व की प्रतीक नारी

पूज्य गुरुजी सन् १९६८ में मेरे आवास पर ठहरे थे। मैं ला. मार्टिन स्कूल लखनऊ में आयोजित कार्यकर्त्ता बैठक में भाग ले रहा था। गुरुजी के साथ डॉ. थत्ते, एकनाथ जी रानाडे आदि अधिकारी मेरे आवास पर ठहरे थे। प्रातः ४ बजे उठकर मेरी धर्मपत्नी ने मक्खन निकाला तथा गुरुजी को डबलरोटी में लगाकर खाने को दिया। गुरुजी चाय के साथ डबलरोटी खा रहे थे कि डॉ. थत्ते ने देख लिया तथा गुरुजी से पूछा, 'गुरुजी! आप क्या कर रहे हैं? यह पथ्य आपके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है'। गुरुजी ने कहा कि, 'मुझे कुछ नहीं होगा। तुम्हें क्या पता कि गृहलक्ष्मी ने मक्खन कितने परिश्रम, स्नेह तथा आत्मीयता से निकाले है। (*सुन्दरलाल सोनी,* लखनऊ)

जब गुरुजी ने बुढ़िया की गठरी स्वयं उठाई

सन् १९६७ के मकर संक्रान्ति उत्सव पर पू. गुरुजी **हरिद्वार** आये। हम स्वयंसेवक भारी संख्या में उन्हें लेने के लिए रेलवे स्टेशन गये थे। पर्व का अवसर होने के कारण स्टेशन पर यात्रियों की भीड़ बहुत अधिक थी। अतएव हम स्वयंसेवकों ने दोनों ओर मानव शृंखला बनाकर बीच से गुरुजी को लेकर प्लेटफार्म के बाहर आ रहे थे कि एक बुढ़िया सिर पर गठरी लिए हमारी मानव शृंखला तोड़ती हुई गुरुजी के सामने आ गयी। कुछ स्वयंसेवक उसे हटाने के लिए बढ़े ही थे कि गुरुजी ने उसकी गठरी स्वयं लेकर उसे अपने साथ प्लेटफार्म के बाहर पहुँचाया। एक संन्यासी जानकर उसके प्रति कृतज्ञताज्ञापन व चरण स्पर्श का अवसर दिये बिना ही गुरुजी ने उसे प्रणाम कर विदा किया।

ऐसी थी अपने पूज्य सरसंघचालक की संवेदनशीलता तथा संस्कार देने की अभिनव पद्धति। (*गंगाशरण मददगार,* हरिद्वार)

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धावनत का भावार्चन

जब गुरुजी मंच से एकाएक नीचे उतरे

फरवरी १९४४ में **काशी** हिन्दू विश्वविद्यालय में पू. गुरुजी का सार्वजनिक कार्यक्रम था। उक्त कार्यक्रम में मीरजापुर से हम लोग भी गये थे एवं कार्यक्रम में काशी के विद्वान् एवं प्रतिष्ठित नर-नारी भी भारी संख्या में उपस्थित थे। श्री गुरुजी ने अपने उद्‌बोधन के आरम्भ में कहा, 'सौभाग्यवश इस सभा में कुछ ऐसे श्रेष्ठ एवं पूज्य बन्धु बैठे हैं, जिन्होंने मुझे पढ़ाया है, मेरे प्रेरणास्रोत रहे। व्यवस्था के अन्तर्गत मुझे ऊँचे मंच पर बैठाया गया है। अतः ऐसे सभी अपने गुरुजनों से इस धृष्टता के लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ'। फिर आरम्भ हुआ उनका धारा प्रवाह भाषण। अभी मात्र १५ मिनट ही बीते होंगे कि गुरुजी अपना भाषण बीच में रोक मंच की सीढ़ियों से शीघ्रता से उतरे, सभा में कुर्सी पर बैठे महामना मालवीय जी का चरण स्पर्श कर व आशीर्वाद प्राप्त कर वापस आ गये तथा जहाँ अपना भाषण बन्द किया था, उसके आगे बिना तारतम्य बिगड़े बोलना आरम्भ कर दिया। इस घटनाक्रम के क्षण, सभा में उपस्थित लोगों में कौतुहल व आश्चर्य के रहे किन्तु घटना के पश्चात् सभी ने मन ही मन गुरुजी की विद्वता एवं विनम्रता की भूमि-भूरि प्रशंसा की।

—*शम्भूनाथ दीक्षित,* मीरजापुर

सन्तों का परस्पर अभिवादन

२२ सितम्बर सन् १९५६ को पू. गुरुजी के ५१ वर्ष पूर्ण होने पर उनका अभिनन्दन समारोह **कानपुर** के फूलबाग में आयोजित था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पूज्य प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी करने वाले थे। संयोगवश ब्रह्मचारी जी के आने में विलम्ब हुआ। निर्धारित समय से ध्वजारोहण व ध्वज प्रणाम के पश्चात् सबको उपविश की आज्ञा हुई तथा गुरुजी मंच पर विराजमान हो गये। एकल गीत के पश्चात् ज्यों ही गुरुजी बोलने के लिए खड़े हुए कि ब्रह्मचारी जी की कार सभास्थल के निकट आती दिखाई दी। गुरुजी शीघ्रता से मंच से उतरे तथा ब्रह्मचारी जी के कार से बाहर आते ही उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। प्रति उत्तर में ब्रह्मचारी जी ने भी ऐसा ही किया। फिर दोनों सन्तों ने एक-दूसरे का आलिंगन कर कुशलक्षेम का आदान-प्रदान किया और मंच की ओर चल पड़े। गुरुजी के उद्‌बोधन एवं ब्रह्मचारी जी के आशीर्वचन के पश्चात् प्रार्थना व ध्वजावतरण होकर कार्यक्रम पूर्ण हुआ किन्तु दोनों सन्तों का परस्पर मिलन एवं अभिवादन का दृश्य आज भी हम स्वयंसेवकों के सम्मुख सजीव है।

—*भरतलाल बरनवाल,* मीरजापुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गुरुजी ने स्वामी शिवचरन महन्थ के चरण स्पर्श किये

वर्ष १९५४ में सम्पूर्ण उ.प्र. के गट्नायक स्तर तथा ऊपर के कार्यकर्त्ताओं का तीन दिवसीय शिविर लखनऊ महानगर के चौक क्षेत्र में आयोजित हुआ। पू. श्री गुरुजी शिविर में उपस्थित थे। शिविर स्थल के निकट एक अत्यन्त श्रद्धास्पद मान्यता प्राप्त बड़ी काली जी का मन्दिर है जिसके महन्त ८० वर्षीय पू. स्वामी शिरचरन गिरि ने गुरुजी को माँ काली के मन्दिर में पधारने हेतु निवेदन किया। गुरुजी माँ भगवती के पावन दर्शन हेतु इस शर्त पर जाने को तैयार हुए कि मन्दिर परिसर में भीड़ एकट्ठी न की जाय। निर्धारित समय पर गुरुजी, डॉ. आबा जी तथा अन्य अधिकारी मन्दिर पहुँचे। द्वार पर स्वामी, मैं तथा कुछ स्वयंसेवक गुरुजी के स्वागतार्थ उपस्थित थे। गुरुजी के पहुँचते ही स्वामी जी उनका चरण स्पर्श करने आगे बढ़े ही थे कि गुरुजी ने अत्यन्त शीघ्रता के साथ आगे बढ़कर स्वामी जी के चरण स्पर्श कर लिये और अपने आलिंगन पाश में जकड़ लिया। स्वामी जी भाव विह्वल होकर अश्रुपात करने लगे।

—डॉ. गौरीनाथ रस्तोगी, लखनऊ

गुरु द्वारा दिया गया कमण्डल बहुमूल्य

सन् १९३८ में डॉ. रोडे, जो हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे, के निवास स्थान पर पूज्य डॉक्टर हेडगेवार जी के साथ पूज्य श्री गुरुजी का दर्शन प्राप्त करने का अवसर आया। गुरुजी अपना कमण्डल सदैव अपने साथ रखते थे और केवल मुझे दिया करते थे। एक बार गुरुजी का कमण्डल जो बहुत जीर्ण-शीर्ण हो गया था, मुझे मरम्मत के लिए दिया।

डॉ. थत्ते ने, जो गुरुजी के साथ बराबर रहा करते थे, मुझसे पूछा, 'कमण्डल ठीक हो जायेगा न'? मैंने कहा 'हाँ'। गुरुजी ने मुझसे कहा, 'जानते हो यह क्या है'? मैंने कहा, 'हाँ, यह दरियायी नारियल है। उसे काटकर कमण्डल बनाये जाते हैं'। मैंने आगे कहा, 'यद्यपि इसकी बहुत साधारण कीमत है, किन्तु जिसके हाथ में है, उसकी बहुत कीमत है'। गुरुजी ने जोर का ठहाका लगाया और कमण्डल ठीक करने के लिए दिया। मैंने कहा, 'यह सड़ गया है'। तब गुरुजी ने कहा, 'टूट तो नहीं जायेगा। इसका एक-एक चूर सुरक्षित रखना'। मैंने कमण्डल ले लिया और सड़े भाग को निकालकर ठीक कराया। गुरुजी के निदेशानुसार सड़े भाग को मैंने गंगा जी में प्रवाहित कर दिया। रुई, राल एवं तेल आपस में कूटकर उसका लेपन करते थे तब कमण्डल चिकना हो जाता था। गुरुजी को कमण्डल दिया जिसे देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए और कहा, 'अच्छा बनाया है'।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह उल्लेखनीय है कि उक्त कमण्डल गुरुजी को उनके गुरु स्वामी अखण्डानन्द ने दिया था जिसे उन्होंने जीवनभर अपने साथ रखा। आज भी वह कमण्डल हेडगेवार भवन, नागपुर में दर्शनार्थ उपलब्ध है।

—ठाकुर गुरुजन सिंह, प्रयाग

❖

स्वयंसेवकत्व की अभिव्यक्ति

टाई : ईसामसीह के प्रति श्रद्धा का प्रतीक

जनवरी १९६३ में पू. गुरुजी का प्रवास **आर्यमगढ़** में हुआ। मेरे घर पर उनके निवास की व्यवस्था संघ के अधिकारियों ने किया। अपराह्न गुरुजी के साथ नगर के संभ्रान्त डॉक्टर, प्राध्यापक, वकील तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति चाय पर आये। गुरुजी सबके साथ देश व समाज की दशा और संघ की भूमिका पर अनौपचारिक चर्चा कर रहे थे। उक्त कार्यक्रम में डी.ए.वी. महाविद्यालय के प्राचार्य सूट पहन कर टाई बाँधकर आये थे। गुरुजी ने विनोद की मुद्रा में उनसे पूछा, 'प्राचार्य जी! आपने टाई बाँध रखी है, कृपया बतावें कि टाई लगाने का प्रचलन क्यों हुआ'? कोई उत्तर न आने पर, गुरुजी ने कहा, 'महात्मा ईसा की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयाइयों ने उनकी स्मृति एवं श्रद्धा में टाई लगाना आरम्भ किया जिससे लोग जानें कि वह ईसाई मत को मानने वाले हैं और उसमें श्रद्धा रखते हैं। क्या आप लोग भी यही मान कर टाई का प्रयोग करते हैं'? प्राचार्य महोदय ने कहा, 'नहीं। मैं इसे फैशन समझकर प्रयोग करता हूँ'। पुनः गुरुजी ने कहा 'हम हिन्दू है, इसका गर्व होना चाहिए। हिन्दुत्व हमारी भाषा, वेशभूषा एवं व्यवहार में सदैव प्रकट होना चाहिए'। प्राचार्य जी ने तुरन्त टाई उतार दी और भविष्य में टाई न पहनने का संकल्प लिया। हम लोगों ने देखा कि प्राचार्य जी ने जीवनभर इस संकल्प का पालन किया।

—लालबहादुर सिंह, आर्यमगढ़

Short Cut will Cut you Short

सन् १९६१ की घटना है। **सारनाथ (वाराणसी)** में उत्तर प्रदेश के प्रचारकों की बैठक में वृत्त देते समय तत्कालीन हरदोई जिला प्रचारक जितेन्द्र सिंह जी खड़े हुए। कार्यवृत्त सुनने के पश्चात पूजनीय गुरुजी ने उनसे पूछ लिया कि अमुक योजना कैसे सफल हुई? उत्तर आया कि Short cut से। गुरुजी तुरन्त ही अत्यन्त गम्भीर हो उठे और यह कहते हुए कि Short cut will

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
cut you short वार्ता समाप्त कर दी। सन्नाटा व्याप्त हो गया लेकिन गुरुजी की यह टिप्पणी भविष्य के लिए संदेश छोड़ गयी, मार्गदर्शन दे गयी।

संगठन और राष्ट्र कार्य अल्प समय का नहीं, Short cut method नहीं अपनाना चाहिए, उसमें अनेक खतरे हैं। आज की संगठनात्मक परिस्थितियों में उक्त टिप्पणी कितनी सार्थक और समीचीन है, इसकी अनुभूति हम सभी को होनी चाहिए। —*डॉ. विजय बहादुर सिंह,* बलिया

हम सब स्वयंसेवक हैं

मैं **आगरा** महानगर की एक शाखा का मुख्य शिक्षक था। पू. गुरुजी की बैठक हेतु सन् १९४२ में ग्वालियर गया। उक्त बैठक में मुख्य शिक्षक तथा ऊपर के दायित्व वाले कार्यकर्त्ता अपेक्षित थे। अपने अधिकारियों ने इस बैठक हेतु कुछ ऐसे सक्रिय स्वयंसेवकों को भी बुलाया था जिन्हें भविष्य में दायित्व देना था। बैठक के आरम्भ में गुरुजी ने परिचय के क्रम में कहा, 'जो स्वयंसेवक बैठक में आये हैं, वे अपने स्थान पर खड़े हो जायें'। सभी दायित्वविहीन स्वयंसेवक दक्ष में खड़े हो गये। उनकी गिनती करने के पश्चात् उन्हें उपविश की आज्ञा देकर गुरुजी ने कहा कि जो लोग बैठे थे, वे लोग अब खड़े हो जायँ। इस आज्ञा पर हम सब दायित्व वाले कार्यकर्त्ता खड़े हो गये। हमारी संख्या दायित्वविहीन स्वयंसेवकों से कई गुना थी। यह संख्या गिनने के पश्चात् गुरुजी ने अट्टाहास करते हुए कहा, 'बसा! बसा! मुझे तो कहा गया था कि यह स्वयंसेवकों की बैठक है किन्तु इसमें तो अधिक संख्या उनकी है जो अपने को स्वयंसेवक नहीं मानते'। गुरुजी के उक्त कथन से हम लोगों को अपनी गलती का बोध हुआ तथा यह समझ में आ गया कि हम सब पहले स्वयंसेवक हैं, तत्पश्चात् मुख्य शिक्षक अथवा कार्यवाह आदि दायित्वधारी कार्यकर्त्ता।

—*कपिलदेव लाल श्रीवास्तव,* काशी

जब गुरुजी ने शिक्षार्थी का भीगा बिस्तर उठाया

मैं **वाराणसी** दयानन्द कॉलेज में जून सन् १९४५ में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग कर रहा था। पूजनीय गुरुजी के विषय में अधिकारियों द्वारा बताया जाता कि वे रात्रि में केवल ३-४ घण्टे सोते हैं। वे वर्ग में आकर सभी शिक्षार्थियों से मिलकर वर्ग के विषय में उसकी प्रतिक्रिया पूछते हैं। बीमार शिक्षार्थियों का वे विशेष ध्यान रखते, चिकित्सालय में जाकर रात्रि में वे स्वयं सेवासुश्रुषा करते, अपने हाथ से सिर दबाते। वर्ग में रात्रि में मैदान में ही सभी शिक्षार्थी बिस्तर लगा कर सोते थे। एक दिन रात्रि में वर्षा होने लगी। संयोगवश

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उस दिन गुरुजी वर्ग में उपस्थित थे। सभी शिक्षार्थी अपना बिस्तर उठाकर कक्ष में जाकर सो गये किन्तु एक किशोर स्वयंसेवक जो दुबला-पतला था और उसका बिस्तर भी कुछ भारी था, खड़ा ही रहा। गुरुजी, जो उस समय बरामदे में टहल रहे थे, उस किशोर स्वयंसेवक के पास के पास पहुँचे और उसका बिस्तर उठाकर कक्ष में पहुँचा दिया। उसके भीगे कपड़े बदलवाकर चिकित्सालय के एक बिस्तर पर सुला दिया। दूसरे दिन चिकित्सालय में उस शिक्षार्थी से परिचय प्राप्त कर उसका कुशलक्षेम पूछा और हँसकर गुरुजी ने कहा कि वर्ग में ऐसा ही बिस्तर लांना चाहिये जिसे उठाकर कुछ दूर भाग सको।

—*बजरंग लाल गुप्त*, सण्डीला

जब गुरुजी रात्रि भर जागकर बैठक में समय पर पहुँचे

सन् १९४५ का नवम्बर मास। पूजनीय गुरुजी के प्रान्त व्यापी प्रवास में **लखीमपुर** का कार्यक्रम था। तत्पश्चात् था लखनऊ महानगर का कार्यक्रम। विभाग प्रचारक के नाते मैं तथा प्रान्त प्रचारक के नाते भाऊराव देवरस प्रवास में साथ थे। लखीमपुर के विभाग संघचालक मा. श्याम नारायण जी ने कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात् रात्रि में ११ बजे लखनऊ जाने के लिए कार की व्यवस्था कर दी। कारण हम लोगों को अगले दिन लखनऊ में आयोजित प्रातः ८ बजे की कार्यकर्त्ता बैठक के पूर्व पहुँचना था।

रात्रि में लगभग दो-ढाई बजे कार रुक गयी। चालक ने बताया पेट्रोल समाप्त हो गया है। मार्ग में लगे मील के पत्थर से ज्ञात हुआ कि लखनऊ अभी २४-२५ मील दूर है, किन्तु भाऊराव देवरस ने कहा कि यहाँ से इटौंजा रेलवे स्टेशन केवल ४-५ मील दूर है। कार चालक के साथ हम तीनों—गुरुजी, भाऊराव तथा मैं कार को ढकेलते हुए आगे बढ़े। कुछ समय पश्चात् भाऊराव ने गुरुजी को कार ढकेलने से मना किया और कहा कि इटौंजा स्टेशन तक कार को ढकेलेंगे। स्टेशन से लखनऊ के लिए कोई न कोई रेलगाड़ी मिल जायेगी, उससे लखनऊ पहुँचकर मैं कार के लिए पेट्रोल ले आऊँगा। तब तक वे गुरुजी के साथ इटौंजा स्टेशन के बाहर रुके रहेंगे।

अति प्रातः साढ़े तीन बजे मैंने देखा कि इटौंजा स्टेशन पर लखनऊ जाने के लिए एक मालगाड़ी तैयार खड़ी है। गार्ड से वार्ता कर मैं मालगड़ी से लखनऊ पहुँचा। वहाँ से राजा बाजार यहियागंज के श्री घनश्याम जी के घर गया। उन्हीं के घर गुरुजी के आवास और बैठक की व्यवस्था थी। मुझसे सारी जानकारी मिलते ही श्री घनश्याम दास ने अपनी कार निकाली। मार्ग में पम्प से डब्बे में आवश्यक पेट्रोल लिया तथा हम लोग इटौंजा पहुँचे, जहाँ गुरुजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तथा भाऊराव मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे। बन्द हुई कार में पेट्रोल डाला गया और हम लोग दोनों कारों के साथ लखनऊ पहुँचे।

लखनऊ के कार्यकर्त्तागण बैठक स्थान पर आ गये थे। गुरुजी ने सबका उत्साहवर्द्धन करते हुए बैठक में मार्गदर्शन किया। कार्यकर्त्ताओं को पता ही नहीं चला कि गुरुजी रातभर जागते हुए कई मील पैदल चलकर बैठक में कैसे पहुँचे!

—अनन्त रामचन्द्र गोखले, लखनऊ

तुम्हारी शाखा में Irregularly Regular स्वयंसेवक अधिक है

कानपुर महानगर के मुख्य शिक्षक स्तर के कार्यकर्त्ताओं की बैठक प्रान्त संघचालक मा. बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह के आवास पर आयोजित थी। पू. श्री गुरुजी प्रत्येक मुख्य शिक्षक से शाखा पर ध्वज लगते समय व प्रार्थना के समय, नियमित ठीक समय से आने वाले स्वयंसेवकों की संख्या पूछ रहे थे। एक मुख्य शिक्षक से उन्होंने तरुण व बाल स्वयंसेवकों की अलग-अलग दैनिक उपस्थिति तथा शाखा की औसत उपस्थिति की जानकारी ली। मुख्य शिक्षक जब आँकड़े प्रस्तुत कर रहा था तो गुरुजी आँखें बन्द किये उसकी बातें सुन रहे थे। उसका वृत्त समाप्त होते ही गुरुजी ने आँखें खोली और बड़ी जोर से हँसते हुए कहा, 'देखो! पकड़े गये ना। तरुण व बाल स्वयंसेवकों की संख्या का औसत तथा शाखा की संख्या के औसत में बड़ा अन्तर है। बाद में जाकर हिसाब करना'। हम सब लोग आश्चर्यचकित थे, 'वे शाखा का वृत्त कितने ध्यान से सुनते और संगणक की भाँति गणना करके समझ जाते कि वृत्त ठीक है अथवा अनुमान के आधार पर दिया जा रहा है। इसी बैठक में नियमित व अनियमित स्वयंसेवकों के विवरण को सुनते समय उन्होंने कहा कि तुम्हारी शाखा में Irregularly regular स्वयंसेवक अधिक है। अच्छी शाखा में नियमित व समय से सभी स्वयंसेवक उपस्थित हों और पूरे समय शाखा पर रहें, इसका सहज रूप में उनका आग्रह रहता था। *—डॉ. ज्ञानचन्द्र अग्रवाल,* कानपुर

हमें अवगुणों का नहीं केवल गुणों का अनुकरण करना चाहिए

यह घटना सन् १९५१ के संघ शिक्षा वर्ग नागपुर की है। इस वर्ष नागपुर में वर्ष भर बारी-बारी से प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष के वर्ग चले। नील सिटी हाईस्कूल के विशाल कक्ष में बौद्धिक कार्यक्रम हुआ करता था। जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से लगभग १० फीट की दूरी पर मंच था। पू. श्री गुरुजी आँखें बन्द किये बैठे थे और मा. अप्पा जी जोशी का बौद्धिक चल रहा था। मेरे पीछे बैठा एक स्वयंसेवक बार-बार सोते हुए मेरे ऊपर गिरता था। बगल के एक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वयंसेवक ने जब उसे सोने से मना किया तो उसने कहा, 'गुरुजी भी तो सो रहे हैं'। यह बात उस समय मैं नहीं सुन सका था।

कार्यक्रम समाप्त होने पर गुरुजी स्वयंसेवकों की भीड़ में गये और उस स्वयंसेवक को अलग से जाकर उन्होंने उससे कुछ वार्ता किया। उस स्वयंसेवक ने स्वीकार किया कि वह बीच-बीच में सो रहा था।

रात्रि कार्यक्रम में उस दिन गुरुजी आ गये और उन्होंने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा, 'आज बौद्धिक के समय ऐसी घटना घटी जिसने मुझे बहुत दुःखी किया। मा. अप्पा जी जोशी का बौद्धिक चल रहा था और मैं आँखें बन्द किये बैठा था। बौद्धिक के समय एक शिक्षार्थी ऊँघ रहा था। जब उसके बगल के स्वयंसेवक ने उसको रोका तो उसने कहा, 'क्या मैं ही सो रहा हूँ? गुरुजी भी तो सो रहे हैं'। यद्यपि वह स्वयंसेवक मेरे ही ठीक पीछे बैठा ऊँघ रहा था और उसने क्या कहा, मैं नहीं सुन सका किन्तु गुरुजी के अतिसंवेदनशील मस्तिष्क में यह बात पहुँच गयी। गुरुजी ने अपने बौद्धिक में आगे कहा, 'यदि स्वयंसेवक अपने आगे खड़े हुए स्वयंसेवकों के अवगुणों का अनुसरण करेगा तो अपने संगठन का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। यह बात भिन्न है कि मैं उस समय सो नहीं रहा था किन्तु क्या मुझसे अनुकरण करने के लिए अब यही रह गया है'। पुनः अत्यन्त मार्मिक शब्दों में अपनी वेदना व्यक्त करतेहुए हुए कहा, 'यदि ऐसा दृश्य वास्तव में उपस्थित हो तो वह दुर्लक्ष्य करने योग्य एवं त्याज्य है। हमें अवगुणों का नहीं केवल गुणों का अनुसरण करना चाहिए'।

—*रामकृपाल मिश्र,* प्रयाग

मेरा सारथी कहाँ है?

झाँसी विभाग के स्वयंसेवकों का शीत शिविर झाँसी में लगा हुआ था। श्री कृष्णदास जी विभाग प्रचारक थे। परम पूजनीय श्री गुरुजी, श्री प्रयाग नारायण साह के निवास पर ठहरे थे। आवास से शिविर स्थल तक ले जाने एवं वापस लाने का कार्य मुझे दिया गया था। मैं कार द्वारा दिन में दो-तीन बार गुरुजी को शिविर स्थल को ले जाता एवं आवास पर वापस लाता था। प्रभात के कार्यक्रम के बाद गुरुजी को लेकर मैं साह जी के आवास पर पहुँचा। गुरुजी कमरे में चले गये। मैं बाहर बैठ गया। वहाँ पर कुछ वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के साथ गुरुजी का चायपान स्वल्पाहार का कार्यक्रम था।

गुरुजी ने एक कार्यकर्त्ता को भेजकर मुझे अन्दर यह कहकर बुलाया, 'मेरा सारथी कहाँ है? उसको अन्दर ले आओ'। मैं गुरुजी के साथ चायपान एवं स्वल्पाहार में सम्मिलित हो गया। हृदय में अपार आनन्द की अनुभूति हुई। गुरुजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
छोटे से छोटे कार्यकर्त्ता का भी कितना ध्यान रखते हैं, यह इस प्रसंग से प्रकट होता है। उनके इस आत्मीयतापूर्ण व्यवहार ने मुझे सदा-सदा के लिए संघ से जोड़ लिया और मैं अधिकाधिक समय संघ कार्य के लिए देने लगा।

—मा. लक्ष्मण गोविन्द हर्षे, जालौन

विलम्ब से कार्यक्रम में पहुँचने पर सार्वजनिक क्षमायाचना

प्रान्त के प्रवास में १९ सितम्बर सन् १९६० को **बस्ती** में पू. गुरुजी का स्वयंसेवक और जनता के मध्य कटेश्वर पार्क में कार्यक्रम था। गोरखपुर में रात्रि बिताकर प्रातः बस्ती जाने की बात थी। बस्ती के जिला संघचालक मा. माधो बाबू के घर जलपान था और उसी के बाद कार्यक्रम में जाना था परन्तु रास्ते में ही गोरखपुर में पीपे का पुल होने के कारण देर हो गयी। घड़ी देखकर यह तय हुआ कि जलपान में न जाकर सीधे संघस्थान जाया जाय। तब भी ५ मिनट विलम्ब हो गया और गुरुजी ने अपने बौद्धिक के पहले सभी से सार्वजनिक क्षमायाचना की और देर का कोई कारण नहीं बताया। समय पालन का इतना ध्यान रखते थे गुरुजी। मैं भी उन्हीं के साथ दूसरी गाड़ी में पीछे-पीछे चल रहा था। इस नाते यह सभी दृश्य देखता रहा।

—जगदीश प्रसाद गुप्त, गोरखपुर

आप पत्रकार नहीं स्वयंसेवक हैं

हरगाँव महोली में मैं संघ का विस्तारक था। उन्हीं दिनों प.पू. श्री गुरुजी विभाग के कार्यकर्त्ता शिविर में आये। सार्वजनिक कार्यक्रम में स्वयंसेवकों का प्रदर्शन हो रहा था। श्री खण्डेलवाल नामक स्वयंसेवक, जो पूर्ण गणवेश में था, पंक्ति से बाहर निकल कर अपने कैमरा से गुरुजी तथा कार्यक्रम के चित्र उतार रहा था। गुरुजी का ध्यान उधर गया। प्रार्थना के बाद तुरन्त गुरुजी ने खण्डेलवाल को अपने पास बुलाया और उसका कैमरा ले लिया। उन्होंने पूछा कि आप स्वयंसेवक हैं या पत्रकार? पुनः उन्होंने कहा कि पूर्ण गणवेश में रहने वाले स्वयंसेवक का दायित्व पत्रकार से श्रेष्ठ है।

—परमात्मा शरण निगम, गोण्डा

जब गुरुजी ने कार्यकर्ता के पैर में पट्टी बाँधी

जनवरी १९६९ में अपने अखिल भारतीय प्रवास क्रम में पू. श्री गुरुजी **हरदोई** आये। तत्कालीन विभाग संघचालक माननीय सिद्ध गोपाल अग्निहोत्री के आवास पर ठहरे। जिला प्रचारक जितेन्द्र सिंह जी ने मुझे वहाँ की व्यवस्था में लगाया था। रामलीला मैदान में सार्वजनिक कार्यक्रम में जाने के लिए गुरुजी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तैयार थे। सिद्ध गोपाल जी तैयार हो रहे थे। उस समय गणवेश में पोंगली पट्टी थी। बार-बार प्रयास करने के बाद भी पण्डित जी की पट्टी बँध नहीं पा रही थी। मैं उनका सहयोग करने की सोच रहा था कि गुरुजी तत्काल पण्डित जी के पास आये और उनके पैरों की पट्टियों को ठीक से बाँध दिया। गुरुजी ने पण्डित जी से कहा कि चलिये कार्यक्रम का समय हो गया है। मैंने यह घटना देखी तो आश्चर्यचकित हो गया। मेरे लिए यह अकल्पनीय था।

उस समय मैं **हरदोई** संघ निवास पर रहता था। जब कभी सामूहिक चाय पी जाती थी तो सबसे छोटे होने के कारण चाय के प्याले उठाकर धोने के लिए मुझे ही कहा जाता था। मुझे इस बात पर बहुत क्रोध आता था। कभी-कभी मैं अपनी चाय शीघ्रता से पीकर उठ लेता था।

मैंने गुरुजी के उपरोक्त व्यवहार को देखा। गुरुजी, जो सम्पूर्ण देश और संघ का मार्गदर्शन करते हैं, व्यक्तिगत जीवन में इतने विनम्र। वहीं दूसरी ओर मुझ जैसा दसवीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र, संघ कार्यालय में आये आगुन्तकों की चाय का प्याला उठाने में अपमान अनुभव करता है।

उस छोटी सी घटना का मेरे जीवन पर एक मूक प्रभाव सहज दिखायी पड़ा। उसके बाद मैं इस प्रकार के प्रसंगों से बचने के स्थान पर सहजभाव से आगे बढ़कर वह सब स्वयं करने लगा। —*नरेन्द्र सिंह*, लखनऊ

भीतर की श्रद्धा अभिव्यक्त नहीं होती

पू. श्री गुरुजी जब सितम्बर, १९६८ में **बद्रीनाथ** यात्रा पर जा रहे थे, मैं भी उनके साथ कार में शिवानन्द आश्रम मुनि की रेती (ऋषिकेश) तक आया। यात्रा के दौरान चर्चा आयी कि ज्योतिर्मठ के पूज्य शंकराचार्य जी के स्वर्गवास होने के पश्चात् स्वामी शान्तानन्द जी को उत्तराधिकार सौंपा गया है। पूज्य प्रभुदत्त ब्रह्मचारी का इस पर मतभेद था। इसलिए उन्होंने वहाँ अपना व्यक्ति भी बैठा दिया। इस पर विवाद चला और मामला न्यायालय में चला गया। गुरुजी ने इस प्रकरण पर कहा, 'जिस समय मैं संघ में बिल्कुल नया था और आयु में छोटा भी, मुझसे वरिष्ठ और अनुभवी कार्यकर्त्ता थे लेकिन डॉक्टर जी ने मुझे यह दायित्व सौंपा। मुझमें कोई बड़ी योग्यता नहीं थी फिर भी वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं के सहयोग एवं विश्वास के कारण उत्तरदायित्व का निर्वहन करते-करते मैं इस योग्य हुआ कि मैं आज सफलतापूर्वक कार्य कर रहा हूँ'।

गुरुजी में अध्यात्मिक तेज था और उनका अध्ययन बहुत व्यापक था। उनके इन्हीं गुणों के कारण पू. डॉक्टर जी ने उनको सरसंघचालक पद के लिए

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपयुक्त समझा। यह उनकी अहंकार शून्यता ही थी जिसके कारण उनके मुख से उपर्युक्त विचार व्यक्त हुए। यह उद्धरण उन्होंने इसलिए दिया क्योंकि वे ज्योतिर्मठ के प्रसंग से चिन्तित थे। उनकी यात्रा के समय भारी भूस्खलन हुआ था। मार्ग बन्द हो जाने के कारण उन्हें कई दिनों बद्रीनाथ में रुकना पड़ा था। पू. प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने उन्हें श्रीमद्भागवत कथा सुनायी।

वास्तव में जैसे ही किसी कार्यकर्त्ता की नियुक्ति होती है तो पुराने लोगों को लगता है कि कोई नया व्यक्ति हमारे ऊपर थोप दिया गया है और उसकी आलोचना करने लगते हैं किन्तु संघ की सफलता का बहुत बड़ा श्रेय इस बात को जाता है कि जो पुराने व अनुभवी सहयोगी कार्यकर्त्ता हैं, वे सभी नये कार्यकर्त्ताओं को साथ लेकर चलते हैं, उनकी आलोचना नहीं करते। यही संघ की रीति नीति है। इसके कारण ही संघ चल रहा है।

गुरुजी के सान्निध्य में संघ शिक्षा वर्गों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके सान्निध्य में रहकर बहुत कुछ सीखा और उसका मेरे मन-मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव है। कैसे कहूँ, जो भीतर की श्रद्धा होती है, वह अभिव्यक्त नहीं होती।

—*डॉ. नित्यानन्द,* देहरादून

ऐसे कार्य करो

अप्रैल सन् १९६४ में पूज्य श्री गुरुजी का प्रवास **सहारनपुर** में हुआ। सायंकाल सार्वजनिक उद्बोधन के पश्चात् ज्यों ही गुरुजी मंच से नीचे उतरे, सरसंघचालक के पद पर होने के नाते एवं उनके व्यक्तित्व से आकर्षित होकर स्वयंसेवक एवं समाज बन्धु उनके चरण स्पर्श के लिए आगे बढ़े। उन्होंने शीघ्रता से अपने पैर पीछे हटाते हुए कहा, 'तुम लोग दूसरों के पैर क्यों छूते हो। कार्य ऐसे करो कि लोग तुम्हारे पैर छुयें। कार्यकर्त्ता संघ कार्य की नींव है। उसे यश या ख्याति की अपेक्षा नहीं होती, मान-सम्मान की भी चाह नहीं होती'।

—*सत्यप्रकाश मित्तल,* सहारनपुर

स्वयंसेवक के शुचितापूर्ण व्यवहार के लिए मार्गदर्शन

मैं व्यवसायी वर्ग से सम्बन्धित हूँ। व्यवसाय में कुछ ऐसा-वैसा भी करना पड़ता है, जिसको करने की इच्छा नहीं करती, लेकिन मजबूरी में करना पड़ता है। कभी-कभी मन करता है कि व्यवसाय छोड़ दिया जाये। इसी सोच विचार में एक बार पू. श्री गुरुजी से भेंट हुई। वार्ता करते-करते अपने मन की दुविधा उनके सामने रखी तथा उनसे मार्गदर्शन की अपेक्षा की। गुरुजी ने सोचते-सोचते उत्तर दिया जिसका आज तक पालन करते हुए सफलतापूर्वक व्यवसाय कर रहा हूँ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा, वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था में व्यवसाय करने में कठिनाईयाँ आती ही हैं, कई बार ऐसा वैसा व्यवहार भी करना पड़ता है व्यवसाय को बचाने के लिए, जो स्वयंसेवक से अपेक्षित नहीं होता है। ऐसे में जो अपने हाथ में है, उसको दृढ़तापूर्वक स्वयंसेवक के व्यवहार के अनुरूप शुचितापूर्वक करना। जो अपने हाथ में नहीं है, उसको भी कम से कम करना पड़े ऐसा सदैव प्रयास करना चाहिये'। —*गंगाशरण मददगार*, हरिद्वार

स्वयंसेवक के प्रति सम्भाव

मनोहर भूषण इण्टर कॉलेज **बरेली** में १९५४ में संघ शिक्षा वर्ग का आयोजन किया गया था। बौद्धिक पण्डाल में केवल मंच पर पंखा लगा हुआ था किन्तु स्वयंसेवकों के लिए एक भी पंखा नहीं था। यह दृश्य पू. गुरुजी की दृष्टि में आते ही वह पंखे से हटकर बौद्धिक वर्ग का शुभारम्भ करने लगे। अधिकारियों को ये समझते देर नहीं लगी कि स्वयंसेवकों के लिए पंखों की व्यवस्था न करने का अर्थ क्या होता है? दूसरे दिन शिक्षार्थियों के लिए भी पंखों की व्यवस्था होने पर ही गुरुजी पंखायुक्त मंच पर बैठे दिखाई पड़ रहे थे। —*राजेन्द्र कोहबाल*, बरेली

सामान्य स्वयंसेवक की चिन्ता

१९४७ में **काशी हिन्दू विश्वविद्यालय** शाखा का स्वयंसेवक था। एक दिन अकस्मात् अति प्रातः मुझको जगाया गया और एक पत्र लेकर तुरन्त पटना जाने को कहा गया। उस दिन पूज्य श्री गुरुजी पटना के निकट एक शीत-शिविर में थे। उनको एक आवश्यक पत्र मुझको पहुँचाना था। रेलगाड़ियों की अव्यवस्था के कारण मैं रात्रि के लगभग १० बजे शिविर में पहुँचा। पत्र पढ़कर गुरुजी ने पूछा, 'भोजन हुआ कि नहीं' मैंने उत्तर दिया कि दिनभर भोजन नहीं हुआ है किन्तु मुझे तुरन्त वापस जाना है अन्यथा मेरी रेलगाड़ी छूट जायेगी। तब उन्होंने अपनी व्यवस्था में लगे कार्यकर्त्ता को कहकर मुझको भोजन कराया तथा शिविर में जो मोटरगाड़ी उनके लिए थी, उससे मुझे रेलवे स्टेशन भिजवाया। ध्यान देने की बात है कि उन दिनों संघ आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न नहीं था और मुझ जैसे सामान्य स्वयंसेवक को मोटरगाड़ी में बैठने की कल्पना ही नहीं की जा सकती है किन्तु मैं भोजन भी कर सकूँ और गाड़ी भी पकड़ सकूँ, इसलिए गुरुजी ने मुझको अपनी व्यवस्था में लगी मोटरगाड़ी उपलब्ध करायी। यह उनका सामान्य स्वयंसेवक की चिन्ता करने का अद्भुत गुण था। —*विंग कमाण्डार बालकृष्ण जायसवाल*, उत्तरांचल

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुजी ने भटनागर जी की पीठ थपथपाई

पू. श्री गुरुजी एक बार प्रयाग जाते हुए कुछ समय के लिए छोटी बाजार रायबरेली निवासी जिला परिषद् के सचिव श्री चन्द्रमोहन लाल भटनागर के आग्रह पर उनके आवास पर ठहरे। उनके घर के आस-पास धोबियों के बहुत सारे मकान थे। भटनागर जी के घर से वापस जाते समय उन्हें देखकर गुरुजी ने साथ चल रहे डॉ. थत्ते से विनोद में कहा कि ये भटनागर साहब सामाजिक स्वच्छता के प्रति बड़े सतर्क हैं। इसलिए इन्होंने अपने घर के चारों ओर इन बन्धुओं को बसा रखा है। सामाजिक समता व समरसा स्थापित करने में भटनागर जी की पहल सराहनीय है। इतना कहकर उन्होंने ठहाका लगाते हुए भटनागर जी की पीठ थपथपाई। —*लक्ष्मीकान्त पाण्डेय,* रायबरेली

जब गुरुजी पैदल ही चल पड़े

१५ जनवरी सन् १९५५ को पू. गुरुजी साकेत आये। तत्कालीन जिला संघचालक मा. भगवती प्रसाद सिंह के आवास पर ठहरे थे। सायं ५ बजे सार्वजनिक उद्‌बोधन पू. गुरुजी का था। मध्याह्न भोजनोपरान्त अयोध्या दर्शन का कार्यक्रम बना। संघचालक जी की कार से गुरुजी तथा अन्य अधिकारी अयोध्या गये। लौटते समय कार बिगड़ गयी, उसकी मरम्मत में विलम्ब को देखकर गुरुजी पैदल ही साकेत की ओर चल पड़े। मार्ग में एक ताँगा मिल गया जिस पर बैठकर सब लोग कार्यक्रम पर समय से उपस्थित हो गये। ऐसा था गुरुजी का समय पालन का आग्रह। —*गोविन्द राम,* साकेत

❖

शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों का आग्रह

जब गुरुजी ने शिक्षार्थी से मितकाल करने को कहा

सन् १९६९ के वाराणसी संघ शिक्षा वर्ग में मैं द्वितीय वर्ष का शिक्षार्थी था। पूज्य श्री गुरुजी वर्ग में तीन दिन के प्रवास पर थे। उनकी गणशः बैठकें होती, जिसमें वे शिक्षार्थियों से शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों के विषय में प्रश्न पूछते। उत्तर से वे मूल्यांकन करते कि शिक्षार्थी कितना मन लगाकर कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं तथा कितना सीख रहे हैं। एक दिन मेरे गण की बैठक में एक शिक्षार्थी से गुरुजी ने पूछा कि मितकाल जानते हो। उसने हाँ में उत्तर दिया। पुनः गुरुजी ने कहा, 'मैं नया स्वयंसेवक हूँ, तुम्हारी शाखा पर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहली बार आधा हूँ मुझे मितकाल करना सिखाओ। शिक्षार्थी ने कहा, 'दक्ष'। गुरुजी ने कहा, 'दक्ष हो गया'। शिक्षार्थी—बायाँ पैर उठाओ। गुरुजी—हाँ! बायाँ पैर उठाया।

शिक्षार्थी—दायाँ पैर उठाओ। गुरुजी—अरे-अरे तू मुझ बूढ़े को गिराकर मार डालेगा। सभी लोग ठहाका मारकर हँस पड़े, किन्तु शिक्षार्थी को समझ में नहीं आया कि गुरुजी ने ऐसा क्यों कहा? गुरुजी ने शिक्षार्थी को पंक्ति से बाहर बुलाकर मितकाल करने को कहा। शिक्षार्थी ने अपना बायाँ पैर उठाया, उसे भूमि पर रखकर अपना दाहिना पैर उठाया और फिर उसे भूमि पर रखते हुए मितकाल विधिवत् करने लगा। तब गुरुजी ने उसे समझाया कि तुमने मुझे बायाँ पैर उठाने को कहकर बिना उसे भूमि रखने के लिए कहे दाहिना पैर उठाने का कहा। यदि मैं तुम्हारी बात मानता तो गिरता कि नहीं? शिक्षार्थी ने कहा—गिर जाते। उसकी इस बात पर गुरुजी सहित सब लोग हँसे और उसे अपनी भूल समझ में आ गयी। —*त्रिवेणीनाथ शुक्ल,* लखनऊ

सूर्य नमस्कार की सही स्थिति

सन् १९६५ में कान्यकुब्ज महाविद्यालय **लखनऊ** में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में प्रथम वर्ष के शिक्षार्थी के नाते मैंने भाग लिया। वर्ग में परम पूज्य श्री गुरुजी ने अपने प्रवास में गोरखपुर विभाग की बैठक ली। परिचय के साथ-साथ प्रत्येक स्वयंसेवक से गुरुजी ने शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे। मऊ के एक स्वयंसेवक अखिलेश से परिचय के पश्चात् गुरुजी ने पूछा कि वर्ग में तुम्हें कौन से कार्यक्रम अच्छे लगते हैं। उसने बताया कि शारीरिक और उसमें भी विशेषकर सूर्यनमस्कार। फिर गुरुजी ने पूछा कि सूर्यनमस्कार में कितनी स्थितियाँ होती हैं। उसने कहा—दस। गुरुजी ने कहा कि पाँचवी स्थिति का वर्णन करो। उसने कहा कि सीना और ललाट जमीन पर होता है। गुरुजी ने कहा कि करके दिखाओ। वह पंक्ति से बाहर आकर सूर्यनमस्कार करने लगा। अखिलेश ने पाँचवी स्थिति में ललाट और सीना जमीन से लगाया तो गुरुजी ने एक गण शिक्षक, जो बैठक में उपस्थित थे, से कहा कि इसका पैर उठाओ। ज्यों ही शिक्षक उसका पैर उठाने लगे तो अखिलेश जोर से बोला, पैर और घुटना भी जमीन पर रहेगा। बस क्या था गुरुजी के उन्मुक्त अट्टहास से सारा वायुमण्डल गूँज उठा। सारे स्वयंसेवक हँसने लगे। गुरुजी ने अखिलेश से कहा कि यह पहले ही क्यों नहीं बताया।

—*रामवदन सिंह,* बलिया

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना अपनी मन्त्र

दिसम्बर १९६६ में झाँसी महानगर में झाँसी विभाग के कार्यकर्त्ताओं का शिविर था जिसमें पूज्य गुरुजी ३ दिन रहे। उरई नगर की एक शाखा के मुख्य शिक्षक के रूप में उसमें भाग ले रहा था। कार्यकर्त्ताओं की बैठक में गुरुजी प्रश्नोत्तर के माध्यम से शाखा की संख्या-तरुण, बाल, शिशु, शाखा पर होने वाले शारीरिक एवं बौद्धिक कार्यक्रमों की जानकारी ले रहे थे। कुछ मुख्य शिक्षकों से उन्होंने संघ की प्रार्थना सस्वर सुनाने को कहा। दुर्भाग्यवश कोई कार्यकर्त्ता पूरी प्रार्थना शुद्ध-शुद्ध एवं योग्य स्वर-लय में सुना नहीं पाया। गुरुजी ने स्नेहपूर्वक कहा, 'देखो! तुम लोग संघ के दायित्वधारी कार्यकर्त्ता हो। अपनी प्रार्थना अपना मन्त्र है। किसी मन्त्र का योग्य प्रभाव तभी होता है जब उसका शुद्ध-शुद्ध स्मरण होना चाहिए। उसका स्वर व अर्थ भी जानना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है तो तुम लोगों के लिए गधे के ऊपर बोझ जैसा होगा'।

—महादेव दास, उरई

जब गुरुजी ने खड्ग सिद्ध करके दिखाया

सन् १९६० की बात है। मैं संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष के शिक्षण के लिए कानपुर गया था। प्रातःकाल संघ स्थान पर खड्ग का गण चल रहा था। संयोग से पूज्य गुरुजी हमारे गण का निरीक्षण करने सर्वाधिकारीजी के साथ आ गये और मेरे पास आकर बोले कि तुम्हारी सिद्ध की स्थिति ठीक नहीं है। इतना कहकर स्वयं धोती-कुर्ता पहने हुए ही मेरे हाथ से खड्ग लेकर सिद्ध की स्थिति बताया। मेरा हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था और अपूर्व आनन्द का अनुभव भी हो रहा था। मैंने उनके सामने सिद्ध की स्थिति ठीक की और तभी वे हँसते हुए आगे बढ़ गये।

—सत्यनारायण, देवरिया

उत्सव के प्रति आग्रह

सन् १९७३ में पश्चिमी उ.प्र. के कार्यकर्त्ताओं का तीन दिन का सम्मेलन बरेली आयोजित था जिसमें प.पू. गुरुजी पूरे समय रहे। अपनी अस्वस्थता के बावजूद श्री गुरुजी ने बौद्धिक दिया और बैठकें ली। जिला प्रचारकों की बैठक में यह वृत्त आया कि पर्वतीय जिलों में मकर संक्रान्ति का उत्सव बहुत कम स्थानों पर मनाया गया। इस पर गुरुजी ने कहा, 'वैसे तो हिन्दू समाज में बहुत सारे उत्सव मनाये जाते हैं किन्तु प.पू. डॉक्टर जी ने संघ के लिए केवल छह उत्सव मनाये जाने का प्राविधान किया। प्रत्येक उत्सव स्वयंसेवकों और हिन्दू समाज को कोई न कोई संस्कार एवं संदेश देता है। मकर संक्रान्ति का उत्सव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमें सक्रिय होकर राष्ट्रकार्य करने की प्रेरणा देता है साथ ही यह उत्सव सामाजिक समता एवं समरसता का संदेश भी देता है'।

अत: यह उत्सव अधिकाधिक स्थानों पर मनाया जाना चाहिये। भले ही उत्सव की संख्या कुछ कम हो। ऐसा आग्रह था गुरुजी का उत्सवों को मनाये जाने का। —*त्रिलोकचन्द्र गुप्त,* सहारनपुर

कार्यकर्त्ता सुधार की दृष्टि

१९७२ में ७ जनवरी—**झाँसी** में पूज्य श्री गुरुजी का प्रवास। बाँदा के जिला कार्यवाह श्रीकान्त जी वृत्त निवेदन के लिए खड़े हुए। गुरुजी ने पूछा 'तुम्हारी शाखाओं पर तेरह सूर्य नमस्कार होते हैं क्या'? उन्होंने उत्तर दिया तेरह सूर्य नमस्कार नहीं हो पाते। श्री गुरुजी ने पूछा हिन्दी भाषा में यह 'पातें' शब्द कहाँ से आ गया।

सब हँस पड़े। श्री गुरुजी हँसते हुए बोले—यह कहो कि तेरह सूर्यनमस्कार नहीं करते हैं। —*श्रीधर शास्त्री,* अयोध्या

जब गुरुजी ने शंख (घोषवादन) की रचना का दोष पकड़ा

सन् १९६५ में **मथुरा** में तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता शिविर में पू. श्री गुरुजी का प्रवास था। घोष वादन में रुचि व दक्षता के कारण शिविर में गणशिक्षक का दायित्व निभाते हुए ध्वजारोहण एवं ध्वजावतरण के समय में कभी वंशी तो कभी शंख बजाता था। समापन कार्यक्रम के दिन भी मैंने ध्वजारोहण व ध्वजावतरण के अवसर पर क्रमश: वंशी तथा शंख अत्यन्त आत्मविश्वास के साथ बजाया किन्तु ध्वजावतरण के अवसर पर शंख बजाते समय कुछ व्यवधान के कारण रचना दोष हो गया। गुरुजी को तुरन्त इसकी अनुभूति हो गयी। मैं भी अपनी गलती समझ रहा था।

कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् गुरुजी मंच से उतरकर सीधे मेरे पास आकर मेरे कन्धे पर हाथ रखा एवं बिना कुछ कहे मुसकराते हुए आगे चल पड़े। उनका स्नेहिल स्पर्श एवं मन्द मुस्कान बहुत अच्छा लगा, रोम-रोम पुलकित हो गया किन्तु इसी के साथ मन ही मन संकल्प किया कि भविष्य में कभी कोई त्रुटि नहीं होगी।

उक्त घटना के पश्चात् जब भी कार्यक्रमों में शंख बजाता हूँ तो हठात् गुरुजी का स्पर्श एवं मुस्कान मेरे मन व हृदय को आज भी आनन्दित करता है। —*डॉ. चन्द्रभान गुप्त,* मथुरा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब गुरुजी ने स्थलोडीन कराया

सन् १९७० में संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष के शिक्षार्थी के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा था। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी पू. श्री गुरुजी का प्रवास हुआ। प्रातःसंघ स्थान पर गणों में शारीरिक अभ्यास का अवलोकन गुरुजी कर रहे थे। हमारे गण में भी उनका आना हुआ। श्री राजेन्द्र कुमार बेदी जिला प्रचारक नैनीताल पद्विन्यास का अभ्यास करा रहे थे। पद्विन्यास का विषय मैं कुछ कम ही समझ पाता था। स्थलोडीन (वाम) उन्होंने करवाया। उस समय भी मैं भय के कारण ठीक से नहीं कर पाया किन्तु परन्तु दिन के बाद पद्विन्यास विषय सीखने में मेरी रुचि बढ़ गयी क्योंकि मुझे लगा कि पू. सरसंघचालक जी शारीरिक में भी कुछ पूछ सकते हैं। अतः स्वयंसेवक को सभी विषय अच्छी प्रकार से आना चाहिये। —*ज्ञानसिंह नेगी*, ऋषिकेश, देहरादून

जब गुरुजी ने आचार-पद्धति प्रश्नावली द्वारा समझाया

पूज्य गुरुजी की बैठकों में हँसी के ठहाके गूँजा करते थे। हँसी-हँसी में वे स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन कर जाते थे। उनकी बैठकों में स्वयंसेवकों को बड़ा सावधान होकर बोलना पड़ता था। थोड़ी भी असावधानी हुई कि पकड़े गये।

ऐसी ही एक बैठक में उन्होंने एक कार्यकर्त्ता से पूछा, 'शाखा पर क्या-क्या करते हो'?

स्वयंसेवक–अनेक कार्यक्रम करते हैं। गुरुजी–दण्ड? स्वयंसेवक–करते हैं। गुरुजी–गीत? स्वयंसेवक–करते हैं। गुरुजी–खेल? स्वयंसेवक–करते हैं। गुरुजी–और वातावरण? स्वयंसेवक–वह भी करते हैं। यह सुनकर सब लोग हँसने लगे। इसी बैठक में एक अन्य कार्यकर्त्ता से गुरुजी ने पूछा, 'शाखा पर प्रार्थना रोज करते हो'? उसने उत्तर दिया, 'जी हाँ! रोज करता हूँ'। गुरुजी ने पूछा–'ध्वज को प्रणाम करते हो'? उसने कहा, 'जी रोज करता हूँ'। फिर गुरुजी ने पूछा, 'मुख्य शिक्षक को प्रणाम'?

स्वयंसेवक बोला, 'वह भी रोज करता हूँ'? यह सुनकर सब हँस पड़े। उस स्वयंसेवक के ध्यान में यह बात नहीं आई कि मुख्य शिक्षक या कार्यवाह को प्रणाम वही स्वयंसेवक करता है जो शाखा पर देर से आता है। शाखा पर समय से यानी ध्वज लगते समय जो स्वयंसेवक उपस्थित रहते हैं, वे केवल ध्वज को प्रणाम करते हैं, मुख्य शिक्षक को नहीं'। मैं रोज मुख्य शिक्षक को प्रणाम करता हूँ' ऐसा कहने का अर्थ यह है कि मैं रोज शाखा में देर से आता हूँ। —*परशुराम गोस्वामी*, झाँसी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य के लिए प्रेरणा एवं उत्साह

वर्ष १९७२ की बात है। **वाराणसी** में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के प्रचारक, कार्यवाह एवं मा. संघचालकों (सम्भवत: जिला स्तर के) की बैठक थी। बैठक में पू. श्री गुरुजी का सान्निध्य एवं मार्गदर्शन पूरे समय मिला था। दोपहर भोजन से पूर्व की बैठक दायित्वानुसार थी। बैठक की समाप्ति पर सभी कार्यकर्त्ता बाहर आ रहे थे। मा. संघचालकों के बैठक स्थान के सामने ही अखाड़ा था। वहीं पर मुगदर आदि व्यायाम का सामान भी रखा था। बैठक समाप्ति पर बाहर आते समय एक संघचालक जी ने गुरुजी से कहा, 'गुरुजी! जब मैं युवा था तब मैं भी इसको घुमा लेता था'। वे इस वाक्य को पूरा कर पाते इससे पूर्व ही, गुरुजी ने कहा, 'कैसी बात करते हो? मेरे अंगों की चिकित्सकों ने २-३ बार शल्यक्रिया की है। फिर भी मैं इसे अब भी घुमा सकता हूँ'। सभी अचम्भित हो गये, कार्यकर्त्ताओं को कार्य के लिए प्रेरित करना उनका मुख्य उद्देश्य था।

—*हरिदत्त जोशी,* बाजपुर (ऊधमसिंह नगर)

❖

सब का मार्गदर्शन, सब का समाधान

जितने अच्छे विद्यार्थी, उतने अच्छे स्वयंसेवक

मैं १९५२ के प्रारम्भ से ही **कानपुर** निवासी श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी, जिला प्रचारक, उरई के सान्निध्य में आ गया और हृदय में तमाम जिज्ञासाओं को लिए संघ के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहा।

२६ जनवरी, १९५३ को पूज्य गुरुजी का प्रवास **कोंच** में हुआ। कार्यक्रम में अपार भीड़ पूज्य गुरुजी के दर्शनार्थ एवं भाषण सुनने पहुँची लेकिन उनके प्रवचन एवं कार्यक्रम की व्यवस्था देखकर हम लोगों के मन में संघ में अधिक सक्रिय होने की इच्छा जागृत हुई। सार्वजनिक कार्यक्रम के पश्चात् गुरुजी कुछ घण्टे पहाड़िया जी के आवास पर रुके। मैं एवं मेरा एक सहपाठी श्री उमाशंकर गुरुजी से मिलने वहाँ गये। परिचय के पश्चात् गुरुजी ने हम लोगों से पढ़ाई-लिखाई का हाल पूछा। फिर उन्होंने हम लोगों के कपोलों का स्पर्श कर अपनी मुस्कान बिखेरते हुए कहा, 'संघ में खूब कार्य करो लेकिन दृढ़ चित्त होकर अपनी पढ़ाई में भी डटे रहो। तुम जितने अच्छे विद्यार्थी होगे, उतने ही अच्छे स्वयंसेवक भी'।

उनके इन प्रेरणादायी शब्दों ने हम लोगों के जीवन में बहुत बड़ा मोड़ लाया और उनके शब्दों की सार्थकता एवं गम्भीरता को आज भी मैं अनुभव

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करता हूँ कि वे अपने को कुटिल राजनीति और सत्ता से दूर रखकर भारत को एक सुसंगठित एवं संस्कारक्षम राष्ट्र का रूप प्रदान करने का प्रयास आजीवन करते रहे।

—*सन्तराम पटौरिया,* कोंच, उरई

अन्तर्यामी गुरुजी

५ से ७ दिसम्बर सन् १९६९ तक **लखनऊ-कानपुर मार्ग** पर प्रान्त का प्रथम महाशिविर लगभग १५००० स्वयंसेवकों का लगा था। मैं नेकर पहनकर बाहर निकला। अगल-बगल की पटकुटियों में कौन-कौन कहाँ से आया है, यह जानने के लिए सबसे मिला। इस शिविर में अनेक पुराने कार्यकर्त्ता, जो वर्षों से निष्क्रिय थे, बड़ी संख्या में अनेक स्थानों से आये थे। सक्रिय कार्यकर्त्ता पुराने कार्यकर्ताओं को देखकर बड़ी उपेक्षा की वाणी बोल रहे थे। अनेक पटकुटियों में मुझे यह दोष दिखाई पड़ा। परम पूज्य श्री गुरुजी शिविर में आ चुके थे। मेरे मन में विचार उठा कि गुरुजी से मिलकर इस बात को उन्हें बताना आवश्यक है। मौके की मुझे तलाश थी किन्तु यह बात गुरुजी तक पहुँचाने की आवश्यकता ही नहीं रही। अपने प्रथम उद्‌बोधन में गुरुजी ने यही विषय रखा। उसमें उनका संकेत था, 'जो पुराने कार्यकर्त्ता आये हैं, अपने समय के यशस्वी कार्यकर्त्ता रहे हैं। उनका महत्त्व किसी भी माने में कम नहीं है'। इस सन्दर्भ में विष्णु भगवान द्वारा नारद जी को तेल भरा कटोरा लेकर पृथ्वी की परिक्रमा करने सम्बन्धी कथा तथा ईसा मसीह के तीन सर्वश्रेष्ठ भक्तों की कथा गुरुजी ने सुनायी। कहना न होगा कि इस उद्‌बोधन का बड़ा असर पड़ा और शिविर का वातावरण बदल गया।

जब भी गुरुजी का कोई कार्यक्रम आता, मैं जिज्ञासा वश अनेक शंकाओं का समाधान उनसे करूँगा, ऐसा विचार कर कार्यक्रमों में उपस्थित होता था किन्तु मेरा ही नहीं मेरे जैसे हजारों ऐसे जिज्ञासु रहे होंगे जिन्हें गुरुजी से शंका समाधान की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। हमारी शंकाओं का समाधान उनकी बैठकों या बौद्धिकों में अपने आप हो जाता था। गुरुजी ऐसे दिव्यदृष्टि वाले थे कि स्वयंसेवकों के मन की शंकाओं को समझकर, बिना पूछने का अवसर दिये ही समाधान कर देते थे। ऐसी दैवी सम्पदा से विभूषित नेतृत्व संघ को मिला यह पू. डॉक्टर जी की तपस्या का सम्भवतः सबसे बड़ा फल था।

—*धर्मराज,* गोरखपुर

तो क्या सारे देश में संघ कार्य बन्द कर दें

५ जनवरी सन् १९७२ में **प्रयाग** विभाग के कार्यकर्त्ता सम्मेलन के अवसर पर पू. श्री गुरुजी का प्रयाग नगर में शुभागमन हुआ (जो दुर्देव से

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनका अन्तिम प्रवास सिद्ध हुआ)। कार्यकर्ताओं की बैठक में वृत्त कथन के दौरान जब उन्हें एक जिले में संघ कार्य की आशानुकूल प्रगति दिखाई नहीं दी, तो उन्होंने इसका कारण जानना चाहा। जब अन्य कार्यकर्ता चुप्पी साध गये, तब वहाँ के एक प्रचारक द्वारा यह बताया गया कि उस जिले में इन्दिरा जी (प्रधानमन्त्री) का अधिक जोर है। इस कारण वहाँ काम करने में बहुत कठिनाई हो रही है। यहाँ तक तो स्थिति सामान्य रही किन्तु इसके बाद उनके मुख से एक दो वाक्य इस ढंग से निकल गये जिसका अभिप्राय कुछ ऐसा था कि उक्त कारण से ही जिले में अधिक कार्य करने का कोई फायदा नहीं है। यह सुनते ही गुरुजी से रहा नहीं गया और क्रोध व व्यथा मिश्रित वाणी में अत्यन्त शोक विह्वल होकर उन्होंने कहा, 'इन्दिरा जी का जोर तो देश भर में है, तो क्या सारे देश में ही संघ कार्य बन्द कर दिया जाये'? उस कार्यकर्ता विशेष के माध्यम से समस्त कार्यकर्ताओं को आवश्यक मार्गदर्शन मिल गया था। इसके बाद बैठक का वातावरण ही बदल गया। —*वीरेश्वर द्विवेदी,* दिल्ली

पू. गुरुजी की पैनी दृष्टि

कानपुर संघ शिक्षा वर्ग। श्री गुरुजी की उपस्थिति में ही पूर्ण गणवेष में ध्वज-प्रणाम हुआ। संचलन में स्वयंसेवक गणशः ठीक ढंग से व्यवस्थित चल रहे थे। प्रदेश भर के प्रचारक एवं अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के गण भी उसमें सम्मिलित थे। रात्रि का समय। भोजनादि के बाद अनौपचारिक भेंटवार्ता के लिए सभी कार्यकर्त्ता गुरुजी के सामने मैदान में बैठे थे। दिन के संचलन कार्यक्रम की बात छिड़ी तो गुरुजी ने प्रश्न किया—आप अधिकारियों के गण में ऐसा कौन था, जो बिना टोपी के था।

सैकड़ों स्वयंसेवकों के बीच किसी एक को बिना टोपी के गुरुजी ने देख लिया था। सभी स्वयंसेवकों में सन्नाटा छा गया और तभी एक कार्यकर्त्ता खड़े हो गये। गुरुजी–अरे! क्या आप ही बिना टोपी के थे? कार्यकर्ता–जी।

गुरुजी–आपकी टोपी क्या हुई? कार्यकर्ता–मेरे द्वारा वर्ग में लाये एक शिक्षार्थी को मैंने अपनी टोपी दे दी थी। श्री गुरुजी ने हँसते हुए कहा, 'अच्छा उसे रिश्वत देकर साथ लाये हो। इस ढंग से सुविधाएँ जुटाकर देने से स्वयंसेवक नहीं बनता'। —*हरिश्चन्द्र,* वाराणसी

मन्त्र नहीं, संजीवनी

घटना सन् १९५२-५३ की है। उन दिनों मैं **अलीगढ़** जिले का कार्य देख रहा था। संघ का कार्य पवित्र है, श्रेष्ठ है, इसमें अपना सम्पूर्ण जीवन

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लगा रहना चाहिये, यह इच्छा होने पर भी अपेक्षित सफलता न मिलने के कारण मेरे मन में निराशा घर करने लग गयी थी, आत्मविश्वास ढल रह था। इसका परिणाम कार्य पर भी हो रहा था। मैं इस गिरती स्थिति को सँभालने में अपने आपको असमर्थ अनुभव कर रहा था। उस वर्ष (१९५३) के कानपुर संघ शिक्षा वर्ग में अलीगढ़ जिले से एक भी शिक्षार्थी नहीं गया था। इसका भी मेरे मन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा था।

सन् १९५३ का अन्त या १९५४ का आरम्भ होगा। पू. श्री गुरुजी का प्रवास प्रदेश में चल रहा था। इसी सिलसिले में अलीगढ़ भी आये थे। रात्रि में स्थानीय आर्य समाज मन्दिर में कार्यकर्ताओं की बैठक थी। श्री गुरुजी के आने का समय भी हो रहा था। मैं व्यग्रतापूर्वक प्रवेश-द्वार के पास ही आँगन में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

गुरुजी के आँगन में प्रवेश करते ही मैं उनकी ओर बढ़ा, अनुगमन के लिये। पर वे तो सामने ही आकर खड़े हो गये, आँखें चौड़ाये मेरे आँखों में भेदन करते हुए। मेरी आँखें चौंधिया गयीं। मैं सामने न देख सका। गर्दन झुक गयी। कुछ कहेंगे, यह आशंका थी। शायद कुछ भूल हो गयी हो, ऐसा ही कुछ मैं सोच रहा था।

'क्यों रे? मैं सुना है कि तेरा दम उखड़ रहा है'। ये थे उनके शब्द, जो मुजे मर्माहत करते हुए मेरे कान में पड़े।

मेरी स्थिति 'काटो तो खून नहीं' की हो गयी। इन्हें कैसे मालूम हो गया? मैं यही सब सोचने लगा। मैं न 'हाँ' कह सका और न 'ना'। झूठ बोलने की हिम्मत नहीं और सच बोलकर स्वीकार करना और भी कठिन लगा। मैं कुछ बोल न सका, बस करुण अवस्था में सब सुनता जा रहा था।

गुरुजी ने कहा, 'सुनो, तुम अपने इष्ट देवता का जप करो, १०८ बार, ऊँचे स्वर से। मुश्किल से दो-तीन मिनट लगेंगे'।

और वे आगे बढ़ गये सभा कक्ष की ओर, जहाँ सब कार्यकर्त्ता उनकी प्रतीक्षा में थे। मैं भी बैठक में उनके पीछे-पीछे ही जा बैठा। बैठक में मैं यही सोचता रहा कि इतनी व्यस्तता में भी मुझ जैसे एक साधारण कार्यकर्त्ता की इतनी चिन्ता–'डूबने नहीं दूँगा'।

अपने अस्वस्थ और अस्थिर मन से ही प्रयास करता रहा, जैसा बन पड़ा। परिणाम भी सामने आने लगा। लड़खड़ाते पैरों में गति आने लगी। भगवान् से प्रार्थना भी यही रही है कि ध्येय मार्ग पर पग सतत आगे बढ़ते रहें, सतत् चलते रहें।

—*ओंकार भावे*, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वाधिकारी के आदेश का पालन किया जाय

सन् १९६५ की बात है। लखनऊ कान्यकुब्ज कॉलेज के संघ शिक्षा वर्ग में मेरे ऊपर सर्वाधिकारी का दायित्व था। परम पूजनीय गुरुजी वर्ग में आये थे। शिक्षार्थियों की एक बैठक में गुरुजी ने पूँछा कि कौन शिक्षार्थी है जिसको वर्ग में बहुत कष्ट का अनुभव हो रहा है। एक शिक्षार्थी जो १०वीं या १२वीं का विद्यार्थी था खड़ा होकर बोला कि उसे कष्ट हो रहा है। पूछने पर बताया कि उसके पूर्व वह संघ के किसी कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हुआ था। उसके पिताजी को शिक्षा वर्ग में आना था। वे दुकानदार हैं। शुल्क जमा कर चुके थे। शादी-विवाह के मौसम के कारण दुकान पर बिक्री ज्यादा थी। जिस पर वर्ग में भाग लेने नहीं आये और उसे भेज दिया। यह सुनकर गुरुजी ने रज्जू भैया से कहा कि इस बच्चे को बिस्तर वगैरह के साथ घर भेज दो। जब रज्जू भैया उस विद्यार्थी को घर भेजने के लिए गये तो वह जाने को तैयार नहीं हुआ और कहा, 'आप लोग जबरदस्ती वर्ग से निकाल देंगे तो मैं रास्ते में ट्रेन से कटकर आत्महत्या कर लूँगा परन्तु घर नहीं जाऊँगा'।

इस पर जब रज्जू भैया गुरुजी के पास पहुँचे तो उसके देखते ही गुरुजी ने कहा कि उस लड़के के बारे में पूछने आये हो तो मुझे तो कहना था कह दिया। तब रज्जू भैया ने आकर हम लोगों से बताया। उस पर रज्जू भैया के साथ भाऊराव, नानाजी देशमुख, तत्कालीन प्रान्त संघचालक मिश्र जी गुरुजी के पास पहुँचे। हम लोगों को देखते ही गुरुजी बोले, 'अच्छा आप लोग उस लड़के के बारे में आये हैं? तो शिक्षा वर्ग में मेरा आदेश नहीं चलता, सर्वाधिकारी का आदेश चलता है'। यह सुनकर मैंने कहा कि आपके आदेश के विरुद्ध कोई आदेश कैसे दे सकता हूँ। इस पर गुरुजी बोले कि अपने इतने कार्यकर्ताओं की मंशा के विरुद्ध हमारा आदेश महत्त्वहीन समझकर सर्वाधिकारी के ही आदेश का पालन किया जाय। —*राजेन्द्र किशोर शाही,* देवरिया

ओम शंकर! बम शंकर! तगड़े बनो

मैं झाँसी जिले में तहसील प्रचारक था और शरीर से दुर्बल था। जनवरी १९६७ के तीन दिवसीय शीत शिविर में पूजनीय श्री गुरुजी का आगमन हुआ। शिविर समाप्ति के पश्चात् सारी व्यवस्था समेटने में अधिक परिश्रम करना पड़ा। थकावट से चूर मैं किनारे की एक पटकुटी में जाकर सो गया। गुरुजी को आगे प्रवास पर जाना था। अतएव गाड़ी आने से कुछ समय पूर्व वे स्टेशन को प्रस्थान कर गये। उन्हें विदा करने अन्य कार्यकर्ताओं के साथ जिले के पाँच प्रचारक स्टेशन पहुँचे, मैं पटकुटी में सोया ही रह गया। गुरुजी ने पूछा, 'जिले में तो

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुल ६ प्रचारक हैं। क्यों पाँच ही आये? मेरे जिला प्रचारक दौड़ते हुए शिविर स्थल पर आये और मुझे जगाकर स्टेशन ले गये। मुझे देखकर गुरुजी ने कहा, 'ओम शंकर! बम शंकर! बहुत थक गये। तगड़े बनो। खूब काम करो'।

उसी समय एक वृद्ध स्वयंसेवक आ गये और उन्होंने गुरुजी के चरण स्पर्श करना चाहा। गुरुजी ने पैर पीछे हटाते हुए उन्हें ऐसा करने से मना किया और कहा कि मैं किसी से पैर नहीं छुआता, इससे आयु घटती है और आप तो पिता तुल्य हैं। मुझे आपका चरण स्पर्श करना चाहिए। उक्त स्वयंसेवक ने कहा कि मेरी आयु आपको लग जाय। गुरुजी ने हँसते हुए कहा, 'किन्तु बिना परिश्रम किये कुछ लेना पाप है'। इस पर वहाँ उपस्थित सब लोग गुरुजी के साथ अट्टहास कर उठे। *—ओम शंकर,* कानपुर

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्

कानपुर संघ शिक्षा वर्ग सन् १९६६ में मैं प्रथम वर्ष का शिक्षार्थी था। मेरी आयु उस समय १६ वर्ष थी, शरीर से दुबला-पतला था। शिक्षार्थियों की बैठक में गुरुजी ने मेरा परिचय पूछा तो मैंने अपना नाम वासुदेव तथा दायित्व मुख्य शिक्षक बताया। गुरुजी ने मुक्त अट्टहास करते हुए कहा, 'तुम तो सीकिया पहलवान हो। दण्ड कैसे सीखोगे तथा अपने स्थान पर जाकर स्वयंसेवकों को दण्ड के प्रयोग कैसे सिखाओगे'?

एक दिन संघ स्थान पर शारीरिक करते-करते मैं बेहोश होकर गिर गया तथा मुझे विश्राम करने हेतु चिकित्सालय में भेज दिया गया। उसी दिन सायं गुरुजी, डॉ. थत्ते एवं सर्वाधिकारी जी के साथ रोगियों का कुशलक्षेम जानने चिकित्सालय में आये। एक-एक शिक्षार्थी का हाल-चाल पूछते हुए मेरे बिस्तर के निकट आते ही हँसकर कहा, 'कहो सीकिया पहलवान! तुम्हें क्या हो गया'? जब मैंने सारा वृतान्त बताया तो उन्होंने कहा कि मैंने कल की बैठक में ही तुम्हें सचेत किया था। 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'। राष्ट्र कार्य करने के लिए स्वस्त मन के साथ-साथ स्वस्त शरीर भी चाहिये। अपने स्वास्थ्य की चिन्ता करो'। *—वासुदेव वासनानी,* कानपुर

पहाड़ों की ऊँचाई का अनुमान पेड़-पौधों व पशु-पक्षियों से

घटना सन् १९७० के दशक की है। मैं **उत्तराञ्चल** में एक जिला प्रचारक के रूप में कार्यरत था। पूजनीय श्री गुरुजी के उत्तराञ्चल प्रवासावधि में मैं कार में उनके साथ यात्रा कर रहा था। जब कार एक निश्चित ऊँचाई वाली सड़क पर चल रही थी तो उनकी दृष्टि उड़ते हुए पक्षियों के झुण्ड पर पड़ी। उन्होंने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा कि इस समय हम लोग समुद्रतल से इतनी ऊँचाई पर हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आगे चलकर सड़क पर लगे पट द्वारा गुरुजी के कथन की पुष्टि हुई। मैंने पूछा कि आपने पक्षियों को देखकर स्थान की समुद्रतल से ऊँचाई कैसे जान ली? गुरुजी ने हँसते हुए कहा, 'वाह! तुम नहीं जानते कि मैं प्राणि विज्ञान का विद्यार्थी रहा? जीव-जन्तु या वनस्पतियों के बारे में जो पढ़ा है उसके कुछ अंश आज भी स्मरण हैं। ये उड़ते हुए पक्षी समुद्रतल से पर्याप्त ऊँचाई पर ही पाये जाते हैं। पहाड़ों के वृक्ष भी ऊँचे तथा कम पत्तों वाले होते हैं। चीड़ के वृक्ष तो बहुत ऊँचाई वाले स्थान पर ही पाये जाते हैं'। गुरुजी ने तो ऊँचाई शुद्ध-शुद्ध फिट में बताया था किन्तु मुझे स्मरण नहीं। ऐसे बहुमुखी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे गुरुजी।

—*ज्योतिस्वरूप*, मेरठ

गाड़ी विलम्ब से छूटी

सन् १९४८ का संघ पर लगा प्रतिबन्ध समाप्त होने पर पू. गुरुजी का देशव्यापी प्रवास सन् १९४९ तथा १९५० में हुआ। गुरुजी दिल्ली में चलकर सहारनपुर होते हुए पंजाब प्रान्त के प्रवास पर जा रहे थे। ट्रेन सहारनपुर स्टेशन पर २०-२५ मिनट रुकती थी, अतएव वहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने योजना बनायी कि स्टेशन के निकट स्थित गाँधी पार्क में मंच बनाकर गुरुजी का संक्षिप्त उद्‌बोधन करा दिया जाये। गाड़ी रात्रि ११.३० बजे पहुँची। गाड़ी के प्लेटफार्म पर रुकते ही हजारों स्वयंसेवकों एवं जनता के अनुरोध पर गुरुजी तेज चाल से पार्क में पहुँचे तथा मंच से लगभग आधे घण्टे का उनका ओजस्वी एवं प्रेरणादयी उद्‌बोधन हुआ। कार्यक्रम में ट्रेन चालक तथा स्टेशन मास्टर भी उपस्थित थे। एकाएक गुरुजी ने घड़ी देखी व अपना उद्‌बोधन समाप्त कर ट्रेन की ओर चल पड़े। ट्रेन चालक एवं स्टेशन मास्टर की एकाग्रता टूटी। परिणामस्वरूप गाड़ी १०. मिनट विलम्ब से छूटी।

—*त्रिलोक चन्द्र गुप्त*, सहारनपुर

क्या स्वामी विवेकानन्द रुपये की गठरी लेकर पैदा हुए थे?

रामकृष्ण मिशन अद्वैत आश्रम, लक्सा-वाराणसी में स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन पर दिनांक १२ जनवरी सन् १९५६ को पूज्य गुरुजी का उद्‌बोधन था। उद्‌बोधन के पश्चात् सेवा आश्रम के सचिव संन्यासी गुरुजी को रामकृष्ण अस्पताल का निर्माणाधीन नवीन भवन दिखाने ले जा रहे थे। इस अवधि में वार्ता के क्रम में गुरुजी ने कन्याकुमारी में प्रस्तावित स्वामी विवेकानन्द शिला स्मारक की संक्षिप्त योजना-स्मृति मन्दिर, ध्यान केन्द्र, चिकित्सालय, पुस्तकालय आदि की चर्चा की। इस योजना को सुनकर सचिव महोदय ने जिज्ञासा प्रकट

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करते हुए कहा कि यह योजना बहुत विशाल एवं व्यय साध्य है, इस पर करोड़ों रुपये का व्यय आयेगा। इस धन की आप किस प्रकार से व्यवस्था करेंगे? इस बात पर गुरुजी ने हँसते हुए कहा, 'यह जो रामकृष्ण मिशन द्वारा देश-विदेश में सैकड़ों आश्रम, चिकित्सालय तथा विद्यालय बने हुए हैं। इसके लिए धन क्या स्वामी विवेकानन्द जी गठरी में बाँधकर पैदा हुए थे? जिस समाज के लिए ये सेवा कार्य किये जाते हैं, उसके निमित्त धन की चिन्ता एवं व्यवस्था समाज ही करता है'।

—*भूपेन्द्र मुखर्जी*, काशी

❖

व्यथित अन्तर

व्यवस्था ही करते रहेंगे

घटना सन् १९६५ की है। नैनीताल से मथुरादत्त जी अपने वायदे के अनुसार **अल्मोड़ा** अभिनन्दन कार्यक्रम के समय से पूर्व ही आ पहुँचे थे। अतः पू. श्री गुरुजी की आवास व्यवस्था उन पर छोड़कर हम लोग निश्चिन्त थे। रात्रि को गप-शप के समय सीमा पर सैनिक सद्धिता-असिद्धता की चर्चा चल पड़ी। उस समय एम.ए. कक्षा के अपने एक कार्यकर्त्ता ने प्रसंगानुसार बताया कि उसके बहनोई इसी युद्ध में पूर्वोत्तर मोर्चे पर मारे गये हैं। इतना सुनते ही गुरुजी गम्भीर हो गये। भीतर की व्यथा चेहरे पर झलकने ली। उसने आगे बताया, 'कूमायूँ रेजीमेंट की पूरी एक बटालियन मोर्चे पर काम आई है'। प्रत्येक देशवासी मेरा है, इस भाव से अनुप्राणित वे देव-पुरुष उद्विग्न हो उठे, अवरुद्ध कण्ठ से पूछा, 'कितने मारे गये होंगे'? उस तरुण ने कहा, 'ठीक संख्या तो कैसे पता लगे? पर कुमायूँ के ही ५०० तो होंगे'? सन् १९६२ के चीनी आक्रमण में सायं शाखा में आने वाले प्रायः प्रत्येक स्वयंसेवक का कोई न कोई सम्बन्धी युद्ध में मारा गया है, यह देखने में आता है। इस समाचार ने उनके अन्तर्मन को विदीर्ण कर दिया, 'अरे इतने लोग! और तुम्हारी बहिन की आयु क्या होगी'?

मथुरादत्त ने उनकी वेदना अनुभव करते हुए कहा, 'हम उसकी व्यवस्था करेंगे, अन्य भी सैनिकों के.....' कुछ क्रोध, कुछ तेजस्विता भरे स्वर में वे महामानव फूट पड़े, 'व्यवस्था ही करते रहेंगे' वे चुप थे, सभी चुप थे। गम्भीरता गहन हो रही थी। मथुरादत्त सोचने लगे मुझसे कोई गलत बात निकल गई क्या? जैसे कोई पिता अपने पुत्रों की मृत्यु के समाचार से विह्वल हो उठे। फिर कुछ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
क्षणों में मन को नियन्त्रित करके कहने लगे, हमारी ही भूमि पर कोई बलात् अधिकार कर लेता है और हमारे बन्धुओं को वहाँ से खदेड़ देता है। वे हमारे सगे सहोदर अपने ही देश में शरणार्थी कहलाते हैं, हम उनकी व्यवस्था करते हैं। दुनिया के अनेक छोटे-छोटे देशों में १००-१०० वर्षों से हिन्दू रह रहे हैं। उन्होंने अपने खून-पसीने से उन देशों को विकास की स्थिति तक पहुँचाया है। जब तब वहाँ की सरकारें उन्हें उखाड़ फेंकती हैं। वे हमारे भाई यहाँ आते हैं, हम उनकी व्यवस्था कर रहे हैं। (कुमायूँ के लोहाघाट और डीडीहाट नगरों में उन दिनों ५०० परिवार बर्मा से आकर रह रहे थे।) मथुरादत्त ने दूसरे दिन बताया कि गुरुजी उस दिन रात भर सोये नहीं थे। —*ज्योतिस्वरूप, मेरठ*

जब युगपुरुष की आँखें गीली हो गयी

महामनीषी पं. दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में **कानपुर** में प्रारम्भ किये जाने वाले विद्यालय का शिलान्यास सन् १९६९ में पू. श्री गुरुजी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक सार्वजनिक समारोह का भी आयोजन किया गया। गुरुजी द्वारा स्व. दीनदयाल जी के आदमकद तैल चित्र का माल्यार्पण, मा. अशोक जी सिंहल (कानपुर संभाग प्रचारक) के 'भारत के भाल पर कुमकुम के साथ लगा अक्षत असमय ही झर गया' नामक श्रद्धांजलि गीत से प्रारम्भ कार्यक्रम में एक विशेष गाम्भीर्य और पावित्र्य छा गया। इसके पश्चात् गुरुजी बोलने खड़े हुए। स्व. पं. दीनदयाल उपाध्याय की बहुमुखी प्रतिभा व महानता का वर्णन करते हुए प्रांजल हिन्दी में धारा प्रवाह भाषण बीच-बीच में मनोव्यथा की चट्टानों से टकराकर ऐसा लग रहा था, मानो एक पिता अपने पुत्र को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हो।

भाषण में उनका वह बहु उद्धृत वाक्य तो था ही कि देश में तो बहुत नाम कमा लिया था, किन्तु सारी दुनिया उसे जान पाती इसके पहले ही वह यहाँ से चला गया। उनके चेहरे पर सर्वाधिक चिन्ता और वाणी में सर्वाधिक व्यथा के भाव उस समय उभरे जब उन्होंने कहा, 'क्या ही अच्छा होता, यदि मैंने उसे राजनीतिक क्षेत्र में न भेजा होता'। वस्तुतः उस समय उनकी आँखें भी आर्द्र हो गयी थीं। पत्रकार दीर्घा में बैठे हम लोग इस दृश्य को अति निकट से देख सके थे। —*वीरेश्वर द्विवेदी, दिल्ली*

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूख और पाचनशक्ति बलवान रहते भोजन का त्याग ही संयम है

पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक ही संघ शिक्षा वर्ग १९६९ में वाराणसी सेंण्ट्रल हिन्दू स्कूल में लगा था। मैं वर्ग का सर्वाधिकारी था। प्राय: मध्याह्न भोजन पश्चात् गुरुजी दस पाँच मिनट खड़े-खड़े अनौपचारिक वार्ता करते। एक दिन भोजन के समय गुरुजी आसन पर बैठ गये थे, भोजन वितरण हो चुका था। अतिथियों की पंक्ति में सब्जी वितरक गुरुजी के लिए भिन्न सब्जी लाया। उस दिन सामान्य सब्जी में टमाटर पड़ गया था। गुरुजी टमाटर सम्भवत: नहीं लेते थे, इसलिए उनके लिए पृथक सब्जी परोसी जाने लगी। गुरुजी ने पूछा—मेरे लिए अलग सब्जी क्यों? उसने कारण बताया कि सबकी सब्जी में टमाटर पड़ गया है। गुरुजी ने उस सब्जी को लेने से मना कर दिया। जब स्वयंसेवक बार-बार सब्जी लेने के लिए आग्रह करने लगा तो गुरुजी ने क्षुब्ध होकर कहा, 'क्या चाहते हो? आज से मैं सब्जी खाना छोड़ दूँ। मना किया कि मुझे वह सब्जी नहीं चाहिए'। श्री गुरुजी ने सब्जी नहीं ली।

शाम को हम लोग संघ स्थान पर थे। गुरुजी का आगमन हो चुका था, रज्जू भैया भी साथ थे। रज्जू भैया ने कहा, 'गुरुजी! आप तो अत्यल्प भोजन लेते हैं, रात को भोजन तो करते ही नहीं, केवल दुग्ध लेते थे सो वह भी छोड़ दिया। अब सब्जी भी छोड़ देंगे तो शरीर का पोषण कैसे होगा, आपका शरीर भी अब आपका नहीं, राष्ट्र का है, इसलिए इसका संरक्षण तो करना पड़ेगा'। गुरुजी ने विद्यार्थी जीवन को याद करते हुए कहा, 'मेरी पाचन शक्ति इतनी थी कि मैं दो आदमी का भोजन कर सकता था। भोजन कर लेने के पश्चात् भी यदि किसी ने दुबारा फिर भरपेट भोजन करने का आग्रह किया तो भी कर सकता था। जब ऐसी तीव्र भूख थी तब तो मैंने रात्रि भोजन न करने का निर्णय किया। भूख और पाचन-शक्ति बलवान रहते भोजन का त्याग किया जाय, तो ही संयम कहा जायेगा। अन्यथा भूख यदि न हो तो विवशता में भोजन त्यागना न तो संयम हुआ और न त्याग'। —*राजेन्द्रकिशोर शाही*, देवरिया

तुमने तो आतिथ्य धर्म का पालन किया

सन् १९४५ जनवरी का प्रथम सप्ताह, विभागीय शीत शिविर बरेली में लगा था। श्री गुरुजी भोजन पर बैठे थे, इसी समय बरेली के एक स्थानीय एडवोकेट श्री राममूर्ति जी उनके सामने आये। वकील साहब के पास थाली में कुछ बड़े-बड़े गोले थे, तो रात की बची हुई रोटी को मसलकर चीनी और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
घी डालकर बनाये गये थे और मिष्ठान के रूप में भोजन करने वालों को वितरित किये जा रहे थे। गुरुजी के मना करते-करते वकील साहब ने एक लड्डू यह कहकर रख ही दिया कि गुरुजी खाइये बहुत अच्छा बना है। इसके बाद एक स्वयंसेवक उनकी थाली में इसी प्रकार दो हरी मिर्च रख गया। गुरुजी का नियम था कि वे कोई चीज थाली में छोड़ते नहीं थे। वे भोजन में दो पतली और छोटी-छोटी रोटियाँ लेते थे और बहुत थोड़ा सा चावल। रोटियाँ वे खा चुके थे, चावल खाना शेष था। बरेली के संघचालक मा. रामसनेही जी के बहुत आग्रह करने पर भी उन्होंने अपनी थाली से बासी रोटी का वह विशाल लड्डू हटाने नहीं दिया और सबके मना करने पर भी अपना नियम पूरा किया और वह विशाल लड्डू और मिर्च भगवान का प्रसाद समझकर ग्रहण कर लिये। परिणाम भी उसी के अनुसार हुआ। रात्रि को उन्हें ज्वर हो गया।

किसी प्रकार वकील साहब को पता चल गया। वे गुरुजी के कक्ष में द्वार पर खड़े होकर रोने लगे। गुरुजी को पता लगा, उन्होंने वकील साहब को अन्दर बुलाकर बड़े स्नेह से पास बिठाया और कहा, 'तुमने मुझे दुर्भाव से लड्डू नहीं खिलाया था, तुमने तो साधारण आतिथ्य धर्म का पालन किया था और मैंने अपने नियम का पालन किया। जो कुछ हुआ उसका दुःख मत करो, भगवान के ऊपर छोड़ दो, सुबह तक ठीक हो जाऊँगा। अब जाकर शान्त मन से चुपचाप सो जाओ'। पर वकील साहब को कहाँ नींद आती, वे रातभर जगते रहे और पश्चाताप करते रहे। ऐसा स्वयंसेवकों का गुरुजी के प्रति श्रद्धाभाव। क्या यह भक्त और भगवान के सम्बन्धों का स्मरण नहीं दिलाता।

—डॉ. शिवकुमार अस्थाना, लखनऊ

❖

विलक्षण व्यक्तित्व

माताजी ने कहा—लड़का नहीं रहा

सभी शंकाओं का समाधान परम पूज्य श्री गुरुजी का दर्शन ही था। सनातन धर्म इण्टरक कॉलेज **इटावा** में इण्टरमीडिएट का मैं छात्र था। शाखा कार्यवाह का दायित्व मेरे ऊपर था। संघ में मेरी सक्रियता देखकर मेरे मामाजी ने पत्र के द्वारा मेरी माताजी को अवगत कराया कि लड़का बरबाद हो रहा है। आकर सँभालो, मेरी जिम्मेदारी नहीं है। पत्र पाने के दूसरे दिन माता जी इटावा पहुँची। संयोग से उसके तीसरे दिन कानपुर में गुरुजी का सार्वजनिक उद्‌बोधन था जिसमें

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं माता जी को सादर आग्रह कर ले गया। वहाँ का सारा वातावरण माताजी ने देखा एवं गुरुजी का बौद्धिक सुना। बौद्धिक उनके कितना समझ में आया होगा मैं नहीं कह सकता किन्तु दर्शन मात्र से उनका समाधान हो गया। वापस आकर माताजी ने मामाजी को कहा कि लड़का सही स्थान पर है, उसका भविष्य क्या होगा यह तो मैं नहीं जानती परन्तु विश्वास के साथ इतना अवश्य कह सकती हूँ कि वह सही स्थान पर है इस कार्य के लिए इसे रोक नहीं पाऊँगी, भविष्य चाहे जो हो।

—*रामप्रकाश गुप्त,* गोण्डा

गुरुजी पारस पत्थर के समान

सन् १९६२ ई. में संघ शिक्षा वर्ग **इलाहाबाद** में सी.एम.पी. कॉलेज में लगा था। श्री गुरुजी का दिनांक ७ से ९ जून तक वर्ग में प्रवास था। मैं बौद्धिक विभाग देख रहा था। बौद्धिक विभाग की योजनानुसार गुरुजी के प्रवास अवधि में प्रयाग के प्रख्यात रंगकर्मी, साहित्यकार, कवि आदि गुरुजी से मिलने आते थे तथा वे संघ के राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अत्यधिक प्रभावित होकर जाते थे।

एक दिन श्रीमती महादेवी वर्मा भी गुरुजी के साथ चाय पर आयी थीं और उस दिन गुरुजी के बौद्धिक में भी रहीं। उनके इसी सान्निध्य का फल था कि वे उत्तर प्रदेश विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष के रूप में वर्षों कार्यरत रहीं। 'भारत' दैनिक के प्रबन्ध सम्पादक, महाकवि अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के पौत्र डॉ. मुकुन्द देव शर्मा, रज्जू भैया के आमंत्रण पर गुरुजी से मिले। उनके ऊपर भी गुरुजी से भेंट का ऐसा स्थायी प्रभाव पड़ा कि जब सन् १९७३ में गुरुजी कैंसर से विशेष रुग्ण हो गये थे तो उन्होंने 'भारत' के सम्पादकीय पृष्ठ पर वेणी माधव शर्मा के नाम से कई लेख लगातार लिखे जिसमें गुरुजी के व्यक्तित्व, गुणवत्ता, राष्ट्रनिष्ठा के वर्णन के साथ-साथ उन्होंने भारत सरकार को आगे आकर विश्व के किसी देश में गुरुजी का उत्तमोत्तम उपचार कराना चाहिये और उन्हें बचाने का प्रयास करना चाहिये।

गुरुजी पारस पत्थर के समान थे। उनके सम्पर्क में आने वाला हर व्यक्ति उनसे प्रभाव ग्रहण किये बिना नहीं रहता था।

—*डॉ. कन्हैया सिंह,* आर्यमगढ़

वे पाँच वर्ष

पूज्य श्री गुरुजी को क्रमशः १९६८ व १९७० झाँसी तथा १९७२ के संघ शिक्षा वर्ग जौनपुर में देखा। सायं मुख्य शिक्षक के नाते सन् १९६८ में विभाग की बैठक में मात्र परिचय हुआ। कक्षा ९वीं का छात्र था। संघ शिक्षा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वर्ग १९७२ **जौनपुर** में गुरुजी के साथ झाँसी विभाग के शिक्षार्थियों का परिचय कार्यक्रम चल रह था। मैं ग्रामीण क्षेत्र के एक नगर गुरसराय से था। परिचय देने जब खड़ा हुआ तो केवल नाम का उच्चारण ही कर पाया था कि गुरुजी ने, चार वर्ष पूर्व जो परिचय मैंने झाँसी में दिया था, उसे दायित्व स्थान तथा कक्षा सहित बताते हुए कहा, 'त्रिपाठी' लगाना क्यों छोड़ दिया? बड़े हो गये इसलिए! अच्छा संघ कार्य को कितना समय दोगे'। मैं भी बहुत समय देने का अर्थ जल्दी में समझा नहीं पाया चार-छह वर्ष कह दिया। उन्होंने कहा ४-६ वर्ष अर्थात् १० वर्ष। मुझे स्मरण आया कि कुछ गलत हो गया तो कहा नहीं 'पाँच वर्ष'। तभी से गुरुजी के सामने दिया वचन प्रति वर्ष उस परिचय स्थल व परिवेश सहित सामने ग्रीष्मावकाश में मानस पटल पर आता है। वर्ष १९८६ में तृतीय वर्ष कर आने पर मैंने प्रचारक के नाते समय दिया। गुरुजी के 'वह' पाँच वर्ष कितने बड़े वर्ष हैं, कब पूरे होंगे.....कहा नहीं जा सकता।

—राधेश्याम त्रिपाठी, गोरखपुर

गुरुजी एक महामानव

यह घटना सन् १९८० की है। **हरिद्वार** खण्ड के कार्यकर्त्ताओं की बैठक में एक कार्यक्रम करने का निर्णय हुआ। सबकी राय बनी कि कार्यक्रम में बौद्धिक के लिए समन्वय कुटीर के स्वामी सत्यमित्रानन्द जी को बुलाया जाये। उनका कार्यक्रम तय करने के लिए मैं समन्वय कुटीर गया। स्वामी जी संघ के कार्यक्रमों के लिए कभी मना नहीं करते थे किन्तु उस दिन उन्होंने अपनी व्यस्तता बताकर आने में असमर्थता जतायी। मैं उदास हो गया। बार-बार आग्रह करने के बाद उन्होंने बताया कि उन्हें उस दिन नागपुर रहना है। मैंने नागपुर जाने का कारण जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि वे वर्ष में एक रात्रि श्री गुरुजी के कमरे में निवास करते हैं। इससे उन्हें वर्ष भर कार्य करने की ऊर्जा मिल जाती है।

मैं यह सुनकर अवाक् रह गया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सन्त भी मात्र एक रात्रि गुरुजी के कक्ष में निवास से वर्ष-भर कार्य करने की ऊर्जा प्राप्त कर लेता है। गुरुजी के उदात्त जीवन का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है।

—धर्मराज, गोरखपुर

It is Never too Late

मैं वर्ष १९५९ के **कानपुर** संघ शिक्षा वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का निर्वहन कर रहा था। उस वर्ष वर्ग में पू. गुरुजी का प्रवास वर्ग के तीन सप्ताह बीत जाने पर हुआ। उनकी उपस्थिति से वर्ग में चुस्ती आ जाती थी। सभी शिक्षार्थी एवं गणशिक्षक पूरे मनोयोग से वर्ग की व्यवस्था बनाने में लग

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाते थे तथापि गुरुजी बैठकों में शिक्षार्थियों से प्रश्नोत्तर तथा संघ स्थान पर अपने भ्रमण द्वारा वस्तुस्थिति तो जान ही जाते थे। एक रात्रि गण-शिक्षकों तथा व्यवस्था के बन्धुओं की बैठक में गुरुजी ने बताया कि वर्ग के २२ दिन बीत जाने पर बहुत से शिक्षार्थियों की दक्ष, आरम, भुजदण्ड, क्रमिका सिद्ध आदि की स्थिति ठीक नहीं हो पायी है, प्रार्थना व प्रातः स्मरण का भी अभ्यास ठीक नहीं हो पाया है। यह सुनकर हम लोगों के चेहरे उतर गये और सब लोग सिर नीचा किये मौन बैठे रहे। गुरुजी ने स्थिति को भाँपते हुए कहा, "इसमें चिन्ता और निराशा की कोई बात नहीं। अभी वर्ग वे ७-८ दिन शेष हैं, सब लोग पूर्ण मनोयोग से लग जाओ, सब ठीक हो जायेगा। "It is never too late" फिर उन्होंने एक कथा सुनाई, "एक राजा एवं राज पुरोहित नौका विहार का आनन्द ले रहे थे कि राज पुरोहित ने राजा से कहा, सायंकाल उनका (राजा) शरीर शान्त हो जायेगा। राजा थोड़ा भी विचलित नहीं हुए व तपस्या एवं साधना में लीन हो गये। अन्त में राजा मोक्ष को प्राप्त हो गये।" गुरुजी के प्रस्थान के पश्चात् हम सब कार्यकर्ता पूरे मनोयोग से लग गये परिणामस्वरूप समारोप का प्रदर्शन स्तरीय रहा। बौद्धिक परीक्षा में भी शिक्षार्थियों का प्रदर्शन अच्छा रहा।

—*गिरिजाशंकर बरनवाल*, देवरिया

क्या वे भूतभावन शंकर के पद थे

सन् १९५६ में हिन्दू छात्रावास प्रयाग में संघ शिक्षा वर्ग लगा था। मैं द्वितीय वर्ष का प्रशिक्षार्थी था। रज्जू भैया वर्ग में थे और मैं उनका निकट का प्रिय स्वयंसेवक था। एक दिन रज्जू भैया ने मुझे तथा मेरे एक स्वयंसेवक मित्र रामरक्ष पाल जी को बुलाकर कहा कि तुम दोनों गुरुजी के पैर के तलवों में सरसों का तेल मालिश करो परन्तु सँभल कर यह कार्य करना क्योंकि उनका पैर कोई छूने नहीं पाता।

रात्रि के लगभग १० बजे हमने एक बड़ी कटोरी में शुद्ध सरसों का तेल गर्म किया और चादर के नीचे छिपा कर गुरुजी के कक्ष की ओर चले। वे हल्के चादर से पैर ढके, बिस्तर पर बैठे थे। मैंने दायाँ तथा भाई रक्षपाल ने बायाँ पैर पकड़ लिया। गुरुजी के ना, ना करने का कोई प्रभाव हम पर नहीं पड़ा क्योंकि हम लोगों ने उनसे बताया कि हम लोगों को रज्जू भैया ने इस कार्य हेतु अनुमति प्रदान किया है।

हमने तलवों में तेल लगाना प्रारम्भ किया। विश्वास करें! हम तेल लगाते थे किन्तु पता नहीं वह तेल कहाँ गायब हो जाता था, सारा तेल समाप्त हो गया। हम सुखद आश्चर्य से कभी गुरुजी का चेहरा और कभी पैर उठाकर तलवा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देखते। अन्त में उनके पैर को सिर से लगाकर हम लोग चुपचाप उठे और एक-दूसरे का चेहरा देखते हुए अपने बिस्तरों की ओर चल पड़े। आज जब उस घटना के विषय में सोचता हूँ तो मन में एक प्रश्न उठता है कि क्या वे सचमुच भूतभावन शंकर के पद थे!

यह उल्लेखनीय है कि गुरुजी जाड़ा, गर्मी, बरसात सदैव पैरों मे चप्पल ही पहनते थे, कभी उनको मोजा पहने नहीं देखा। उनके तलवे की बेवाई देखकर मैं हतप्रभ था कि वे कैसे पैदल चलते हैं और वह भी इतनी गति से।

—*वंशराज सिंह*, सुल्तानपुर

दिया हुआ दो वर्ष जो आज तैंतीसवें वर्ष में चल रहा

स्नात्कोत्तर अन्तिम वर्ष की परीक्षा देकर सन् १९७२ के **बरेली** संघ शिक्षा वर्ग में मैं द्वितीय वर्ष करने गया था। वर्ग के बीच के दिनों में पू. श्री गुरुजी का प्रवास था। अन्तिम कक्षा के सभी शिक्षार्थियों जो संघ कार्य के लिए समय देने की तैयारी में थे, का गुरुजी के साथ परिचय के लिए बैठना हुआ। मैं भी उक्त बैठक में बैठा था। परिचय प्रारम्भ हुआ, परिचय के साथ ही गुरुजी क्रमिका, सूर्य नमस्कार मंत्र आदि पूछा करते थे। कितना समय संघ कार्य के लिए देने का विचार किया है, यह भी पूछा। अन्त में अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा, "आप लोग अन्तिम परीक्षा देकर यहाँ आये हैं। मैंने कुछ पूछताछ की है इसका अर्थ आप सब लोग जानते ही होंगे परन्तु जीवन में आगे कार्य करने के लिए विचार अवश्य करना चाहिए। यही भाव लेकर मैंने विषय रखा है। समय तो पूछा है, परन्तु जब काम करते है तो उससे उत्पन्न भाव के अनुरूप आगे का विचार करते है। आप सभी उसी के अनुरूप विचार कर आगे बढ़ेंगे।" गुरुजी के उक्त विचारों को हृदय में सँजोकर दो वर्ष का समय देने का विचार आज तैतीसवें वर्ष तक पहुँच गया है।

—*श्यामलाल*, ऋषिकेश

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री गुरुजी

सन् १९६४ में **नैनीताल** के प्रवासावधि में मुझे पू. गुरुजी के साथ हल्द्वानी में रात्रि विश्राम का सुअवसर प्राप्त हुआ। कुछ वर्ष पूर्व मेरे फेफड़े में भरे पानी को पिचकारी (Syringe) द्वारा निकाला गया था। इस कारण वार्ता करते समय मेरे अन्दर से कड़-कड़ की आवाज आती थी। प्रातः गुरुजी के साथ जलपान कर अनौपचारिक वार्ता के दौरान उक्त आवाज उनको सुनायी दी। उनकी जिज्ञासा शान्त करने हेतु मैंने अपनी कथा-व्यथा बतायी। इस पर गुरुजी ने कहा कि तुम एक तोले सोने के सिक्के का प्रबन्ध कर सकते हो क्या?

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कहा, हाँ! मेरे ज्येष्ठ भ्राता के पास है, माँग कर ला सकता हूँ।' गुरुजी ने कहा, 'सिक्के को आग में खूब गरम कर एक गिलास पानी में बुझाकर वह पानी पी जाओ। यह क्रिया दिन में दो बार करना भगवान चाहेगा तो एक मास में तुम्हारा रोग ठीक हो जायेगा। फिर सिक्का लौटा देना, सिक्के को कोई क्षति नहीं होगी।' गुरुजी के निर्देशानुसार मैंनें उक्त क्रिया लगभग एक मास की और आज मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ।

मुझे लगा गुरुजी की पकड़ सभी क्षेत्रों में है केवल चिकित्सा शास्त्र ही क्यों?

—श्रीदान सिंह विष्ठ, उत्तराञ्चल

भारतमाता की अनुभूति

सन् १९६७ में मैं २७ वर्ष की आयु में संघ के तृतीय वर्ष प्रशिक्षण हेतु नागपुर गया था। उस वर्ष मैंने अनुभव किया कि अनेक अधिकारी कार्यकर्ताओं के बौद्धिकों का सार था 'ज्ञान' और 'अनुभूति' शब्द मेरे मन में बस गया। फिर वर्ग में आये प.पू. श्री गुरुजी। उनके तीन बौद्धिक हुए। उन्होंने भारतमाता का इतना हृदयहारी वर्णन किया कि मैं मन्त्रमुग्ध सा सुनता रहा। बौद्धिक वर्ग के पश्चात् अनेक शिक्षार्थी श्री गुरुजी को घेर लेते थे। उस दिन उस झुण्ड में मैं भी था। गुरुजी के कक्ष तक पहुँचते-पहुँचते सब भीड़ छँट चुकी थी। बस गुरुजी और मैं था। मैंने कहा, "गुरुजी! साक्षात भारतमाता का वर्णन तो बहुत अच्छा लगा, किन्तु भारतमाता की अनुभूति कैसे हो"? कक्ष में प्रवेश करते गुरुजी हठात रुके, पलटकर मेरी ओर प्रेम से देखते हुए बड़े शान्त स्वर में कहा- "प्रतिदिन भारतमाता को मानस चक्षु के समक्ष लाकर ध्यान करने से उनकी अनुभूति होगी।" मैं समाधान पा गया, उन्हें प्रणाम कर हर्ष विभोर हो गया।

—श्रीराम हुन्डैत, झाँसी

जब ज़िला संघचालक श्री गुरुजी के पीछे दौड़े

उद्यालक ऋषि की कर्मभूमि उरई में पूज्य श्री गुरुजी का प्रवास था। स्थानीय डी.वी. महाविद्यालय के प्रांगण में गणवेशधारी स्वयंसेवकों तथा जनता के बीच सायंकाल ५ बजे गुरुजी का बौद्धिक था। गुरुजी ४ बजकर ५५ मिनट पर महाविद्यालय द्वार पर कार से उतरे। द्वार पर उनके स्वागत में अन्य अधिकारियों के साथ जिला संघचालक माननीय जगदीश जी उपस्थित थे।

कार से उतरते ही गुरुजी ने जगदीश जी से पूछा कि क्या आप मेरे साथ चल लेंगे। जगदीश जी ने कहा- हाँ! क्यों नहीं? और गुरुजी लम्बे कदम बढ़ाते हुए तेजी से मंच की ओर चल पड़े। हम लोगों को यह देखकर आश्चर्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हुआ कि जिला संघचालक तथा अन्य अधिकारी गुरुजी के पीछे लगभग दौड़ से रहे तो गुरुजी मंच पर तेजी से चढ़े और मुख्य शिक्षक की आज्ञा पर ध्वजारोहण हुआ। भारी संख्या में आये हुए नर-नारी ने अपनी घड़ियों में समय देख तो ठीक ५ बजा था। स्वयंसेवक तो समय और अनुशासन का पालन करते ही हैं किन्तु सार्वजनिक कार्यक्रम ठीक समय से आरम्भ हो जाता है, यह बात जनता के लिए आश्चर्य एवं चर्चा का विषय रहा।

—*चौधरी राधेश्याम गुप्त*, उरई, (जालौन)

❖

शूलों की शैया पर इच्छा मरण : वाजपेयी

पाँच जून १९७३ सवेरे का समय, चायपान का वक्त, पूज्य श्रीगुरुजी के कमरे में (उसे कोठरी कहना ही अधिक उपयुक्त होगा) जब हम लोग प्रविष्ट हुए तब वे कुर्सी पर बैठे हुए थे। चरण स्पर्श के लिए हाथ बढ़ाया। सदैव की भाँति पाँव पीछे खींच लिये। मेरे साथ आये हुए स्वयंसेवकों का परिचय हुआ। उनमें आदिलाबाद के एक डाक्टर थे। गुरुजी विनोद वार्ता सुनाने लगे कि एक मरीज एक डाक्टर के पास गया। डाक्टर ने पूछा, "क्या कष्ट है? सारी कहानी सुनाओ"।

मरीज बिगड़ गया और बोला अगर मुझे ही अपना रोग बताना है तो फिर आप निदान क्या करेंगे। बिना बताये जो बीमारी समझे ऐसा डाक्टर मुझे चाहिए, डाक्टर एक क्षण चुप रहे। फिर बोले, 'ठहरो! तुम्हारे लिए दूसरा डॉक्टर बुलाना हूँ।" जो डाक्टर आया, वह जानवरों का डाक्टर था। बिना कुछ कहे वह सब कुछ समझ लेता था।

कथा सुनकर हँसी का फौव्वारा फूट पड़ा, रात्रिभर के जागरण की थकान पलभर में दूर होगयी। गुरुजी स्वयं हँसी में शामिल हो गये, फिर और एक किस्सा सुनाया। हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये।

इतने में चाय आ गयी। चाय सबको मिली या नहीं, इसकी चिन्ता गुरुजी स्वयं कर रहे थे। कौन चाय नहीं पीता, किसको दूध की आवश्यकता है इसका उन्हें बड़ा ध्यान रहता था। उसके बाद स्वयं चाय ली। कप में नाम मात्र की चाय थी। उन्होंने उसे और कम करवाया। शायद हमारा साथ देने के लिए ही वे चाय पान कर रहे थे। निगलने में बड़ा कष्ट था। साँस लेने में अत्यधिक पीड़ा थी।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किन्तु चेहरे पर थी वह मुक्त मोहिनी मुस्कान। हृदय-हृदय को हरने वाला हास्य। मुरझाये मन की कली-कली खिलाने वाली खिलखिलाहट, निराशा, हताशा और दुराशा को दूर भगाने वाला दुर्दम्य आत्मविश्वास। कमरे के किसी कोने में मौत खड़ी थी। शरीर छूट रहा था। एक-एक कर सभी बन्धन टूट रहे थे। महामुक्ति का मंगल मुहूर्त निकट था। एक क्षण के लिए मुझे लगा शूलों की शैया पर भीष्म पितामह मृत्यु की बाट जोह रहे है। इच्छा मरण सुना भर था, आज आँखों से देख लिया।

—*अटलबिहारी* वाजपेयी

❖

अनन्त निद्रा में निमग्न

एक दिन में कितना अन्तर हो गया। कल सब शान्त था, आज शोक का निस्तब्ध चीत्कार हृदय को चीर रहा था। कल सब अपने काम में लगे थे, आज जैसे सब कुछ खोकर खाली हाथ खड़े थे, आँखों में पानी, हृदयों में हाहाकार, कभी न भरने वाल घाव, कभी न मिटने वाला दर्द।

पूजनीय श्री गुरुजी का पार्थिक शरीर दर्शन के लिए कार्यालय के कमरे में रखा था। आज उन्होंने मुझे चरण स्फर्श करने से नहीं रोका, अपने पाँव पीछे नहीं हटाये, हार पहनने में विरोध नहीं किया, सिर पर प्रेम से हाथ नहीं फेरा। प्यार भरी मुस्कान से नहीं देखा। हाल-चाल नहीं पूँछा। वे अनन्त निद्रा में निमग्न थे। हंस उड़ चुका था, कायां के पिजड़े को तोड़कर पूर्ण में विलीन हो चुका था।

गुरुजी नहीं रहे। उनका विराट व्यक्तित्व छोटी सी काया में कब तक कैद रहती? जीवन भर तिल-तिब जलाकर लाखों को आलोकित प्रकाशित करने वाला देजपुंज मुट्ठी भर हाड़ मांस के शरीर में कब तक सीमित रहता?

लेकिन गुरुजी हमेशा रहेंगे, हमारे जीवन में, हृदयों में, कार्यों में। अग्नि उनके शरीर को निगल सकती है, हृदय- हृदय में उनके द्वारा प्रदीप्त अखण्ड राष्ट्रप्रेम तथा निःस्वार्थ समाजसेवा की चिनगारी को कोई नहीं बुझा सकता।

—*अटलबिहारी वाजपेयी,* दिल्ली

❖

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन परिचय पूज्य श्री गुरूजी

* *पूरा नाम* : पू. माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर।
* *माता-पिता* : वन्दनीया लक्ष्मीबाई, श्री सदाशिवराव। माता-पिता की नौ संतानों में अकेले जीवित थे। *जन्म* : फाल्गुन कृष्ण एकादशी (विजया एकादशी) विक्रम संवत् 1963 तदनुसार 19 फरवरी 1906, नागपुर।
* अन्य धर्मों के ग्रंथों का भी गहन अध्ययन। बाईबिल का गलत संदर्भ आने पर अपने ईसाई प्रधानाचार्य गार्डिनर को टोका।
* 1928 में एम.एस.सी. (जीव विज्ञान) की परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से उतीर्ण तथा ... से 33 तक वहीं पर अध्यापन। 'गुरू जी' उपनाम विद्यार्थियों के स्नेह के कारण मिला। य... संघ के संपर्क में आए।
* 1934 में नागपुर की तुलसीबाग शाखा के कार्यवाह बनें तथा इसी वर्ष कार्य विस्तार ... मुम्बई गए।
* 1935 में नागपुर से एल.एल.बी. की परीक्षा उतीर्ण की।
* 1936 में अमिताभ महाराज के साथ दीक्षा लेने स्वामी अखंडानन्द जी के सागरगाछी आश्रम ...।
* 13 जनवरी 1937 को दीक्षा प्राप्त हुई। इसी वर्ष अपने गुरू के निधन के बाद नागपुर वापस।
* 1939 में ही कलकत्ता कार्य विस्तार हेतु गए।
* बाबाराव सावरकर की "राष्ट्र-मीमांसा" पुस्तक का अनुवाद किया जो 'वी–आवर नेशनहुड डिफाईन्ड' (We–Our nationhood defined) नाम से छपी। 13 अगस्त 1939 को सर कार्यवाह बनें।
* 3 जुलाई 1940 को प्रथम सरसंघचालक प्रणाम उन्हें दिया गया।
* "मैं डा. हेडगेवार का दाहिना हाथ था तो गुरूजी उनके ह्रदय थे" अप्पाजी जोशी का वकील महोदय को उतर।
* देश विभाजन के समय (8 अगस्त, 1947 तक) पंजाब व सिंध प्रांत का प्रवास किया।
* महात्मा गाँधी की हत्या पर शाखाओं पर 13 दिन का शोक रखने हेतु सर्वदूर तार द्वारा संदेश।
* संघ पर प्रतिबंध; 1 फरवरी 1948 को गिरफ्तार जबकि संघ पर प्रतिबंध 4 फरवरी को लगा।
* 44 दिनों के सत्याग्रह में 77,090 स्वयंसेवक पूज्य गुरूजी के आह्वान पर जेल गए।
* विश्व हिन्दू परिषद् जैसे अनेकों संगठनों की शुरूआत की। वर्ष भर में पूरे देश की तीन बार परिक्रमा करते थे तथा लगभग 40,000 पत्र लिखे।
* 18 अक्टूबर 1947 को कश्मीर के महाराजा से भेंट, कश्मीर का भारत में विलय।
* भारत पर चीन के आक्रमण का पूर्व संकेत दिया।
* 3 मई, 1970 को कर्क (कैंसर) रोग है इसकी जानकारी हुई। (बीमारी में भी 23-25 मई, 1970 को प्रतिनिधि सभा में उपस्थित रहें।) 1 जुलाई को टाटा मेमोरियल, मुंबई में शल्य-क्रिया।
* 2 अप्रैल, 1973 को रामटेक स्थित अपना घर 'भारतीय उत्कर्ष मंडल' नामक संस्था को दान कर दिया।
* 5 जून 1973 को महाप्रयाण। 'भारत माता की जय' प्रार्थना की यह अंतिम पंक्ति उनके मुँह से निकले अन्तिम शब्द थे।

लेखक – श्री कौशलानन्द सिन्हा
परिचय – पूर्व प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, (पूर्वी उ.प्र.), अ.भा. राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.